R.N.I NO. MPHIN/2002/14167

National News Magazine
पब्लिक प्वाइन्ट
PUBLIC POINT
www.publicpointnews.com

वर्ष-9 अंक-11 दिसम्बर-2010

सम्पादक : अरुण द्विवेदी
प्रबंध सम्पादक : सत्यनारायण भटेले
सलाहकार सम्पादक : ईश्वरचंद्र त्रिपाठी
विज्ञापन प्रबंधक : विनोद कुमार
प्रसार प्रबंधक : दीपक द्विवेदी

प्रशासकीय कार्यालय
35,नीलम कॉलोनी,जहांगीबाद,
भोपाल मध्यप्रदेश
मोबाइल: 9303134311, 9424413392,
9893088024

●

दिल्ली कार्यालय
सुधीर शर्मा
153-67, बलवीर नगर, एक्स शाहदरा,
नई दिल्ली, दूरभाष 011-22132661

●

मुंबई कार्यालय
बी.आर.दुबे
बुद्व कालोनी, रूम नं, 8-1, पाईप रोड
कुर्ला, मुंबई, दूरभाष 9821082661

●

इलाहाबाद कार्यालय
धनन्जय सिंह
शिवनगर कालोनी, अल्लापुर, इलाहाबाद,
उत्तरप्रदेश दूरभाष 2501801

●

रायपुर कार्यालय
भगवानदीन प्रजापति
पिथौरा, रायपुर, छत्तीसगढ़
दूरभाष- 2271294

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक,संपादक,अरुण द्विवेदी द्वारा पब्लिकपब्लिकेशन35,नीलमकॉलोनी,जहांगीबाद, भोपाल-462008 से मुद्रित एवं प्रकासित।

लेख, विचार, सूचनाओं से संपादक की सहमति अनिवार्य नहीं है। समाचार चयन के लिए पी.आर.बी. एक्ट के तहत जिम्मेदार, किसी भी प्रकार के कानूनीविवाद हेतु न्यायिक क्षेत्र भोपाल होगा।

इस अंक मे

मध्य प्रदेश में कुपोषण का कहर

यह हाल मध्यप्रदेश के आदिवासी जिले झाबुआ का है, जहां मेघनगर ब्लाक के अगासिया और मदारानी गांवों में बच्चों की मौतों का सिलसिला है कि टूटता ही नहीं। केवल अक्टूबर में ही 2 गांवों से 25 बच्चों की मौत दर्ज होना- यहां पर मौत के ताण्डव की एक झलक भर है। एक तरफ पास के ही खण्डवा में आंतकवादी बतलायी गई वारदात के तुरंत बाद से मुख्यमंत्री शिवराज सिंह अपने साहस का परिचय पेश कर रहे हैं मगर दूसरी तरफ महीनों से कुपोषण नाम का जो आंतक झाबुआ के कई दुबले, पतले, रक्तहीन शरीर वाले बच्चों को मलेरिया जैसी बीमारियों की चपेट में आते ही 4 रोज के भीतर खा रहा है। उसके खिलाफ ठोस कार्रवाई की बात तो दूर जबावदारी लेने का साहस तक कोई नहीं करता है।

निजाम के दामन पर है बड़ा दाग

ईमानदार और बेदाग छवि बताकर कांग्रेस ने जिन पृथ्वीराज चव्हाण को महाराष्ट्र का मुख्यमंत्री बनाकर भेजा है, उन पर चुनाव लड़ने के लिए दिए गए संपत्ति के घोषणापत्र में बी अपनी बहुत सारी संपत्ति छुपाने का आरोप भी है। पृथ्वीराज चव्हाण ने सासंद का चुनाव लड़ने के वक्त जो शपथपत्र दिया, उसमें अपनी सातारा की खेती की जमीन का भी कोई जिक्र ही नहीं किया

हम लोकतंत्र की सफलता का ढिंढोरा पीटना चाहें तो चाहे जितना पीटें। हमारी प्रशासन और राजनीति के शुद्धिकरण में जरा दिलचस्पी नहीं है। प्रशासनिक अधिकारियों और राजनीतिक नेताओं का गठजोड़ लोकतंत्र को मजबूत होने देना नहीं चाहता।

भारतीय संस्कृति पर हावी होती पश्चिम सभ्यता

भारतवर्ष जिसकी संस्कृति को ही विश्व भर में प्रचलित सभी संस्कृतियों की जननी कहा जाता है आज खतरे में है। भारतीय संस्कृति विश्व की सबसे प्राचीन संस्कृति है। विश्व की हर संस्कृति में इसकी छाप देखी जा सकती है।

भारतीय संस्कृति जिसमें हर व्यक्ति के लिए एक अलग व्यवस्था वनायी गयी है। एक ऐसी संस्कृति जो विश्व की हर संस्कृति को अपने अन्दर समाहित करने की क्षमता रखती है, लेकिन यदि ये संस्कृति किसी और संस्कृति में लुप्त होने लगे तो,और जिन्होने इसको कायम रखा अब वही लोग ही इसे भूलने लगे तो, फिर ये हमारे लिए चिन्ता और शर्म का विषय बन जाता है। आज हर जगह हर कोने पर हर चौराहे पर हमारी भारतीय संस्कृति की धज्जियाँ उड़ती देखी जा सकती है।

भारतीय संस्कृति ने एक इंसान के जीवन को चार हिस्सो में बाँटा शैशवा अवस्था, बाल्या अवस्था, किशोरा अवस्था और वृद्धा अवस्था और फिर इन हिस्सों के कर्मो को भी बताया जैसे बाल्या अवस्था में खेलना किशोरा अवस्था में कर्म और वृद्धा अवस्था में सन्यास, जब तक हमने इन नियमो का पालन किया हम सुखी थे। समाज में एक अनुशासन था, लेकिन इस व्यवस्था को पाश्चात्य सभ्यता ने अपने घेरे में लिया और पूरी व्यवस्था ही बदल दी।

आज ना तो कोई बच्चा रह गया है, ना कोई किशोर और ना ही कोई वृद्ध। आज एक पिता अपने आप को ये कहकर गौरवविन्त महसूस करता हैं कि मै उसका सबसे अच्छा दोस्त हूँ लेकिन वह एक बार भी नही सोचता कि वह दोस्त तो बन गया लेकिन क्या मैंने उसे वह संस्कार भी दिये जो कि एक बाप अपने बेटे को देता है। क्या वह अनुशासन बरकरार रख पाया जो कि एक पिता पुत्र के बीच होना चाहिए।

बृद्धा अवस्था में सन्यास होना चाहिए वो बात भी अब स्वप्न की तरह प्रतीत होती है। आज तो एक वृद्ध आदमी भी अपने आप को चाचा नही कहलवाना चाहता है। अगर हम 20 वर्ष पहले की बात करे तो घर में वृद्ध आदमियो को भगवान की तरह से देखा जाता था। जहाँ वह रहते थे वहाँ पर धार्मिकग्रथों जैसे रामचरितमानस,गीता, कुरान और गुरुग्रथंसाहिब हुआ करते थे लेकिन आज स्थिति बिल्कुल उलट है। आज एक वृद्ध आदमी के कमर में सबसे पहले उपन्यास होगा और भगवान की तस्वीरो के स्थान पर नायक नायिकाओ की तस्वीरे होंगी। भारतीय संस्कृति में औरतो को भी ऊचा दर्जा दिया गया है, उन्हें दुर्गा ,लक्ष्मी का रुप बताया गया है। लज्जा को उसका सबसे बड़ा गहना और सहनशीलता को इसकी सबसे बड़ी शक्ति माना गया हैं। आज के समाज में औरतो ने विकास तो किया, लेकिन इस विकास के लिए उसने अपने सारे गहने खो दिए। उसका दुर्गा लक्ष्मी का रुप अब भयानक सा लगने लगा है। उन्होने शर्म और सहनशीलता दोनो को धीरे-धीरे खोना शुरु कर दिया है जो कि विकास के लिए बहुत बड़ी कीमत है। पहले हर घर में हर व्यक्ति पंचांग रखता था। पंचांग के हर पृष्ठ पर देवी देवताओ की तस्वीरे हुआ करती थी लेकिन धीरे-धीरे इसमे भी परिवर्तन हुआ तो इन देवताओं की जगह पर कम कपड़ो वाले माडलों की तस्वीरें दिखने लगी हैं। हम कहते हैं कि हम आधुनिक हो गये हैं लेकिन क्या आज भी हम अपने घरो में ये सभ्यता देखना चाहते हैं? हम ये सभ्यता सिर्फ दूसरो के घरो में ही देखना चाहते हैं। इसका ये स्पष्ट अर्थ है कि आज भी हम इस संस्कृति को अपना नही पाये हैं, लेकिन समाज में आधुनिक दिखने के लिए हम वही सब करते हैं जो कि हमारा दिल हमारी संस्कृति नही चाहती । अगर हमे अपनी संस्कृति को बचाना है, तो हमे आधुनिक होना है लेकिन अपनी संस्कृति के साथ। हमे दुनिया को बदलना है लेकिन खुद नही बदलना। हमे अपनी संस्कृति को विश्व में स्थापित करना है ना कि खत्म करना हैं।

संपादक

आदर्श-भ्रष्टाचार और भगवान

ये बेईमान घोटालेबाज शब्दों का भी मखौल उड़ा रहे और गैर कानूनी हाऊसिन्ग सोसाइटी तक का नाम आदर्श रख कर अत्यंत अपराधिक कुकृत्य किया है। अब सवाल यह नहीं है कि 2-जी स्पेक्ट्रम अब तक का सबसे बड़ा घोटाला है। और घोटालो का जिक्र में नहीं कर रहा हूँ।

2010 का साल ख़त्म होने को है, देश और दुनिया नये साल का जश्न मनाने को बेताब है तो देश के बाहर यूरोप और अमेरिका में प्रकृति का कहर बर्फ और बरसात ग्लोब वार्मिंग के खतरे की प्रतिछाया बनकर आया हुआ है। अपने देश में घोटालों की अभूतपूर्व बाढ़ आई हुई है एक घोटाले 2-जी स्पेक्ट्रम की राशि का आकलन है लगभग 1,76,000 करोड़ रूपये और यह राशि कितनी बड़ी है कि एक समय 400 सांसदों के बहुमत वाली राजीव गांधी की सरकार को ध्वस्त करने वाले बोफोर्स टॉप घोटाले से लगभग 2,750 गुनी बड़ी है। लेकिन क्या राजीव गाँधी की विधवा पत्नी और देश की अघोषित महारानी यूपीए की अध्यक्षा श्रीमती सोनिया गाँधी और उनके प्यादे प्रधानमंत्री श्री मनमोहन सिंह की लगड़ी सरकार को यह घोटाला ट्स से मस कर पाया है ? पूरी मुख्यधारा की विपक्षी राजनीतिक ताकते नंपुसक विरोध के सिवाय कुछ कर सकी है ? और नहीं तो पार्टी महाधिवेशन के बहाने महारानी, युवराज, और प्यादे देश, समाज को आर्दश और नैतिकता का पाठ पढ़ा है।

ये बेईमान घोटालेबाज शब्दों का भी मखौल उड़ा रहे और गैर कानूनी हाऊसिन्ग सोसाइटी तक का नाम आदर्श रख कर अत्यंत अपराधिक कुकृत्य किया है। अब सवाल यह नहीं है कि 2-जी स्पेक्ट्रम अब तक का सबसे बड़ा घोटाला है। और घोटालो का जिक्र में नहीं कर रहा हूँ।

सवाल है लोकतंत्र में स्थापित और मर्यादित उन सारी संस्थाओं का इस बाढ़ में शामिल होना सेना, मुख्यमंत्री, मंत्री, शक की सुई प्रधानमन्त्री तक जा रही है उद्योगपति, मीडिया, खुद न्यायपालिका की ओर भी न्यायपालिका के अंदर से ही उंगुलिया उठ रही है। ये जो सारे स्तंभ है, देश समाज राज को चलाने वाली सारी मिशनरी में ही बाढ़ का पानी घुसा हुआ है। और अब सड़न के प्रभाव में सब आ गये है। पूरा का पूरा मामला सारी मुख्यधारा की राजनीति शक्तियों में नैतिक मूल्यों, आदर्शों के पूर्ण स्खलन को साफ़-साफ़ दिखाता है।

अब किया क्या जाए कुछ लोगों का मानना है कि धार्मिक शिक्षाओं और ईशभय से ही इसे रोका जा सकता है और कुछ धार्मिक वस्त्रधारी लोग इस प्रयास में लगे भी है। लेकिन मेरा मानना है कि धर्म और भगवान् में वो आग बची नहीं है जिसको लेकर भगवान् और धर्म को ईजाद किया गया आज उसके मूलतत्व और वास्तविक शिक्षाओं, नैतिकता, ईमानदारी, मानवीय मूल्य सिरे से गायब है। आज जो जितना अधार्मिक कुकृत्य करता है, उतना ही धार्मिक आचरण (कर्मकांड) का दिखावा करता है। बल्कि भ्रष्टाचार की मूल जड़ भगवान् है एक मिनट अगरबत्ती घुमाओ और तेईस घंटा उनसठ मिनट चोरी, मक्कारी करो, बस भगवान् को लडडू, पेठे, स्वर्ण मुकुट, यज्ञ, प्रवचन, मंदिर, मस्जिद, गिरजा, गुरुदारे में मंथा टेक लूट की कमाई में से कुछ दान (घुस) दे दो सब ठीक। भ्रष्टाचार को इससे बल मिलेगा, लौकिक जीवन और राजनीतिक व्यवस्था दृढ राजनीतिक इच्छा शक्ति के नैतिक मूल्यों से संचालित होगी इसके लिए समाज में वैज्ञानिक चेतना स्वस्थ राजनीतिक चेतना की जागरूकता के साथ प्रत्येक नागरिक को लोभ रहित लाभ से जीवन को चलाना होगा। उम्मीद है नये वर्ष में हम इस तरफ बढ़ेगें क्योंकि उम्मीद एक ज़िंदा शब्द है कवि सुरेश नारायण कुसून्बी वाल की कविता की इन पंक्तियों उम्मीद है कि/कुछ भी हो जाए/ न छूटे उम्मीद का दामन / हमारे हाथ से क्योंकि / उम्मीद पर ही टिकी है दुनिया नये वर्ष की सभी को दिली मुबारकबाद

.....

अरविन्द मूर्ति

सिटिज़न न्यूज़ सर्विस

मध्यप्रदेश में

हिन्दी विश्वविद्यालय की स्थापना भोपाल में

भोपाल। मध्यप्रदेश में हिन्दी विश्वविद्यालय की स्थापना भोपाल में की जाएगी। विश्वविद्यालय की स्थापना के संबंध में गठित उपसमिति की यहां बैठक हुई। बैठक में उपसमिति द्वारा हिन्दी विश्वविद्यालय के अधिनियम के प्रारूप पर चर्चा की गई। बैठक में उच्च शिक्षा मंत्री लक्ष्मीकांत शर्मा ने कहा कि हिन्दी विश्वविद्यालय की स्थापना राज्य सरकार की प्राथमिकता है। उन्होंने उपसमिति के सदस्यों से अनुरोध किया की अधिनियम के प्रारूप का शीघ्र अंतिम रूप दें, ताकि हिन्दी विश्वविद्यालय की स्थापना की कार्यवाई सम्पन्न हो सके। उच्च शिक्षा मंत्री श्री शर्मा ने कहा कि प्रस्तावित हिन्दी विश्वविद्यालय के लिए भोपाल में जमीन उपलब्ध कराने के उद्देश्य से राजस्व विभाग को अनुरोध किया गया है। शासन का प्रयास है कि विश्वविद्यालय के लिए भूमि का चिन्हांकन शीघ्र हो जाए। उपसमिति की बैठक में राजस्थान विश्वविद्यालय के विभागाध्यक्ष प्रो.मधुकर श्याम चतुर्वेदी, प्राध्यापक श्री मोहन लाल छीपा, रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ.राम राजेश मिश्रा, हिन्दी ग्रंथ अकादमी भोपाल के संचालक डॉ.गोविंद प्रसाद शर्मा एवं उपसमिति के संयोजक आयुक्त उच्च शिक्षा राजीव रंजन उपस्थित थे। उपसिमिति ने विश्वविद्यालय के अंतर्गत खोले जाने वाले संकायों पर भी चर्चा की। विश्वविद्यालय में साहित्य एवं भाषा, धर्म विज्ञान, सामाजिक विज्ञान एवं कला, वाणिज्य एवं प्रबंधन, विज्ञान अभियांत्रिकी एवं प्रौद्योगिकी, आयुर्विज्ञान, विधि एवं कृषि जैसे संकाय खोले जाएगें। यह संकाय हिन्दी में पाठ्य पुस्तकों और पाठ्यक्रमों की उपलब्धता के अनुरूप चरणबद्ध ढग़ से प्रारंभ किये जायेगें। उप समिति ने प्रस्तावित हिन्दी विश्वविद्यालय की स्थापना पर आने वाले वित्तीय भार तथा आवश्यक पदों का भी आंकलन किया। हिन्दी विश्वविद्यालय का उद्देश्य हिन्दी भाषा में शिक्षा और ज्ञान का अभिवर्धन और प्रसार करना है। विश्वविद्यालय सम्यताओं एवं संस्कृतियों के अध्ययन एवं अनुसंधान का कार्य भी करेगा। इस विश्वविद्यालय का कार्यक्षेत्र सम्पूर्ण मध्यप्रदेश होगा। हिन्दी विश्वविद्यालय की साधारण परिषद के अध्यक्ष मुख्यमंत्री होंगे। समिति द्वारा प्रस्तावित अधिनियम के प्रारूप के अनुसार उच्च शिक्षा विभाग के मंत्री साधारण परिषद के उपाध्यक्ष होंगे।

भोपाल में विश्वविद्यालय की स्थापना करेगा राममोहन मिशन

– शंकर विश्वास

भोपाल। समाज सेवा, शिक्षा व स्वास्थ्य के क्षेत्र में कार्यरत कोलकाता स्थित राममोहन मिशन भोपाल में भी विश्वविद्यालय की स्थापना करेगा। मिशन द्वारा कन्या भ्रूण हत्या, घरेलू हिंसा, दहेज एवं बाल विवाह जैसी सामाजिक बुराइयों के खिलाफ भी निरंतर अभियान चलाया जा रहा है। यह जानकारी मिशन के संस्थापक सभापति शंकर विश्वास ने दी। उन्होंने कहा कि मिशन द्वारा विगत पांच सालों से उक्त सामाजिक बुराइयों के खिलाफ देश व्यापी जन जागरण यात्रा निकाली जा रही है। गत 22 नवंबर को कोलकाता से शुरु हुई यह पांचवीं यात्रा उत्तरप्रदेश, हरियाणा, पंजाब, राजस्थान होती हुई गुरूवार को भोपाल पहुंची। यहां से यात्रा कल छत्तीसगढ़ के लिए रवाना होगी तथा वहां से झारखंड होते हुए कोलकाता पहुंचकर इसका समापन होगा। यात्रा में शामिल आठ बसों में सवार मिशन के कार्यकर्त्ता सड़क मार्ग से होती हुई गांव–गांव पहुंचकर कन्या सामाजिक बुराइयों के खिलाफ जन चेतना पैदा कर रहे हैं। यात्रा के दौरान लोगों को उनकी क्षेत्रीय भाषा में प्रकाशित पंपलेट एवं अन्य प्रचार सामग्रियों का भी वितरण किया जा रहा है। श्री विश्वास ने कहा कि राजा राममोहन राय के सिद्धांतों पर कार्य कर रहा राममोहन मिशन द्वारा प्रतिवर्ष देश के ख्यातिनाम वैज्ञानिकों को भी राजा राममोहन राय पुरूस्कार से सम्मानित किया जा रहा है। अब तक यह पुरूस्कार देश के प्रसिद्ध ख्यातिनाम वैज्ञानिक डा. कस्तूरी रंगन, डा. जयंत नालीकर, डा.एमएम. स्वामीनाथन, डा. ए एस पिल्लई,डा. अनिल काकोदकर, डा.मणि भौमिक, डा.माधवर नायर, डा. श्रीकुमार बैनर्जीआदि शामिल है। इनके अलावा मिशन द्वारा पत्रकारिता, साहित्य, संगीत एवं कला के क्षेत्र में भी उत्कृष्ट लोगों का सम्मानित किया जाता है। उन्होने कहा कि संस्था द्वारा कोलकाता में शिक्षा एवं स्वास्थ्य के क्षेत्र में बतौर मिशन उल्लेखनीय कार्य किए जा रहे हैं। इसी क्र म में विश्वविद्यालय के साथ ही उच्च विद्यालय,नेत्र चिकित्सा अस्पताल तथा सामान्य चैरिटी अस्पताल आदि की स्थापना की गई है। इसी क्रम में मिशन द्वारा भोपाल में श्राज्य शासन से जमीन मिलने पर विश्वविद्यालय स्थापना की योजना है। हुआ जोरदार स्वागत इससे पूर्व मिशन की पांचवी राष्ट्रव्यापी जनजागरण यात्रा के यहां पहुंचने पर जिला पंचायत के पूर्व अध्यक्ष चेतन पाटीदार की अगुवाई में बड़ी संख्या में कार्यकर्त्ताओं ने यात्रा का स्वागत किया। इन्होंने मिशन के संस्थापक सभापति श्री विश्वास का भी पुष्पमाला पहना कर आत्मीय स्वागत किया।

भ्रष्टाचार का रोग व्यवस्था की उपज

–मनोज सिंह

यह- विचार मनोज सिंह द्वारा लिखा गया है.मनोजसिंह ,कवि ,कहानीकार ,उपन्यासकार एवं स्तंभकार के रूप में प्रसिद्ध है .आपकी चंद्रिकोत्सव ,बंधन ,कशमकश और व्यक्तित्व का प्रभाव आदि पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी है.

कई वरिष्ठ अधिकारियों व महत्वपूर्ण व्यक्तियों के घर, दीवाली-नये साल आदि के मौकों पर, मेहमानों का तांता लगते हुए देखा-सुना है। अधिकांश के हाथों में रंग-बिरंगे आकर्षक चमकीले कागजों में लिपटे छोटे-बड़े डिब्बे होते हैं। बिना सच जाने किसी पर शक करना उचित नहीं। लेकिन यह तो कम से कम माना ही जा सकता है कि उसमें से अधिकांश में सूखे मेवे होते होंगे। मिठाइयों के दिन तो अब तकरीबन लद गए। हां, आधुनिक बाजार ने चॉकलेट-बिस्किट और बेकरी का मार्केट जरूर गर्म किया हुआ है। बहरहाल, मुझे इस बात को जानने की हमेशा से कौतूहलता रही है कि इन घरों में आने वाले अनगिनत डिब्बों से निकलने वाली कई किलो सूखे मेवों का क्या किया जाता है? इसे शुद्ध भ्रष्टाचार में न गिनते हुए त्योहार में मिलने-मिलाने और मिठाई खाने-खिलाने की परंपरा से जोड़कर देखा जा सकता है। यह दीगर बात है कि पारंपरिक रूप से घर के बने पकवान आपस में मिल-बांटकर खाने का प्रचलन था जो कालांतर में यहां जा पहुंचा। वैसे, इसे खाकर खत्म करने (आधुनिक युग के पेट) का सामर्थ्य नहीं। ऊपर से आजकल के छोटे से परिवार में तो यह बिल्कुल संभव नहीं। और कई बार अगला साल आते-आते तक यह खाने लायक नहीं रह जाते होंगे। जमींदारों-राजाओं, जहां से यह प्रथा प्रारंभ हुई थी, कि तरह नौकरों-चाकरों की फौज भी आजकल घरों में नहीं रही, जो इसे खाकर मस्त रहे। अब इन्हें गरीबों में बांटते भी अजीब लगेगा। कहां उन्हें रोटी की जरूरत है और हम काजू-किशमिश देने चले। व्यक्तिगत रूप से मुझे मेहमानों के हाथों फूल-फल का लेना-देना अच्छा लगता है। वैसे मैं दूसरों को अपनी लिखी किताबें देना ही पसंद करता हूं। और साथ ही यह कहने से भी नहीं चूकता कि कृपया इसे फेंकना मत। हां, तो हम बात कर रहे थे कि सवाल उठता है कि महत्वपूर्ण व्यक्ति इन मुफ्त के सूखे मेवों का क्या करते होंगे? क्या वे उसे नाली में फेंकते हैं? अब किसी दुकान को तो बेच नहीं सकते और खुद दुकान लगा नहीं सकते। यही कारण है जो मुझे आज इस परंपरा का औचित्य समझ नहीं आता। वो तमाम चीजें जिसकी दैनिक जीवन में जरूरत नहीं या किसी काम की नहीं, व्यर्थ हैं और उससे बचने की कोशिश की जा सकती है। यह इकट्ठा किया हुआ अतिरिक्त अनुपयोगी सामान, फिर चाहे वो पैसा, कपड़ा, गाड़ी और मकान आदि कुछ भी हो सकता है, अगर इनका उपयोग नहीं किया जा पा रहा तो यह कचरा है, जो अनावश्यक जगह घेरता है। जीवन में भी और घर में भी। और सिर पर बोझ लगता है। संक्षिप्त में कहें तो सारा मुद्दा जरूरत पर केंद्रित है। पिछले दिनों एक खबर पर आंख टिकी थी। और कुछ देर ठहरकर सोचने के लिए मजबूर हुआ था। यह थोड़ा हैरान करने वाली थी। इसका सीधे-सीधे कारण समझ पाना मुश्किल हो रहा था। अखिल भारतीय सेवा के एक नौजवान अधिकारी को भ्रष्टाचार के कारण पुलिस द्वारा गिरफ्तार किया गया था। यह इस तरह की कोई पहली घटना नहीं थी। वरिष्ठ नौकरशाहों के घरों से करोड़ों रुपये प्राप्त होने और परिणामस्वरूप छापे व गिरफ्तार होने की खबर आती रही है। महत्वपूर्ण पदों पर विराजमान नामी लोगों पर भी कीचड़ उछलते समाचार पत्रों के प्रथम पृष्ठ पर पढ़ा जाता रहा है और इलेक्ट्रॉनिक मीडिया प्राइम टाइम पर इनके रंगीन कहानियों के चलचित्र दिखाते रहे हैं। मगर उपरोक्त खबर ने थोड़ा इसलिए विचलित किया था कि अधिकारी अभी युवा है। और स्वस्थ व खुशहाल भी दिखाई दे रहा था। अटपटा इसलिए लगा कि जिन्हें वह आदेश दिया करता होगा आज उन्हीं के सवालों से घिरा हुआ था। भविष्य में जहां लोकतंत्र के सर्वोच्च नौकरशाह के पद पर आसीन हो सकता था वहीं आज वह जेल के सीखचों के पीछे बैठा हुआ था। पूर्व में जब उसे इतनी मुश्किल और महत्वपूर्ण परीक्षा में सफलता मिली होगी तो उसके माता-पिता-परिवार ही नहीं मोहल्ला और शहर तक गौरवान्वित हुआ होगा। तो फिर मात्र चंद वर्षों में ऐसी अनहोनी दुर्घटना होना कई सवाल खड़े करती है। जहां उस व्यक्ति विशेष से परे भी निगाह जानी चाहिए। जिस पर गौर किया जाना जरूरी है। अधिकारी को सजा मिलना न मिलना इस समस्या का अंतिम समाधान नहीं। बीमारी को जड़ से हटाने के लिए उसके लक्षणों की परख की जानी चाहिए। इसे एक केस स्टडी समझकर आधुनिक समाजशास्त्री द्वारा सूक्ष्म निरीक्षण

की आवश्यकता है, जो मीडिया में आना चाहिए। खबर के साथ-साथ बीमारी का इलाज भी तो प्रचारित किया जाना चाहिए। पूछना चाहिए कि क्या उपरोक्त अधिकारी को अपने संवैधानिक अधिकारों और कर्तव्यों का अहसास नहीं था? क्या उसे अपने आने वाले भविष्य पर विश्वास नहीं था कि वो और सुनहरा होगा? बिल्कुल होगा। तो फिर उससे कहां चूक हुई? अगला सवाल उठ सकता है कि क्या मिलने वाली तनख्वाह से उसकी जरूरतें पूरी नहीं हो पाती थीं? जबकि अभी-अभी वेतन में वृद्धि हुई है। क्या वह अपने जीवन से संतुष्ट नहीं था? शायद। और वह उजले भविष्य का इंतजार नहीं कर पाया। सच तो है, आधुनिक युग आज में जीना सिखाता है और उसे चारों ओर कृत्रिम चकाचौंध दिख रही होगी। कहीं वो भी इसे अपनी चाहत तो नहीं बना बैठा? बाजार में बिखरी रंगीनियां उसे ललचा रही होंगी और वह शायद इससे आकर्षित हुआ लगता है। जीवन में प्राकृतिक जरूरतें सीमित हैं लेकिन मानवीय इच्छाओं का कोई अंत नहीं। भौतिक जरूरतों को हम जितना बढ़ा लें, कम है। क्या हम तीन वक्त से ज्यादा खाना खा सकते हैं? आधुनिकतम जीवनशैली में भी, पहलवान का शरीर होने पर भी खाने के कितने भी शौकीन हों मगर कुछ सैकड़ों रुपयों के अतिरिक्त खर्च नहीं हो सकता। प्रतिदिन फाइव स्टार में खाने वालों को भी अंत में घर का खाना चाहिए। सिर व शरीर छिपाने के लिए एक समय में एक मकान की ही जरूरत होती है। वैसे दुनिया के दस शहरों में दस कोठियां बनाने का औचित्य समझ से बाहर है। कोई कह सकता है कि मकान को भव्य कोठी और ऑलीशान बनाने के लिए भरपूर धन चाहिए। अब ऐसे तो मकानों के ऊपर हेलीपेड और स्वीमिंग पुल भी होना चाहिए। क्या इसकी कोई सीमा है? यूं तो एक समय में एक ही गाड़ी पर बैठा जा सकता है। मगर वाहन के नाम पर महंगी-महंगी कार फिर हेलिकॉप्टर और फिर जेट की कल्पना करने में आज का बाजार प्रेरित भी करता है और इसे चलायमान रखने के लिए वर्तमान व्यवस्था ऐसी अर्थव्यवस्था को बढ़ावा भी दे रही है। तो फिर कौन और क्यूं रुकने लगा? बस यहीं से मुश्किल शुरू होती है। बाजार में बिक रहे सामान को देखकर मन ललचा जाता है। खाने के बर्तन मिट्टी से एल्युमीनियम और स्टील से चांदी और सोने जड़ित तक पहुंच जाते हैं। महंगे बार में शराब के नशे में मुर्गा खाकर गर्मी चढ़ जाने पर सुंदर और बार-बार ललचाते जिस्म और बाजार की बिकाऊ नजरें देखकर कोई कहे कि आप संतुलित रहें, थोड़ा बेमानी होगी। हमारी वर्तमान विश्व-व्यवस्था व्यक्ति को भ्रष्ट बना रही है। रेशम में अमीरों को पलता देख हरेक के मन की इच्छा जागृत हो जाती है। और फिर शुरू होता है इस चक्कर में पड़कर आंकड़ों के आगे जीरो लगाने का खेल। सैकड़ा, हजार, लाख, करोड़, अरब अर्थात एक जीरो कहां से कहां पहुंचा सकता है। जीरो की हिन्दुस्तान में खोज हुई है। यह किसी भी नंबर के पहले जितना मर्जी लगा दिया जाये इसका कोई महत्व नहीं, लेकिन नंबरों के बाद लगते ही इसकी बाजार में कीमत बढ़ जाती है। और आदमी इस शून्य को अपने पीछे लगाने की जगह उसके पीछे लगकर स्वयं को जीरो कर लेता है। इसकी सबसे बड़ी मुश्किल यह है कि इसकी कोई सीमा नहीं। यह असंख्य संख्या तक बढ़ सकता है। अनगिनत की परिभाषा भी तो हमने ही गढ़ी है। मगर हम भूल जाते हैं कि जीवन सीमित है। हिन्दुस्तानी संस्कृति के पूर्वज मूर्ख नहीं थे। उन्होंने शून्य का आविष्कार बाजार की कीमत के लिए नहीं किया था। यह जीवन की शून्यता के लिए था। यह आकाश के अनंत विस्तार के लिए था। यह अस्तित्वहीनता के लिए था। इसमें अध्यात्म था। यह निराकार था। यह गोलाकार था। यह सर्वत्र विद्यमान था। यह वैचारिक कल्पना थी। जिसे हमने बड़ी आसानी से भुला दिया। और इस शून्य को एक सर्वाधिक बिकाऊ माल बना दिया। मेरे मन में एक सवाल प्रारंभ से गूंजता रहा है कि आदमी पैसा कमाता क्यूं है? आज सभी पुराने मुनीम की तरह तिजोरी भरने में क्यूं लग गए? एक मजेदार किस्सा याद आता है। कुछ साल पूर्व की बात है, एक गंजा दोस्त था। उसने काफी इलाज कराया पर सिर पर बाल नहीं आ पाते थे। वह पैसे का इतना प्रेमी था कि हमेशा जोड़-तोड़ में लगा रहता। और इसके लिए कुछ भी करने को तैयार। मैं एक बार उससे भी यह सवाल पूछ बैठा कि तुम आखिरकार इन पैसों का करोगे क्या? वह अपनी ढेर सारी मुस्कुराहट के साथ बहुत कुछ कहने की कोशिश में दिखाई दिया। भविष्य, सुरक्षा, सुविधाओं व बच्चों की बात आदि-आदि। अंत में मजाक में मैं एक सवाल पूछ बैठा कि कल किसने देखा है मगर आज क्या तुम इन पैसों से अपने सिर के बाल उगा सकते हो? अगर नहीं तो सब कुछ व्यर्थ है। इस बात पर वह कुछ देर के लिए रुका था और फिर हम दोनों जाने-अनजाने ही हंस पड़े थे। बाद में मैं अपने से बात करने लगा था। शायद वो भी सोचने को मजबूर हुआ हो। बहरहाल, आधुनिक युग में पैसे के समर्थन में बहुत कुछ कहा जा सकता है। साधन, सहूलियत, समृद्धि व बुढ़ापे की योजना की बात की जा सकती हैं। मगर फिर भी ऐसा बहुत कुछ हो जाता है जिसकी हम कल्पना भी नहीं कर सकते। जीवन सदैव हमारे आगे शून्य के रूप में चलता रहता है। यह एक अजीब पहेली है। हम जितना अपने साथ शून्य को जोड़ने के लिए आगे बढ़ते चले जाते हैं उतना ही शून्य हमारे सामने आकर खड़ा हो जाता है और फिर हम उसे पकड़ने के लिए आगे बढ़ जाते हैं। यह एक परिस्थितिजन्य कुचक्र है जिससे निकल पाना मुश्किल हैं। इस चक्रव्यूह से मानसिक रोग हो जाता है। इस दौड़ में शामिल होने पर आप निकल नहीं सकते। रुकने पर रौंद दिये जाओगे। सुस्त होने पर धकिया दिये जाओगे और तेज दौड़ने पर हांफने लगोगे। सबसे महत्वपूर्ण बात तो यह है कि इस अंधी दौड़ से जो किनारा कर गया वही जीवन का सुख वास्तव में ले पाया है।

मध्य प्रदेश में कुपोषण का कहर

– शिरीष खरे

शिरीष खरे मासक्मयुनिकेशन में डिग्री लेने के बाद चार साल डाक्यूमेंट्री फिल्म आरगेनाइजेशन में शोध और लेखन.उसके बाद दो साल नर्मदा बचाओ आन्दोलन, बडवानी से जुड़े रहे. सामाजिक मुद्दों को सीखने और जीने का सिलसिला जारी है. फिलहाल चाइल्ड राईट्स एंड यू, मुंबई के संचार विभाग में से जुड़कर सामाजिक मुद्दों को समझने की कोशिश कर रहे हैं.

यह हाल मध्यप्रदेश के आदिवासी जिले झाबुआ का है, जहां मेघनगर ब्लाक के अगासिया और मदारानी गांवों में बच्चों की मौतों का सिलसिला है कि टूटता ही नहीं। केवल अक्टूबर में ही 2 गांवों से 25 बच्चों की मौत दर्ज होना– यहां पर मौत के ताण्डव की एक झलक भर है। एक तरफ पास के ही खण्डवा में आंतकवादी बतलायी गई वारदात के तुरंत बाद से मुख्यमंत्री शिवराज सिंह अपने साहस का परिचय पेश कर रहे हैं मगर दूसरी तरफ महीनों से कुपोषण नाम का जो आंतक झाबुआ के कई दुबले, पतले, रक्तहीन शरीर वाले बच्चों को मलेरिया जैसी बीमारियों की चपेट में आते ही 4 रोज के भीतर खा रहा है। उसके खिलाफ ठोस कार्रवाई की बात तो दूर जबावदारी लेने का साहस तक कोई नहीं करता है। मालूम नहीं यह बात भोपाल तक पहुंची है या नहीं कि मौत के गले उतर चुके ऐसे बच्चों में से ज्यादातर 0–6 साल के हैं। पता किया तो पता चला है कि यह बच्चे तो क्या इनके नाम तक स्थानीय आंगनबाड़ी केन्द्रों में कभी नहीं पहुंचे। आखिर किससे पूछे कि जिले के 75 ब्लॉ पोषण केन्द्रों में ताले लटके हैं तो क्यों ? इसके पहले महिला बाल विकास विभाग की रिपोर्ट भी कह चुकी है कि झाबुआ जिले में 36 फीसदी बच्चे कुपोषित हैं। फिर भी प्रशासन कुपोषण से बच्चों की मौतों को रोक नहीं पा रहा है। फिलहाल 25 बच्चों की मौत को लेकर कहा जा रहा है कि इन्हें

महीने भर में दो दर्जन बच्चों की मौत

मलेरिया जैसी बीमारियां तो थीं ही, इनमें रक्त की भारी कमी भी थी। पूरे इलाके में कुपोषण के खतरनाक स्तर को देखते हुए कुपोषण को बच्चों की मौत का मुख्य कारण बतलाया जा रहा है। जैसे कि मेघनगर के ब्लाक मेडीकल आफीसर विक्रम वर्मा भी कहते हैं कि- ''हमने अभी तक 14 बच्चों की मौत के कारणों को ढूढ़ा है, प्राथमिक तौर पर देखने के बाद यही लगता है कि उन्हें कुपोषण, एनीमिया और मलेरिया ने बुरी तरह जकड़ लिया था।'' यह और बात है कि स्वास्थ्य विभाग के ज्वाइंट डायरेक्टर केके विजयवर्गीय कुछ और कहते हैं- ''अक्टूबर में सिर्फ चारेक मौतें हुई हैं। मैंने पर्यवेक्षक और एएनएम के खिलाफ कार्रवाई का आदेश दिया है, इसके अलावा ब्लाक मेडीकल आफीसर को रिपोर्ट में देरी किये जाने पर कारण बताओ नोटिस भी भेजा दिया है।'' ज्वाइंट डायरेक्टर कुपोषण को बच्चों की मौत का कारण नहीं मानते हैं। उनके हिसाब से- ''हालांकि अभी तक कोई कारण स्पष्ट नहीं हो पाया है, मगर एक बात तो पक्की है कि कुपोषण नहीं ही है। शायद उन्हें मौसमी बुखार था।''

इस तरह जहां स्वास्थ्य विभाग की गंभीरता स्पष्ट होती है वहीं समाज कल्याण के लिए बनी योजनाएं का असर भी साफ समझ आता है। ऐसा इसलिए क्योंकि अगासिया के जिन 4 बच्चों की मौत को मौत मान लिया गया है, उनके घरवाले रोजीरोटी के लिए अपने घरों से पलायन करते हैं। सवाल है कि अगर राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारण्टी योजना सालों पहले आई है तो इनके हाथों में जाब-कार्ड आजतक क्यों नहीं पहंचे हैं ? देखा जाए तो झाबुआ जिले के अगासी और मदारानी जैसे गांव तो कुपोषण नाम की इस दास्तान के छोटे-छोटे से बिन्दु भर हैं। हकीकत तो यह है कि मध्यप्रदेश के बड़े हिस्से में कुपोषण अब महामारी की तरह फैल रहा है। प्रदेश के ही एक और जिले सीधी का जिक्र करें तो यहां भी अगस्त से अबतक 22 बच्चों की मौतें दर्ज हुई हैं। इस बीच एशियन हयूमन राईटस कमीशन ने अपनी रिपोर्ट में कहा है कि रीवा जिले के जेबा ब्लाक में कोल आदिवासियों के 80 ल से ज्यादा बच्चे कुपोषित हैं। सुप्रीम कोर्ट और यूनाइटेड नेशन इंटरनेशनल चिल्ड्रनर्स इमरजंसी फण्ड की रिपोर्ट के मुताबिक यहां के हालात तो उप-सहारा अफ्रीका देशों से भी खराब है। इसी तरह नेशनल फेमिली हेल्थ सर्वे-3 के मुताबिक मध्यप्रदेश में 12 लाख से ज्यादा बच्चे गंभीर रूप से कुपोषित हैं। यहां 0-3 साल के 60 ल बच्चे कुपोषित हैं, जबकि इसी श्रेणी के 82.6 ल बच्चे रक्तहीनता के शिकार हैं। प्रदेश में शिशु मृत्यु दर 1000/70 है, जबकि आदिवासी इलाकों में शिशु मृत्यु दर है 95.6/1000!! ऐसे में सवाल उठता है कि 2015 तक शिशु मृत्यु दर में दो-तिहाई की कमी लाने वाले प्रदेश सरकार के लक्ष्य का क्या होगा ? वह भी तब जब 1.2 करोड़ बच्चों की आबादी वाले इस प्रदेश में शिशु रोग विशेषज्ञ की संख्या है केवल 117। और तो और 30 जिलों की जनता को आज भी शिशु स्वास्थ्य से जुड़ी सहूलियतों का इंतजार है। मगर सेंटर फार बजट गवेर्नेंस एंड अकाउंटबिलिटी के मुताबिक मध्यप्रदेश सरकार जीडीपी का केवल 0.1 ल हिस्सा बच्चों के स्वास्थ्य पर खर्च करती है। इसी तरह आजीविका के लिए तैयार हुई राष्ट्रीय रोजगार गांरटी की चाल यह है कि प्रदेश सरकार बीते 4 सालों में इस योजना की पूरी राशि ही खर्च नहीं कर सकी है। इस योजना के तहत वित्तीय वर्ष 2005-06 से वित्तीय वर्ष 2008-09 के बीच कुल 9739 करोड़ 23 लाख रूपए आंवटित हुए जिसमें से खर्च हुए 8191 करोड़ 34 लाख रूपए ही। जिसमें से 3 साल तो ऐसे भी रहे कि जब वह केन्द्र सरकार के खाते की राशि तक खर्च नहीं कर सकी। सरकार कहती है कि इस योजना में 1 करोड़ 11 लाख 40 हजार जाब-कार्ड बन गए हैं मगर अबतक केवल 11 लाख लोगों को ही रोजगार मिल पाने के सवाल पर वह चुप है। जुलाई 2008 में सेंटर फार एन्वायरमेंट एण्ड फूड सेक्यूरिटी ने झाबुआ सहित प्रदेश के 5 जिलों के 125 गांवों में सर्वे किया और कहा कि सरकार के दावे झूठे हैं। उसके मुताबिक यहां साल में औसतन 16 दिन ही रोजगार मिल पाता है।

मध्यप्रदेश के अलग-अलग हिस्सों में स्वास्थ्य और आजीविका की ज्ञात स्थितियों को भी एक साथ जोड़कर देखें तो हमारे सामने आदिवासी आबादी पर कुपोषण के कहर की भयानक तस्वीर पेश होती है। जिसमें उसकी शक्ल भूख से होने वाली मौतों के लिए कुख्यात उड़ीसा, झारखण्ड और गुजरात की शक्लों से काफी मिलती-जुलती है।

कमिश्नर के आदेश को ठेंगा दिखाती मैहर एस.डी.एम. की चारसौबीसी

भ्रष्ट सरपंच को बचाने की कवायद

सतना। बहुजन समाज पाटी के सांसद देवराज पटेल के आवेदन पर संभागायुक्त रीवा द्वारा गठित एक जांच कमेटी के द्वारा जांचकर एक सरपंच के खिलाफ 44 लाख रूपये से अधिक की रिकवरी निकाली गई। कमिश्नर ने इस रिकवरी आदेश पर कलेक्टर सतना को अमल करने के लिए आदेशित किया जिसे सतना कलेक्टर सुखवीर सिंह द्वारा मैहर एस.डी.एम. के पास कार्यवाही हेतु भेजा गया और एस.डी.एम. विनय जैन ने आरोपी सरपंच से सांठ-गांठ कर उसे बचाने की कसरत कर जहां शासन को नुकसान पहुंचाने का प्रयास किया वहीं धोखाधड़ी का सहारा लेकर कानून को ठेंगा दिखाते हुए अपने वरिष्ठतम आई.ए.एस. अधिकारियों को भी मूर्ख बनाने का काम किया। जुलाई, 10 से तत्काल रिकवरी के कलेक्टर के आदेश पर अरोपी सरपंच से अब तक भी वसूली नहीं हो पाने पर सभी संबंधित वरिष्ठ अधिकारी संभवत: इसलिए चुप रहे कि उन पर सांसद गणेश सिंह का दबाव था। सतना के भाजपा सांसद गणेश सिंह की भतीजी की शादी में म.प्र. के मुख्यमंत्री शिवराज सिंह आठ मंत्रियों के लाव लश्कर के साथ पहुंचे। पूर्व प्रदेशाध्यक्ष नरेन्द्र सिंह तोमर भी नमूदार हुए इस शादी समारोह में। संभवत: मुख्यमंत्री सहित मंत्रियों के इस काफिले को देखकर ही जिले के अधिकारी सतना में सरकार के आदेश कम सांसद गणेश सिंह की अपनी मर्जी पर 'यादा चलते दिखाई देते है। वे सोचते है सतना में रहना है गणेश गणेश जपना है। मामला मैहर तहसील की बरेठी ग्राम पंचायत का है जहां पर करोड़ों के काम इसलिए हुए कि सांसद गणेश सिंह चाहते थे। लेकिन रोजगार गारंटी सहित कई कामों में सरपंच ने अपनी राजनीतिक पहुंच का लाभ उठाते हुए बिना काम कराए पैसे हजम कर लिए। जिनमें तालाब गहरीकरण जैसे से लेकर सड़क के निर्माण तक के मामले है। जनता की समस्या का हल जनता की मौजूदगी में करने की नीयत से बरेठी में लगाई गई कलेक्टर की चौपाल में शिकायतकर्ता महीप सिंह की शिकायत पर मौका देखने पहुंचे कलेक्टर ने जब तालाब नदारद पाया तो उन्होंने जिला पंचायत सी.ई.ओ. आशीष कुमार को जांच करने का आदेश दिया। इसके पहले की शिकायतों पर केन्द्र सरकार का जांच दल दो बार आकर जांचकर चुका था। इधर कार्यवाही न होते देख रीवा सांसद ने संभागायुक्त को आवेदन देकर मामले में कार्यवाही की जाने की मांग की थी। जिस पर संभागायुक्त ने जांच कमेटी गठित कर जल संसाधन एवं लोक निर्माण विभाग की कार्यपालन यंत्री सहित मनरेगा के परियोजना समन्वयक की टीम बनाकर जांच करा दी और 44 लाख से अधिक की वसूली निकलने पर राशि की वसूली के साथ सरपंच के खिलाफ एफ.आई.आर. दर्ज करने के आदेश दिए जिसे भ्रष्ट एस.डी.एम. विनय जैन ने अपनी तरह से कार्यवाही करते हुए न केवल आरोपी सरपंच ईश्वरदीन पटेल और सचिव को बचाने की गरज से उसे पुन: निर्माण कराने का अवसर दिया और अपने अधिकार का बेजा इस्तेमाल करते हुए उक्त निर्माण कार्यों का पुन: मूल्यांकन करने मैहर ब्लॉक के सभी इंजीनियरों की लाईन लगा दी। मैहर एस.डी.एम. जैन के इस चार सौ बीसी भरे आदेश को सहायक यंत्री ने जब मानने से इंकार कर दिया तब उसने सहायक यंत्री मिश्रा के खिलाफ अपनी कोर्ट से वारंट तक जारी कर दिया। परंतु सहायक यंत्री और अन्य मंत्री ने जब उनकी मर्जी पर अपनी कलम फंसाने से इंकार कर दिया तब उसने ब्लॉक के शेष इंजीनियरों की भी ड्यूटी लगा दी। इस दौरान म.प्र. के मुख्यमंत्री का सतना दौरा हो गया और लोगों की शिकायत पर विनय जैन को मैहर से हटाकर सतना कलेक्ट्रेट में पदस्थ कर दिया गया लेकिन अचानक क्या हुआ बिना जांच, बिना किसी आधार के पुन: विनय जैन को अमर पाटन का एस.डी.एम. बना दिया गया। गोया मुख्यमंत्री से भी अधिक पावर फुल कोई है जिसने सरपंच ईश्वरदीन पटेल से भी बड़ा अपराध करने वाले अनुविभागीय पदाधिकारी को दण्डित करने के स्थान पर पुन: वैसा ही अपराध करने के लिए दूसरी तहसील में पदस्थ कर दिया। यहां यह भी बता दें कि विनय जैन साहब के भ्रष्टाचार की जांच पूर्व से ही चल रही है। कटनी में पदस्थ रहते करोड़ों के राहत घोटाले में फंसे जैन साहब ने मैहर की शारदा मैया के नाम पर गठित समिति में भी करोड़ों का भ्रष्टाचार किया है। उनके रहते ही समिति की आय दोगुनी बढ़ गई है। देखना है एक मामूली सरपंच को बचाने के लिए सी.एम. क्या क्या करते है?

नये निजाम के दामन पर है ज्यादा बड़ा दाग

– निरंजन परिहार

महाराष्ट्र के नए निजाम भी कोई दूध के धुले नहीं हैं। कांग्रेस आलाकमान ने अशोक चव्हाण को फर्जीवाड़े से फ्लैट पाने के आरोप में महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री की गद्दी से हटा दिया। लेकिन नए मुख्यमंत्री पृथ्वीराज चव्हाण भी उसी तरह के फर्जीवाड़े में गले तक डूबे हुए हैं। उन्होंने जितने बड़े बड़े झूठ बोलकर सरकार से फ्लैट हथियाए हैं वे कांग्रेस के लिए ज्यादा दागदार हैं।

पृथ्वीराज चव्हाण के चेहरे पर भ्रष्टाचार की कालिख नई नहीं है। सात साल पहले का मामला है। पृथ्वीराज चव्हाण ने 2003 में सरकार से सस्ते फ्लैट लेने के लिए सरकार के सामने गलत दस्तावेज सौंपे थे। मुंबई के वड़ाला स्थित भक्ति पार्क में उनका फ्लैट है, जो उन्होंने फर्जी दस्तावेज के आधार पर ही लिया है। अर्बन लैंड सीलिंग एक्ट के तहत महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री ने 2003 में ये फ्लैट पृथ्वीराज चव्हाण को अलॉट किया था। और सबूत के जो कागजात सामने आए हैं, उनके मुताबिक जो इस फ्लैट को पाने के लिए पृथ्वीराज ने जो कई तरह के झूठ बोले। उनमें से एक झूठ यह भी है कि चव्हाण ने फ्लैट लेने के लिए खुद को आमदार यानि महाराष्ट्र का एमएलए बताया था, जबकि उस वक्त पृथ्वीराज चव्हाण मध?यप्रदेश में थे। इसके अलावा एक झूठ यह भी है कि चव्हाण ने यह फ्लैट पाने के लिए तब अपनी सालाना कमाई सिर्फ 76 हजार रुपए ही बताई थी जबकि तब वे सांसद थे और भारत के किसी भी सांसद को साल भर में कितनी सैलरी मिलती है यह किसी से भी छुपा हुआ नहीं है। दरअसल, कहानी ये है कि महाराष्ट्र अर्बन लैंड सीलींग एक्ट के तहत अपने विशेष कोटा में से पांच फीसदी फ्लैट बहुत ही कम कीमत पर मुख्यमंत्री किसी को भी अलॉट कर सकते हैं । लेकिन स्कीम के तहत पिछले सोलह साल में करीब 85 फीसदी फ्लैट नेताओं या उनके रिश्तेदारों को ही बांटे गए।

यही नहीं, ईमानदार और बेदाग छवि बताकर कांग्रेस ने जिन पृथ्वीराज चव्हाण को महाराष्ट्र का मुख्यमंत्री बनाकर भेजा है, उन पर चुनाव लड़ने के लिए दिए गए संपत्ति के घोषणापत्र में बी अपनी बहुत सारी संपत्ति छुपाने का आरोप भी है। पृथ्वीराज चव्हाण ने सासंद का चुनाव लड़ने के वक्त जो शपथपत्र दिया, उसमें अपनी सातारा की खेती की जमीन का

भी कोई जिक्र ही नहीं किया। कांग्रेस ने पृथ्वीराज चव्हाण के बारे में ईमानदारी के बड़े - बड़े दावों और पाक साफ दामन की सोच-समझ के साथ महाराष्ट्र की गद्दी के लिए उनके नाम का एलान किया। पृथ्वीराज चव्हाण को गद्दी सैंपने के पीछे यह सोच भी रही कि अशोक चव्हाण की वजह से भ्रष्टाचार के जो दाग कांग्रेस के दामन पर लगे हैं, उनको ये नए चव्हाण धो देंगे। लेकिन सियासत के जंगल में जब गड़े मुर्दे उखड़ते हैं, तो अच्छे ङ्क अच्छों के चेहरों पर कालिख पुती नजर आती हैं।

पृथ्वीराज चव्हाण के चेहरे पर भी भ्रष्टाचार, फर्जीवाड़े और झूठे हलफनामे देने के कलंक की जो कालिख पुती नजर आ रही है, उससे साप लगता है कि कांग्रेस के ज्यादातर लोगों के दामन दागदार ही है।

कुल मिलाकर कांग्रेस भले ही कितना ही प्रचार करे और पृथ्वीराज चव्हाण को भले ही कितना भी ईमानदार और साफ छवि का

मीडिया में प्रभाष जोशी और एसपी सिंह के प्रति बेहद कृतज्ञ निरंजन परिहार ने पंद्रह साल तक प्रिंट और सन 2000 के बाद से टीवी की खबरों को जो धार बख्शी, वह मुंबई की पत्रकारिता के लिए मिसाल हैं। बेजान खबरें लिखे जाने की परंपरागत शैली को उलटकर रख देने वाले परिहार का सफर नवभारत टाइम्स से शुरू हुआ और जनसत्ता में एक दशक तक रहने के बाद दो साल तक प्रातःकाल दैनिक के स्थानीय संपादक भी रहे। सहारा समय टीवी नेटवर्क में संपादकीय समन्वयक और आइटीएन टीवी में सीनियर एडीटर भी रहे। और डॉक्यूमेंट्री फिल्में भी बनाई। संपर्क- niranjanparihar@hotmail.com

घोष्त कहरे, लेकिन फ्लैट आवंयन के साथ साथ चुनाव आयोग के सामने दिए गए संपत्ति के शपथ पत्र की जांच करने के लिए मामले की तह में जाए और सारी बातों को ध्यान से देखें तो पृथ्वीराज चव्हाण का दामन भी कोई कम दागदार नही है।

फ्लैट आवंटन में अशोक चव्हाण के तो रिश्तेदारों के ही नाम थे, लेकिन पृथ्वीराज चव्हाण तो खुद फर्जीवाड़ा करके फ्लैट पाने में कामयाब रहे हैं। भ्रष्टाचार का दलदल यहां भी है और अशोक चव्हाण पर तो कीचड़ के कुछ छींटे ही उड़े हैं, पृथ्वीराज चव्हाण तो खुद उसके दलदल में गले तक डूबे हैं। इसीलिए कहा जा सकता है कि महाराष्ट्र के नए निजाम भी कोई दूध के धुले नहीं हैं।

विधायिका की मर्यादा पर कलंक

कर्नाटक विधानसभा के अध्यक्ष केजी बोपैया ने बीएस येदियुरप्पा की सरकार बचा ली। लेकिन इसके लिए उन्होंने जिस तरीके का सहारा लिया, या कहें दल-बदल विरोधी कानून की उन्होंने जैसी मनमानी व्याख्या की, उससे विधायिका की मर्यादा पर एक नया कलंक लगा है। रा'यपाल एचआर भारद्वाज द्वारा स्पीकर को येदियुरप्पा सरकार के विश्वास मत प्रस्ताव पर मतदान के समय निष्पक्षता बरतने और पार्टियों की सदस्य संख्या की छह अक्टूबर की स्थिति बरकरार रखने का निर्देश देना उचित था या नहीं, यह एक अलग बहस का विषय है। संसदीय लोकतंत्र में विधायिका एक स्वायत्त इकाई है और उसके पीठासीन अधिकारी को स्वविवेक से कदम उठाने का पूरा अधिकार है। उसके कामकाज में दखल न दिया जाए यह न सिर्फ वांछित है, बल्कि संसदीय लोकतंत्र की गरिमा की रक्षा के लिए जरूरी भी है। लेकिन यह गरिमा तभी सुरक्षित रह सकती है, जब पीठासीन अधिकारी अपने पद की गरिमा के मुताबिक व्यवहार करें। केजी बोपैया ने ऐसा व्यवहार नहीं किया और इस तरह उन्होंने रा'यपाल के अनावश्यक दखल को बाद में एक तरह से उचित ठहरा दिया।

स्पीकर ने 16 विधायकों की सदस्यता विश्वास मत प्रस्ताव पेश होने से पहले ही खारिज कर दी। इनमें 11 विधायक भाजपा के हैं और पांच निर्दलीय। दलबदल विरोधी कानून के प्रावधानों के मुताबिक दो स्थितियों में निर्वाचित सांसदों या विधायकों की सदस्यता खारिज हो सकती है। पहली, जब कोई सदस्य स्वे'छा से उस पार्टी की सदस्यता छोड़ दे, जिसके टिकट पर वह चुना गया था। दूसरी, जब किसी सदस्य ने सदन में पार्टी ह्विप का उल्लंघन किया हो। यानी उसने पार्टी के निर्देश के खिलाफ मतदान किया हो या मतदान से बाहर रहा हो। अगर इस कानून का शब्दश: पालन किया जाए, तो कर्नाटक में बागी भाजपा विधायकों पर इन दोनों में से कोई स्थिति लागू नहीं होती है। उनका दावा है कि उन्होंने पार्टी नहीं छोड़ी

है, सिर्फ मुख्यमंत्री येदियुरप्पा से समर्थन वापस लिया है। ह्विप उल्लंघन का तो सवाल ही नहीं आया, क्योंकि सदन के बैठने के पहले ही स्पीकर ने उनकी सदस्यता खारिज कर दी। बहरहाल, अगर कानून की भावना पर गौर करें तो स्पीकर के पास यह कदम उठाने का एक तर्क हो सकता है। खासकर रवि नायक बनाम भारत सरकार मामले में सुप्रीम कोर्ट ने इस कानून की जो व्याख्या की थी, उसकी रोशनी में उनके फैसले को एक तर्क मिल सकता है। तब सुप्रीम कोर्ट ने कहा था कि अगर किसी सदस्य ने भले औपचारिक रूप से किसी पार्टी की सदस्यता ना छोड़ी हो, लेकिन उसके आचरण के आधार पर यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि उसने ऐसा कर दिया है। कहा जा सकता है कि पिछले एक हफ्ते से कर्नाटक के बागी भाजपा विधायकों का आचरण ऐसा ही था। लेकिन स्पीकर ने पांच निर्दलीय विधायकों की सदस्यता कैसे खारिज कर दी, यह समझना मुश्किल है। दसवीं अनुसूची के प्रावधान निर्दलीय सदस्यों पर लागू नहीं होते। 1996 के एक फैसले में सुप्रीम कोर्ट ने यह जरूर कहा था कि अगर किसी निर्दलीय सदस्य ने जीतने के बाद किसी पार्टी की सदस्यता स्वीकार कर ली है और उसने उस पार्टी के ह्विप का पालन किया है, तब उस पार्टी से उसके अलग होने को दलबदल माना जाएगा। लेकिन कर्नाटक के पांच निर्दलीय विधायकों के साथ यह शर्त संभवतः लागू नहीं होती। इसीलिए स्पीकर बोपैया का आचरण सवालों के घेरे में है। बोपैया कुछ ऐसा ही कदम उठाएंगे, इसका अंदेशा

पहले से था और जब रा'यपाल की सलाह पर उन्होंने कड़ी प्रतिक्रिया दिखाई, तो उसके बाद कोई शक नहीं रह गया कि वे स्पीकर के रूप में नहीं, बल्कि भाजपा के सदस्य के रूप में व्यवहार करने वाले हैं। शायद इस प्रकरण में सबसे दुर्भाग्यपूर्ण बात यही है कि इसमें रा'यपाल और स्पीकर दोनों का आचरण अपनी संवैधानिक गरिमा के मुताबिक कम और अपनी पार्टी के प्रति वफादारी से 'यादा संचालित हुआ लगता है। इस सबके बाद केंद्र के पास राष्ट्रपति शासन लागू कर देने का विकल्प मौजूद था, लेकिन मौजूदा परिस्थितियों में यह कदम भी बोपैया के फैसले जितना ही विवादास्पद होता। केंद्र में सत्ताधारी गठबंधन की प्रमुख पार्टी कांग्रेस के लिए यह कदम राजनीतिक रूप से भी शायद महंगा साबित होता, क्योंकि तब नैतिक और राजनीतिक दोनों रूपों से अपनी साख खो चुकी येदियुरप्पा सरकार को खुद को शहीद बताने का मौका मिल जाता। कसौटी – 'मैं ऐसे किसी अधिकार की तलाश नहीं कर पाता, जो सिर्फ अर्जी के आधार पर स्पीकर को सदस्यों की सदस्यता खारिज करने के लिए अधिकृत करता हो' – सोमनाथ चटर्जी, पूर्व लोकसभा अध्यक्ष।

पश्चिम बंगाल में जंग की लकीरें

सीपीएम ने एक बार फिर से बंगाल के लालगढ़ पर कब्जा कर लिया है। बीते रविवार सीपीएम के 10 हजार कार्यकर्ताओं ने एक जुलूस की शक्ल में लालगढ़ में प्रवेश किया और लंबे समय से बंद पड़ा पार्टी का दफ्तर फिर से खोला। माओवादियों की घुसपैठ की वजह से करीब दो साल पहले सीपीएम कार्यकर्ताओं को लालगढ़ छोड़ना पड़ा था, लेकिन बंगाल में पिछले कुछ समय के दौरान अर्धसैनिक बलों की कार्रवाई से माओवादियों के पैर उखड़ रहे हैं और सीपीएम काडर को फिर से खड़ा होने का मौका मिला है। बंगाल के तीन जिले - पश्चिम मेदिनीपुर, बांकुरा और पुरुलिया- अभी माओवादियों की चपेट में हैं और इस नक्सल प्रभावित इलाके को जंगलमहल भी कहा जाता है। कुल ×9 विधानसभा सीटों वाला यह पूरा इलाका सियासी रूप से सीपीएम का गढ़ रहा है और इसीलिए आज जंगलमहल में बंगाल की एक बेहद खूनी सियासी जंग चल रही है। इस लड़ाई में एक ओर माओवादी हैं, जो पिछले डेढ़ साल में सीपीएम के करीब ×00 कार्यकर्ताओं की हत्या कर चुके हैं। दूसरी और सीपीएम का काडर है, जो नक्सलियों को खदेड़ कर अपनी खोई जमीन फिर से हासिल करना चाहता है। लेकिन सीपीएम और माओवादियों के अलावा इस संघर्ष में दो और खिलाड़ी भी हैं। इनमें से एक पक्ष है ममता बनर्जी की पार्टी तृणमूल कांग्रेस और दूसरा पक्ष है पुलिसी संत्रास विरोधी जन साधारण कमेटी यानी पीसीपीए। पीसीपीए बंगाल के इस इलाके में माओवादियों की मदद कर रही है, लेकिन यह भी सच है कि पीसीपीए के बनने के पीछे नक्सली विचारधारा कम और सीपीएम काडर का सामंती रवैया अधिक जिम्मेदार है। इसीलिए पीसीपीए भले ही माओवादियों का मुखौटा हो, लेकिन आज उसके साथ जंगलमहल की जनता भी जुड़ी है और ममता बनर्जी इस बात को बहुत अ'छी तरह से समझ रही हैं। उनकी पार्टी तृणमूल कांग्रेस चाहती है कि जंगलमहल के इलाके में पीसीपीए चुनाव में उतरे। तृणमूल को लगता है कि यहां सीपीएम काडर की 'यादतियों से तंग आ चुके लोग पीसीपीए के लोगों को जरूर वोट देंगे। लेकिन यह बात समझने की है कि पीसीपीए की कमान शुरुआत से ही महतो समुदाय के लोगों के हाथ में रही है, जो आदिवासी या दलित न होकर कुर्मी जाति के हैं और सीपीएम के लोग उन पर शोषणवादी मानसिकता का आरोप लगाते आए हैं। महतो समुदाय को लग रहा है कि नक्सलियों की ताकत के साथ जुड़कर सीपीएम को खदेड़ना आसान होगा और ममता बनर्जी इसी में अपनी राजनीतिक जमीन तलाश रही हैं। जंगलमहल और पूरे पश्चिम बंगाल के लिए ये हालात कोई अ'छी खबर नहीं है। सीपीएम के भ्रष्ट और दबंग काडर ने तो वहां लोगों को परेशान किया ही, लेकिन इस इलाके में पीसीपीए का मजबूत होना ममता के साथ-साथ माओवादियों को भी आधार देगा। तृणमूल के सियासी फायदे के लिए आज ममता बनर्जी का हाथ बंटा रहे नक्सली बाद में जंगलमहल के अलावा बंगाल के दूसरे इलाकों में पनाह भी मांगेंगे और साथ में अपना सांगठनिक आधार भी बढ़ाएंगे। आज तृणमूल कांग्रेस भले ही नक्सलियों पर नरम हो, लेकिन बंगाल की जमीन पर माओवादियों की वापसी का पहला दरवाजा जाने-अनजाने सीपीएम ने ही खोला है। जब नंदीग्राम में पुलिस ने किसानों पर गोली चलाई तो ममता बनर्जी के पीछे-पीछे गांव वालों की मदद के लिए नक्सली भी घुसे चले आए। मुख्यमंत्री बुद्धदेव भट्टाचार्य की नई औद्योगिक नीति से तमतमाई जनता को ममता ने राजनीतिक विकल्प दिखाया, तो माओवादियों ने अपनी पूरी ताकत से सीपीएम के काडर को खदेड़ दिया। आज बंगाल में विधानसभा चुनाव से ठीक छह महीने पहले

जंग की लकीरें साफ दिख रही हैं। ×5 साल से बंगाल में राज कर रही सीपीएम के लिए यह लड़ाई काफी कठिन है, क्योंकि वह सत्ताविरोधी लहर के अलावा आज अपने कार्यकर्ताओं के भ्रष्टाचार, घमंड और सामंती रवैए का भी शिकार बन गई है। दूसरी ओर ममता बनर्जी के साथ लोगों की सहानुभूति है और पीसीपीएम का जनसंगठन भी, जिसके पीछे माओवादी भी खड़े हैं। इसीलिए कहना होगा कि बंगाल की राजनीति आज दुधारी तलवार पर चल रही है। जनता अगर सीपीएम से तंग होकर पीछा छुड़ाना चाहती है, तो माओवादी इसका फायदा उठाकर जंगलमहल को दूसरा दंडकारण्य बनाना चाहते हैं। ऐसे में राइटर्स बिल्डिंग तक पहुंचने की रणनीति बना रही ममता बनर्जी अपने ही किले में नक्सलवाद के संभावित खतरे को नजरअंदाज नहीं कर सकतीं।

सीपीएम ने एक बार फिर से बंगाल के लालगढ़ पर कब्जा कर लिया है। बीते रविवार सीपीएम के 10 हजार कार्यकर्ताओं ने एक जुलूस की शक्ल में लालगढ़ में प्रवेश किया और लंबे समय से बंद पड़ा पार्टी का दफ्तर फिर से खोला। माओवादियों की घुसपैठ की वजह से करीब दो साल पहले सीपीएम कार्यकर्ताओं को लालगढ़ छोड़ना पड़ा था, लेकिन बंगाल में पिछले कुछ समय के दौरान अर्धसैनिक बलों की कार्रवाई से माओवादियों के पैर उखड़ रहे हैं और सीपीएम काडर को फिर से खड़ा होने का मौका मिला है।

बंगाल के तीन जिले – पश्चिम मेदिनीपुर, बांकुरा और पुरुलिया– अभी माओवादियों की चपेट में हैं और इस नक्सल प्रभावित इलाके को जंगलमहल भी कहा जाता है। कुल ×9 विधानसभा सीटों वाला यह पूरा इलाका सियासी रूप से सीपीएम का गढ़ रहा है और इसीलिए आज जंगलमहल में बंगाल की एक बेहद खूनी सियासी जंग चल रही है। इस लड़ाई में एक ओर माओवादी हैं, जो पिछले डेढ़ साल में सीपीएम के करीब ×00 कार्यकर्ताओं की हत्या कर चुके हैं। दूसरी और सीपीएम का काडर है, जो नक्सलियों को खदेड़ कर अपनी खोई जमीन फिर से हासिल करना चाहता है। लेकिन सीपीएम और माओवादियों के अलावा इस संघर्ष में दो और खिलाड़ी भी हैं।

इनमें से एक पक्ष है ममता बनर्जी की पार्टी तृणमूल कांग्रेस और दूसरा पक्ष है पुलिसी संत्रास विरोधी जन साधारण कमेटी यानी पीसीपीए। पीसीपीए बंगाल के इस इलाके में माओवादियों की मदद कर रही है, लेकिन यह भी सच है कि पीसीपीए के बनने के पीछे नक्सली विचारधारा कम और सीपीएम काडर का सामंती रवैया अधिक जिम्मेदार है। इसीलिए पीसीपीए भले ही माओवादियों का मुखौटा हो, लेकिन आज उसके साथ जंगलमहल की जनता भी जुड़ी है और ममता बनर्जी इस बात को बहुत अ'छी तरह से समझ रही हैं। उनकी पार्टी तृणमूल कांग्रेस चाहती है कि जंगलमहल के इलाके में पीसीपीए चुनाव में उतरे।

तृणमूल को लगता है कि यहां सीपीएम काडर की 'यादतियों से तंग आ चुके लोग पीसीपीए के लोगों को जरूर वोट देंगे। लेकिन यह बात समझने की है कि पीसीपीए की कमान शुरुआत से ही महतो समुदाय के लोगों के हाथ में रही है, जो आदिवासी या दलित न होकर कुर्मी जाति के हैं और सीपीएम के लोग उन पर शोषणवादी मानसिकता का आरोप लगाते आए हैं।

महतो समुदाय को लग रहा है कि नक्सलियों की ताकत के साथ जुड़कर सीपीएम को खदेड़ना आसान होगा और ममता बनर्जी इसी में अपनी राजनीतिक जमीन तलाश रही हैं। जंगलमहल और पूरे पश्चिम बंगाल के लिए ये हालात कोई अ'छी खबर नहीं है। सीपीएम के भ्रष्ट और दबंग काडर ने तो वहां लोगों को परेशान किया ही, लेकिन इस इलाके में पीसीपीए का मजबूत होना ममता के साथ-साथ माओवादियों को भी आधार देगा। तृणमूल के सियासी फायदे के लिए आज ममता बनर्जी का हाथ बंटा रहे नक्सली बाद में जंगलमहल के अलावा बंगाल के दूसरे इलाकों में पनाह भी मांगेंगे और साथ में अपना सांगठनिक आधार भी बढ़ाएंगे। आज तृणमूल कांग्रेस भले ही नक्सलियों पर नरम हो, लेकिन बंगाल की जमीन पर माओवादियों की वापसी का पहला दरवाजा जाने-अनजाने सीपीएम ने ही खोला है। जब नंदीग्राम में पुलिस ने किसानों पर गोली चलाई तो ममता बनर्जी के पीछे-पीछे गांव वालों की मदद के लिए नक्सली भी घुसे चले आए।

मुख्यमंत्री बुद्धदेव भट्टाचार्य की नई औद्योगिक नीति से तमतमाई जनता को ममता ने राजनीतिक विकल्प दिखाया, तो माओवादियों ने अपनी पूरी ताकत से सीपीएम के काडर को खदेड़ दिया।

आज बंगाल में विधानसभा चुनाव से ठीक छह महीने पहले जंग की लकीरें साफ दिख रही हैं। ×5 साल से बंगाल में राज कर रही सीपीएम के लिए यह लड़ाई काफी कठिन है, क्योंकि वह सत्ताविरोधी लहर के अलावा आज अपने कार्यकर्ताओं के भ्रष्टाचार, घमंड और सामंती रवैए का भी शिकार बन गई है। दूसरी ओर ममता बनर्जी के साथ लोगों की सहानुभूति है और पीसीपीएम का जनसंगठन भी, जिसके पीछे माओवादी भी खड़े हैं। इसीलिए कहना होगा कि बंगाल की राजनीति आज दुधारी तलवार पर चल रही है।

जनता अगर सीपीएम से तंग होकर पीछा छुड़ाना चाहती है, तो माओवादी इसका फायदा उठाकर जंगलमहल को दूसरा दंडकारण्य बनाना चाहते हैं। ऐसे में राइटर्स बिल्डिंग तक पहुंचने की रणनीति बना रही ममता बनर्जी अपने ही किले में नक्सलवाद के संभावित खतरे को नजरअंदाज नहीं कर सकतीं।

छत्तीसगढ़ पीएससी परीक्षा- सभी भर्तियां कटघरे में

छत्तीसगढ़ लोक सेवा आयोग (पीएससी)ने छत्तीसगढ़ की छवि अविश्वसनीय प्रदेश की बना दी है। वर्ष 2003 से लेकर 2005, 2008 की सभी भर्तियां कटघरे में हैं। 2003 में चयनित डिप्टी कलेक्टर आज भी प्रोबेशन पर काम कर रहे हैं।मुख्य नगरपालिका अधिकारी (सीएमओ) परीक्षा में भी गलत उत्तर जारी करने के बाद पीएससी द्वारा की जा रही गड़बड़ियों में एक और अध्याय जुड़ गया है। पूर्व में पीएससी द्वारा ली गई परीक्षा और भर्ती के लगभग 95 प्रतिशत मामले हाईकोर्ट में हैं

2008 की मुख्य परीक्षा अब तक नहीं हो पाई है। डीएसपी भर्ती मामला तो सुप्रीम कोर्ट तक पहुंच गया है। इन सब बातों के मद्देनजर प्रतियोगियों ने राज्यपाल के नाम ज्ञापन प्रेषित कर आयोग में व्याप्त गड़बड़ियों को दूर करने की मांग की है। छत्तीसगढ़ में पीएससी के गठन के बाद से ली गई सभी परीक्षाओं में गड़बड़ी हुई है। इसे लेकर प्रतियोगी संघर्ष समिति ने एक बार फिर संघर्ष करने का निर्णय लिया है। इसकी शुरुआत राज्यपाल के नाम पर ज्ञापन सौंप कर की गई है। प्रतियोगी संघर्ष समिति के अध्यक्ष सुनील तिवारी, सदस्य गगन मोइत्रा, प्रशांत शुक्ला, शिशिर मल्होत्रा, राजेंद्र श्रीवास्तव, अविनाश जैन, राकेश ठाकुर ने ज्ञापन में कहा गया है कि पीएससी द्वारा राज्य के प्रतियोगियों के साथ खिलवाड़ किया जा रहा है।स्तगी का मामला सुप्रीम कोर्ट तक पहुंच चुका है। प्राचार्य भर्ती, सहायक प्राध्यापक भर्ती सहित पीएससी की अधिकतर परीक्षाओं के खिलाफ हाईकोर्ट में याचिकाएं दायर की गईं, जो विचाराधीन हैं। इससे पता चलता है कि राज्य में भर्ती तंत्र विफल हो चुका है। जहां तक सीएमओ भर्ती की परीक्षा की बात है तो इसमें 2000 से ज्यादा लोगों के फार्म निरस्त किए गए और विकलांग वर्ग की आयुसीमा में छूट के मामले में हाईकोर्ट ने पहले ही परिणामों को बाधित कर दिया है। इस परीक्षा में आयुसीमा और पाठ्यक्रम में शामिल किए गए नए विषयों पर डिग्रीधारकों को दोहरा लाभ देने संबंधी नियम पर सुधार की अपेक्षा करते हुए संघर्ष समिति ने आयोग के समक्ष आवेदन किया था।इसमें कहा था कि आयुसीमा की गणना एक जनवरी 2011 से किए जाने पर 35 साल की आयु पूरी किए बिना वंचित हो रहे छात्रों को अवसर दिया जाए। एमपी पीएससी की मुख्य परीक्षा सहित अन्य 5 परीक्षाओं की तारीख समान होने के कारण आयोग 12 दिसंबर की तिथि को बढ़ाए।

पीएससी परीक्षा 2008 के अनुसार ही प्रदेश के युवाओं को 37 साल तक छूट दी जाए। परीक्षा में लोक प्रशासन, विधि और प्रबंधन डिग्रीधारकों को बोनस नंबर की व्यवस्था समाप्त की जाए। लेकिन आयोग ने किसी आवेदन पर विचार नहीं किया अपनी मनमर्जी के अनुसार परीक्षा ली, वह भी गलत उत्तरों के आधार पर।

संस्कृति पर भी कुठाराघात

सीएमओ भर्ती परीक्षा के मांडल आंसर में छत्तीसगढ़ के संबंध में भी सही जानकारी नहीं है। पंडवानी गायिका ऋतु वर्मा, कृषि व सार्वजनिक वितरण प्रणाली, राज्य में बायोमास व पवन चक्की की अनुपलब्धता के संबंध में गलत जानकारी वाले उत्तर तैयार किए गए हैं। यहां तक कि 1857 के स्वतंत्रता संग्राम के संबंध में छत्तीसगढ़ संबंध प्रश्न और राजस्व संहिता व भारतीय दंड संहिता संबंधी प्रश्नों के उत्तर भी गलत हैं। इसी से पता चलता है कि आयोग में कैसे लोग बैठे हैं।

ब्यूरोक्रेसी का बड़ा हिस्सा अनैतिक और मक्कार

जोगिंदर सिंह

देश कोई सरकार या राजनीतिक पार्टी नहीं चलाती, बल्कि नौकरशाहों का एक समूह चलाता है। नेता अपनी राजनीति में व्यस्त रहते हैं, और तमाम योजनाएं होती हैं नौकरशाहों के जिम्मे। ताजा मामले बताते हैं कि हमारी ब्यूरोक्रेसी का बड़ा हिस्सा अनैतिक और मक्कार है तथा भ्रष्टाचार के पेड़ की जडें मजबूत करने में इसी का हाथ है। क्या यही ब्यूरोक्रेसी देश के विकास में सबसे बड़ी बाधा है? इसे कैसे सुधारा जा सकता है? जैसे सवालों पर इस बार की कवर स्टोरी..

रोमन दार्शनिक काटो ने सदियों पहले कहा था, 'एक नौकरशाह सबसे घृणित व्यक्ति होता है। हालांकि गिद्धों की तरह उसकी भी जरूरत होती है, पर शायद ही कोई गिद्धों को पसंद करे। गिद्धों और नौकरशाहों में अजीब तरह की समानता है। मैं अभी तक किसी ऐसे नौकरशाह से नहीं मिला हूं, जो क्षुद्र, आलसी, क़रीब-क़रीब पूरा नासमझ, मक्कार या बेवकूफ़, जालिम या चोर न हो। वह ख़ुद को मिले थोड़े-से अधिकार में ही आत्ममुग्ध रहता है, जैसे कोई बच्च गली के कुत्ते को बांधकर ख़ुश हो जाता है। ऐसे व्यक्तियों पर कौन भरोसा कर सकता है?'

बेशक, ऐसा कहते हुए उनके दिमाग़ में भारतीय नौकरशाही नहीं रही होगी, क्योंकि वे भारत से परिचित नहीं थे। लेकिन उनकी यह व्याख्या हमारे नौकरशाहों के व्यापक बहुमत पर पूरी तरह सटीक बैठती है, जो केंद्र और राज्य सेवाओं को मिलाकर 1.90 करोड़ के क़रीब होते हैं। यह माना जाता है कि भ्रष्टाचार की जड़ें काफ़ी व्यापक और गहरी हैं। हाल ही में मध्यप्रदेश और छत्तीसगढ़ के तीन आईएएस अफ़सरों के यहां से अथाह संपत्ति बरामद

तमाम आईएएस अफसरों को एक ही पाले में रखना भी अन्याय होगा। मेरे कुछ आईएएस दोस्तों ने अपनी बेहतर साख क़ायम की है। ऐसे लोग हर जगह कारगर होते हैं। राजनेता विकास और वितरण व्यवस्था को बेहतर बनाने के लिए जो भी कहें, इससे औसत नौकरशाह, ख़सतौर से उच्च स्तर पर बैठे लोगों के कान पर जूं भी नहीं रेंगती, क्योंकि उन्हें लगता है कि वे किसी के प्रति भी जवाबदेह नहीं हैं। इस व्यवस्था में सुधार भले ही मुश्किल हो, पर असंभव तो क़तई नहीं है।

हुई है, जो उनकी आय के ज्ञात स्रोतों के मुक़बले बहुत ज्यादा है। एक जमाने में नौकरशाही को स्टील (इस्पात) का ढांचा माना जाता था, जो अब स्टील (चोरी) का ढांचा बन चुका है।

आजाद होने के 63 साल बाद भी शासन व्यवस्था बद से बदतर ही हुई है। सरकार आईएएस अधिकारियों को प्रशिक्षण के लिए विदेशों में हार्वर्ड, ड्यूक, सिरेकस, एमआईटी, लंदन स्कूल ऑफ इकोनॉमिक्स जैसे संस्थानों में भेजती है। पर मुद्दे की बात यह है कि हर साल 200 से अधिक अधिकारियों को हार्वर्ड और अन्य विश्वविद्यालयों में भेजे जाने से उनकी समग्र कार्यकुशलता या ईमानदारी कैसे

आजाद होने के 63 साल बाद भी शासन व्यवस्था बद से बदतर ही हुई है। सरकार आईएएस अधिकारियों को प्रशिक्षण के लिए विदेशों में हार्वर्ड, ड्यूक, सिरेकस, एमआईटी, लंदन स्कूल ऑफ इकोनॉमिक्स जैसे संस्थानों में भेजती है। पर मुद्दे की बात यह है कि हर साल 200 से अधिक अधिकारियों को हार्वर्ड और अन्य विश्वविद्यालयों में भेजे जाने से उनकी समग्र कार्यकुशलता या ईमानदारी कैसे बढ़ाई जा सकती है या भ्रष्टाचार किस तरह कम या ख़त्म किया जा सकता है।

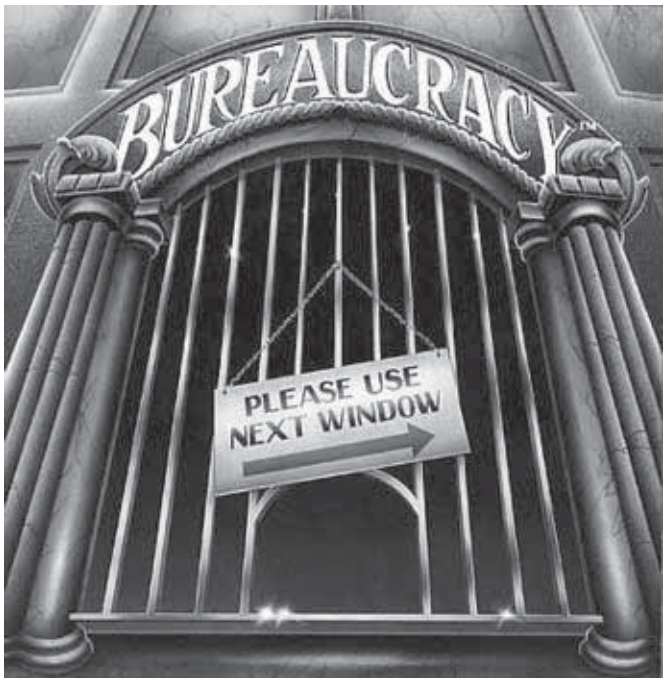

बढ़ाई जा सकती है या भ्रष्टाचार किस तरह कम या ख़त्म किया जा सकता है।

हमारे देश में ढेर सारे कानून, नियम-उपनियम और अधिनियम हैं। 1030 के लगभग केंद्रीय और 6727 राज्यीय अधिनियम हैं, ये नौकरशाहों को नागरिकों के धर्य की परीक्षा लेने का भरपूर अवसर देते हैं। नया कारोबार शुरू करना हो या कोई नया उद्योग स्थापित करना हो, हमारे देश में कुछ भी करने से पहले पता नहीं कितनी सारी अनापत्तियां और अनुमोदन हासिल करने होते हैं। केवल पैसा ही नौकरशाहों को हाथ-पैर तेजी से चलाने के लिए उकसाता है।

ट्रांसपेरेंसी इंटरनेशनल की 2009 की सूची में भारत लगातार भ्रष्टतम देशों में शामिल किया गया है। 180 देशों की सूची में हमारा देश 84वें स्थान पर है और उसे 100 में से महज 34 अंक मिले हैं। भारत में बिजनेस की परिस्थिति को लेकर विश्व बैंक द्वारा 2009 और 2010 में दिए गए आंकड़े अपनी कहानी खुद कहते नजर आते हैं। देश में कारोबार करने की सहज परिस्थितियों के लिहाज से 180 देशों की सूची में हम 133वें स्थान पर हैं। पिछले साल हम 132 नंबर पर थे। हमारी नौकरशाही सबसे निकृष्ट स्तर पर शासकीय कार्य और संचालन का प्रतीक बन गई है।

भ्रष्टाचार और कुशासन अक्षमता के सहोदर हैं। प्रधानमंत्री लगातार वितरण व्यवस्था की विफलता के बारे में कह रहे हैं, चाहे यह चाहे यह हर्षद मेहता था या तेलगी घोटाला या परियोजनाओं का निर्धारित समय सीमा में निबटारा न होना। भ्रष्टाचार पर नियंत्रण की राह में सबसे बड़ी बाधा असीमित बचाव और अनुमोदन एवं कानूनों की ढेर सारी परते हैं, किसी ब्यूरोक्रेट को छूने से पहले जिनसे पार पाना होता है। यह एक चपरासी से लेकर मुख्य सचिव तक, सब पर लागू होता है।

हाल ही में सीबीआई ने ऐसे प्रकरणों की सूची सार्वजनिक की है, जो मंजूरी के चक्कर में लटके हुए हैं। इस सूची में हरियाणा के एक पूर्व मुख्यमंत्री के पास 2006 में मिली बेहिसाब संपत्ति का प्रकरण भी शामिल है। सीबीआई ने कुल मिलाकर 132 प्रकरण सूचीबद्ध किए हैं, जिनके लिए मंजूरी लटकी हुई है। एक मामले में 15 तक स्वीकृतियां लेनी पड़ती हैं। सीबीआई के अधिकारी जिन लोगों पर कार्रवाई की प्रतीक्षा कर रहे हैं, उनमें विभिन्न विभागों के आयुक्त, आईएएस अफ़सर, सीएजी, एमसीडी और सीपीडब्ल्यूए के ऑडिटर भी शामिल हैं।

सैद्धांतिक रूप से सरकार एक अस्पष्ट निकाय है, लेकिन इसका 99 प्रतिशत हिस्सा आईएएस हैं, जो कि वास्तविक सरकार हैं। वे न सिर्फ़ लाखों-करोड़ों रुपए की योजनाएं बनाते और मसौदा मंजूरी देते हैं, बल्कि उन्हें लागू भी करते हैं। वे ही कानूनी बिरादरी की मदद से नियम और कानून बनाते हैं और फाइलों को लटकाने या तेजी से निबटाने का काम करते हैं। यह उनकी बिरादरी ही है, जो उन्हें नियमों की ढाल प्रदान करती है, न सिर्फ़ उन्हें, बल्कि तमाम लोगों को। शायद उन्हें पक्षपात के लिए आरोपित किया जा सकता है।

सभी शीर्ष पद, चाहे वे मंत्रियों के पीए और पीएस हों, मंत्रियों के सलाहकार हों या अंडर सेक्रेटरीज और सेक्रेटरीज हों, वे उनके कैडर जॉब्स की तरह रेखांकित किए गए हैं। सैद्धांतिक तौर पर सभी पद सभी सेवाओं के लिए खुले हैं, लेकिन वास्तविक व्यवहार में आईएएस को छोड़कर बाक़ी सभी सेवाएं

प्रशासन से संबंधित सारे काम पीए और अपने विभाग में कार्यरत अन्य नौकरशाहों पर छोड़ देते हैं। सो, अगर किसी भ्रष्ट नौकरशाह के खिलाफ़ कार्रवाई करनी होती है, तो इसमें उम्र गुजर जाती है। पहली बात तो यह है कि वह ख़ुद को बचाने की कोई कसर नहीं छोड़ता

अछूत की तरह हैं। राज्यों और केंद्र के ज्यादातर मंत्री पेशेवर हैं और सरकार चलाने के तौर-तरीक़े समझने की बजाय राजनीति में ज्यादा व्यस्त रहते हैं। वे प्रशासन से संबंधित सारे काम पीए और अपने विभाग में कार्यरत अन्य नौकरशाहों पर छोड़ देते हैं। सो, अगर किसी भ्रष्ट नौकरशाह के खिलाफ़ कार्रवाई करनी होती है, तो इसमें उम्र गुजर जाती है। पहली बात तो यह है कि वह ख़ुद को बचाने की कोई कसर नहीं छोड़ता वह ऐसी योजना बनाता है कि पकड़ में ही न आए और पकड़े जाने की सूरत में कानूनी गलियों और कोर्ट के अड़ंगों से बच निकलने की जुगत भिड़ाता है। कुछ समय पहले, कोर्ट में लंबित पड़े मामलों के आंकड़े आए थे। न्याय के दरवाजें सभी के लिए खुले हैं, ठीक उसी तरह जैसे देश के फाइव या सेवन स्टार होटलों में भुगतान करके कोई भी जा सकता है। लेकिन क्या आप भारत में सचमुच न्याय पा सकते हैं और अन्याय से निजात पा सकते हैं? लंबित सीबीआई प्रकरणों पर दिल्ली सरकार के एक कैबिनेट नोट ने इस स्थिति को 'ख़तरे की घंटी' के समान बताते हुए कहा था कि 119 प्रकरणों में तो अभियोग, आरोप ही तय नहीं हुए हैं और तत्काल समुचित कार्रवाई की दरकार है.. प्रकरणों के निबटारे में और देर अपराधियों को अपनी गतिविधियां जारी रखने के लिए प्रोत्साहित करती है। दिल्ली में प्रकरणों की राह में अवरोध अपनी कहानी ख़ुद बयां कर देते हैं- भ्रष्टाचार निरोधक अधिनियम 1998 के तहत 1389 सीबीआई प्रकरण आठ साल से ज़्यादा समय से चल रहे हैं। 51 प्रकरण 15 साल से ज़्यादा समय से लटके हैं। 172 केसों को लटके 18 साल से अधिक समय हो चुका है। हक़ीक़त में आंकड़े तो सिर्फ़ नजीर हैं, पूरी तस्वीर नहीं। देखा जाए, तो नौकरशाही देश के विकास में अड़ंगा ही रही है। अब इसे धूल-धूसरित करने का वक़्त है। नौकरशाही का निहित स्वार्थ ही भ्रष्टाचार, कदाचार और बड़ी मछलियों के बच निकलने के लिए जिम्मेदार है। हमें दुनिया की सर्वश्रेष्ठ व्यवस्थाओं को लेकर उन्हें अपने देश में आजमाना चाहिए। सबकुछ एक ही सेवा के लिए संरक्षित नहीं करना चाहिए, बल्कि सभी तरफ़ से सुयोग्य व्यक्ति लिए जाने चाहिए। प्रशासन को एक ही सेवा के लिए सुरक्षित रखने का वर्तमान सिस्टम चौकोर खानों में गोल खूंटे में जबर्दस्ती फिट करने की तरह है।

हालांकि स्व. राजीव गांधी ने ब्यूरोक्रेसी से बाहर के सुयोग्य लोगों को लेने के लिए नियम बदले थे, बावजूद इसके ब्यूरोक्रेसी ने सुनिश्चित कर लिया कि वित्तीय व अन्य क्षेत्रों में विशेषज्ञता की दरकार वाले तमाम जॉब्स रिटायरमेंट के बाद आईएएस के हिस्से में जाएं। राजनीतिक नेतृत्व भी सुरंग की दृष्टि रखता है और सचिवालयीन बाबुओं से परे कुछ देख ही नहीं सकता या देखता ही नहीं है। ये बाबू ऑफिस रूपी अड्डों में नियम-क़ायदे चलाते हैं, बजाय फील्ड में जाकर चीजों का वितरण करने के।

बहरहाल, तमाम आईएएस अफसरों को एक ही पाले में रखना भी अन्याय होगा। मेरे कुछ आईएएस दोस्तों ने अपनी बेहतर साख क़ायम की है। ऐसे लोग हर जगह कारगर होते हैं। राजनेता विकास और वितरण व्यवस्था को बेहतर बनाने के लिए जो भी कहें, इससे औसत नौकरशाह, ख़सतौर से उच्च स्तर पर बैठे लोगों के कान पर जूं भी नहीं रेंगती, क्योंकि उन्हें लगता है कि वे किसी के प्रति भी जवाबदेह नहीं हैं। इस व्यवस्था में सुधार भले ही मुश्किल हो, पर असंभव तो क़तई नहीं है। धारा 311 के तहत 'प्रोविजन ऑफ समरी डिसमिसल' को बड़े पैमाने पर इस्तेमाल करने की जरूरत है। इसी के साथ, यदि कोई व्यक्ति भ्रष्टाचार के मामले में पकड़ा जाए और तकनीकी आधार पर छूट जाए, तो प्रशासन में उसके लिए कोई जगह नहीं होनी चाहिए। बहरहाल, यहां यह जोखिम जरूर है कि भ्रष्ट नेता इस ताक़त का दुरुपयोग कर सकते हैं, और इसीलिए बराबर जवाबदेही तय होनी चाहिए। इस सबके अलावा भारत के मुख्य न्यायाधीश द्वारा अनुशंसित पुनर्गठन को तत्काल स्वीकृति मिलनी चाहिए, ताकि न केवल आम आदमी, बल्कि अपमानित महसूस करने वाले नौकरशाह भी न्याय पा सकें।

ब्यूरोक्रेसी और राजनेताओं का कानून कुछ नहीं बिगाड़ सकता

शिक्षा का मंदिर स्कूल, न्याय का मंदिर अदालत, इंसाफ दिलाने की जिम्मेदार सीबीआई और इन सब पर निगाह रखने वाली चुनी हुई सरकार- सब चरमरा कर गिर गए हैं।

अजय सेतिया

हमारा प्रशासनिक राजनीतिक ढांचा चरमरा रहा है। प्रशासनिक सुधार आयोगों की रिपोर्टें असली मर्ज को पहचानने की कोशिश भी नहीं करतीं। राजनीतिक नेता और नौकरशाही का मकड़जाल देश के लोकतंत्र को घुन की तरह खा रहा है। नौकरशाह देश को चूसने वाले गिद्ध बन गए हैं और राजनीतिक नेता उन पर नकेल कसने के बजाय छोटे-छोटे स्वार्थों के लिए उनके हाथों का खिलौना बन गए हैं। कई मुख्यमंत्रियों को निजी बातचीत में यह कहते सुना है कि ब्यूरोक्रेसी से काम लेना आसान नहीं। ब्यूरोक्रेसी (जिनमें खासकर आईएएस-आईपीएस अधिकारी) तब तक किसी राजनेता के पांव नहीं जमने देती, जब तक राजनेता उन्हें संरक्षण का वायदा नहीं करते। जब वे आपस में घुल-मिल जाते हैं, तो एक-दूसरे के काले कारनामों में मददगार हो जाते हैं।

रूचिका गिरहोत्रा का मामला देश में पहला नहीं है। इससे मिलते-जुलते सैकड़ों मामले मिल जाएंगे। जहां ब्यूरोक्रेसी और राजनेताओं ने समाज पर अत्याचार किए और कोई कानून उनका कुछ नहीं बिगाड़ सका। देश की राजधानी दिल्ली के पुलिस थानों में बलात्कार की घटनाएं होती रहती हैं। मुंबई के पुलिस बूथ में बलात्कार की घटना हुई थी। चौदह साल की रूचिका के साथ जैसी छेड़छाड़ पुलिस इंस्पेक्टर जनरल एसपीएस राठौर ने की, ?सी घटनाएं हर जिले-तहसील में आए दिन होती हैं। उन्नीस साल पहले 1990 में चंडीगढ़ में स्वतंत्रता दिवस से तीन दिन पहले राठौर ने रूचिका को अपने दफ्तर में बुलाया। वह इंस्पेक्टर जनरल के साथ-साथ हरियाणा लान टेनिस एसोसिएशन का अध्यक्ष भी था। रूचिका लान टेनिस की खिलाड़ी थी। शासन क्यों इजाजत देता है पुलिस और प्रशासनिक अधिकारियों को खेल संघों में सक्रिय होने और दखल देने की। खेल संघों के पदाधिकारी बनने की होड़ क्यों मची है प्रशासनिक अधिकारियों और राजनेताओं में। मंत्रियों, मुख्यमंत्रियों और आईएसएस, आईपीएस, आईएफएस अधिकारियों पर खेल संघों और क्लबों के पदाधिकारी बनने पर रोक लगना चाहिए। ?से प्रभावशाली लोगों के कारण खेलों और सामाजिक क्लबों का वातावरण दूषित हो रहा है, इनकी बेजा दिलचस्पी से खेल संघों और क्लबों में देह

शोषण को बढ़ावा मिल रहा है।

क्या हमारा लोकतंत्र सफल हो रहा है। जब अपराधी और अपराधियों को संरक्षण देने वाले चुनाव जीत रहे हों, तो लोकतंत्र को सफल कैसे कहा जा सकता है। नारायणदत्त तिवारी के सेक्स स्कैंडलों के किस्से पिछले 30 साल से हर किसी की जुबान पर थे, लेकिन इन तीस सालों में उन्होंने क्या हासिल नहीं किया। वह तीन बार मुख्यमंत्री, दो बार केंद्र में मंत्री और राज्यपाल बने। जब तक उनका स्टिंग ऑपरेशन नहीं हुआ, कोई उनका बाल भी बांका नहीं कर सका। उत्तरप्रदेश के मंत्री राजा भैया के कारनामों पर कोई कानून उनका क्या बिगाड़ सका। उन्होंने अपनी प्रेमिका मधुमिता शुक्ला की हत्या करवा दी और बाद में एक-एक करके गवाहों को निपटा दिया। यह सब करने के बाद भी राज्य सरकार में मंत्री बन गया। उत्तरप्रदेश के ही होनहार बैडमिंटन खिलाड़ी सैयद मोदी की हत्या दिनदहाड़े हुई थी। सैयद मोदी की हत्या से पहले अनीता का संजय सिंह से प्रेम शुरू हो चुका था।

प्रशासन में बैठे भ्रष्ट और बेईमान अफसरों को फैसले करने वाले पदों से हटाना होगा।

अनीता मोदी बाद में दो बार एमएलए और उत्तरप्रदेश सरकार में मंत्री भी बनीं। संजय सिंह को भी कोई कानून चुनाव लड़ने और मंत्री बनने से कहां रोक सका। शिबू सोरेन झारखंड मुक्ति मोर्चा के उन चार सांसदों में से एक थे, जिन्हें नरसिंहराव की सरकार बचाने के लिए मोटी रकम मिली थी। रिश्वत की यह राशि अदालत में साबित हो गई थी, लेकिन उन्हें बार-बार सांसद बनने, केंद्र में मंत्री बनने और अब तीसरी बार मुख्यमंत्री बनने से कौन रोक सका। सुखराम के घर से उनके बाथरूम और गद्दों में काले धन की गड्डियां मिली थीं। यह काला धन उन्होंने नरसिंहराव सरकार में मंत्री होते हुए देशभर में टेलीफोन का जाल बिछाते कमाया था। कोई कानून उन्हें इसके बाद चुनाव लड़ने और मंत्री बनने से कब रोक सका। हम लोकतंत्र की सफलता का ढिंढोरा पीटना चाहें तो चाहे जितना पीटें। हमारी प्रशासन और राजनीति के शुद्धिकरण में जरा दिलचस्पी नहीं है। प्रशासनिक अधिकारियों और राजनीतिक नेताओं का गठजोड़ लोकतंत्र को मजबूत होने देना नहीं चाहता। अगर लोकतंत्र की जड़ें मजबूत होतीं, तो ?से कैसे हो सकता था कि एक आईपीएस अफसर पूरे पुलिस प्रशासन को अपनी अंगुलियों पर नचाता। पुलिस ने छेड़छाड़ की शिकायत दर्ज नहीं की थी। रूचिका के पिता ने जब गृहमंत्री संपतसिंह को शिकायत की तो उन्होंने डीजीपी आरआर सिंह को तीन दिन में जांचकर रिपोर्ट सौंपने को कहा था। आरआर सिंह ने जांच के बाद इंस्पेक्टर जनरल राठौर के खिलाफ केस दर्ज करने की सिफारिश की थी, लेकिन संपतसिंह ने केस दर्ज नहीं करवाया।

तत्कालीन मुख्यमंत्री ओमप्रकाश चौटाला कैसे कह सकते हैं कि वह बेदाग हैं। वही मुख्यमंत्री थे उस समय। पचहत्तर साल के रिटायर डीआईजी आरआर सिंह अभी भी समझ नहीं पा रहे हैं कि तत्कालीन सरकार में कौन राठौर की मदद कर रहा था। जिस चौटाला सरकार ने राठौर को राष्ट्रपति पुलिस मैडल की सिफारिश की, वह अपने हाथ कैसे धो सकते हैं। रूचिका का मामला जोर पकड़ा, तो आईपीएस अधिकारी की पूरे पुलिस महकमे ने मदद की। उनके इशारे पर रूचिका

हम लोकतंत्र की सफलता का ढिंढोरा पीटना चाहें तो चाहे जितना पीटें। हमारी प्रशासन और राजनीति के शुद्धिकरण में जरा दिलचस्पी नहीं है। प्रशासनिक अधिकारियों और राजनीतिक नेताओं का गठजोड़ लोकतंत्र को मजबूत होने देना नहीं चाहता।

के भाई आशू पर चोरी का झूठा मुकदमा बनाया गया। नंगा करके उसके घर के पास घुमाया गया। राठौर की मौजूदगी में पुलिस उसकी पिटाई करती थी। राठौर ने रूचिका को स्कूल से निकलवाकर उसकी पढ़ाई बंद करा दी। रूचिका ने आत्महत्या कर ली तो भी पुलिस राठौर की मदद करती रही। पोस्टमार्टम में आत्महत्या का तरीका बदल दिया गया, यहां तक कि नाम बदल दिया गया, पिता का नाम भी बदल दिया गया। डॉक्टर और अस्पताल भी राठौर के प्रभाव में उनके इशारों पर काम कर रहे थे। सीबीआई कोर्ट ने आत्महत्या के लिए उकसाने का मामला दर्ज करने की सिफारिश की, तो हाईकोर्ट और सुप्रीम कोर्ट ने राठौर को राहत दे दी। जिस सीबीआई अफसर आरएम सिंह ने आत्महत्या के लिए उकसाने का मामला जोड़ने की सिफारिश लिखी, उसे सीबीआई के डायरेक्टर और सीबीआई के कानूनी सलाहकार ने हटवा दिया। बताएं प्रशासन और न्याय तंत्र का कोई ?सा कमरा बचा है, जो बेदाग हो। एक आईपीएस अफसर पूरे तंत्र को अपनी अंगुलियों पर नचा रहा था। स्कूल, अस्पताल, पुलिस थाना, सीबीआई, मुख्यमंत्री, न्यायपालिका सबको चौराहे पर लाकर खड़ा कर दिया है एक आईपीएस अफसर ने।

शिक्षा का मंदिर स्कूल, न्याय का मंदिर अदालत, इंसाफ दिलाने की जिम्मेदार सीबीआई और इन सब पर निगाह रखने वाली चुनी हुई सरकार- सब चरमरा कर गिर गए हैं। क्या केंद्र की तत्कालीन चंद्रशेखर से लेकर अटलबिहारी वाजपेयी तक की सरकारों के गृहमंत्री कटघरे में खड़े नहीं होना चाहिए, जिनके तहत देशभर के आईपीएस अफसर काम करते हैं। क्या चौटाला, बंशीलाल, भजनलाल कटघरे में नहीं खड़े होना चाहिए, जो इतने बड़े अपराध पर आंखें मूंदे हुए थे। किसी एक मुख्यमंत्री ने राठौर को निलंबित करने की जहमत नहीं उठाई। इसीलिए राठौर छह महीने मात्र की सजा सुनकर मुस्कराता हुआ कोर्ट से बाहर निकला, क्योंकि उसे अब भी उम्मीद है कि जैसे हाईकोर्ट और सुप्रीम कोर्ट ने पहले उसकी मदद की, इस बार भी करेगी।

रूचिका से ज्यादा अलग नहीं है राजस्थान की आदिवासी महिला का मामला। जिसका राजस्थान के डीआईजी मधुकर टंडन ने तेरह साल पहले बलात्कार किया था। फर्क सिर्फ इतना है कि वह तब से भगौड़ा है, लेकिन पुलिस अब भी उसकी मददगार बनी हुई है। वह कानून की नजर से लगातार बचा रही है अपने फरार डीआईजी को। डीआईजी बार-बार उस महिला और उसके पति को उठाकर पुलिस थाने ले जाता है और समझौता करने का दबाव बनाता है।

पुलिस तंत्र, प्रशासनिक तंत्र और लोकशाही में आमूलचूल परिवर्तन ही देश को लोकतंत्र की सही पटरी पर ला सकता है। पुलिस को हर शिकायत की एफआईआर दर्ज करने की हिदायत ही काफी नहीं। पुलिस से टॉर्चर करने के सारे अधिकार वापस लेने होंगे। पुलिस रिमांड का कानूनी प्रावधान खत्म करना होगा। पुलिस न्यायिक हिरासत में ही पूछताछ करे। प्रशासन में बैठे भ्रष्ट और बेईमान अफसरों को फैसले करने वाले पदों से हटाना होगा। चुनाव लड़ने के नियम ज्यादा कड़े करने होंगे। जिन नेताओं के खिलाफ तीन चार्जशीट पर अदालत संज्ञान ले चुकी हो, उन्हें चुनाव लड़ने या कोई भी राजनीतिक पद ग्रहण करने से वंचित करना होगा। ये सब कदम भी काफी नहीं हैं, लोकतंत्र को पटरी पर लाकर देश में सुशासन की स्थापना करने के लिए। जैसी जागृति जेसिका लाल, नीतिश कटारा, प्रियदर्शनी मट्टू के अदालती फैसलों के बाद देश की जनता ने दिखाई है, ?सी जागृति हमेशा कायम रहे, तभी कानून के रक्षकों को भक्षक बनने से रोका जा सकेगा।

[लेखक राजनीतिक विश्लेषक हैं]

स्वस्थ त्वचाऔरसुंदर बाल

त्वचा चाहे जैसी हो उसकी उचित देखभाल जरूरी होती है। त्वचा मुख्यतया पांच प्रकार की होती है- सामान्य, रूखी, तैलीय, मिश्रित और संवेदनशील त्वचा। त्वचा की देखभाल त्वचा इसके प्रकार पर ही निर्भर करती है। जानिए कि आप अपनी त्वचा की किस्म के अनुरूप उसको कैसे स्वस्थ और आकर्षक बनाए रखें।

सामान्य त्वचा

अगर आपकी त्वचा सामान्य है तो आप बहुत भाग्यशाली हैं, क्योंकि ऐसी त्वचा कम ही पाई जाती है। ऐसी त्वचा पर आकर्षण, ताजगी और लालिमा होती है। उसमें ब्लैकहेड्स या खुले रोम छिद्र नहीं पाए जाते। यह साफ-सुथरे बंद रोमछिद्र वाली होती है। यह त्वचा न तो ज्यादा तैलीय होती है और न ही रूखी। न ही इस पर तेल जैसा कुछ चमकता है।

सखी की सलाह

1. दो स्ट्रॉबेरी का गूदा निकालकर अच्छी तरह से मैश कर लें। फिर एक पका केला छील कर मैश कर लें। दोनों को एक साथ मिलाकर चेहरे पर लगाएं। दस मिनट बाद चेहरे को गीला करके हलके हाथों से मलें फिर धीरे-धीरे धोएं।

2. अधिक पके हुए पपीते का दो टेबल स्पून मैश किया हुआ गूदा लें। उसमें छिला व मसला हुआ आधा सेब और थोडा आमंड ऑयल मिलाएं। चेहरे पर लगाएं और दस मिनट के लिए छोड दें। हलके गुनगुने पानी से चेहरा साफ करें।

तैलीय त्वचा

तैलीय त्वचा चिकनी और चमकदार लगती है। इस पर मुंहासे और ब्लैक हेड्स जल्दी निकलते हैं। ऐसी त्वचा पर खुले और बडे रोमछिद्र आसानी से नजर आ जाते हैं। ऐसी त्वचा पर मेकअप अधिक देर तक नहीं टिकता।

सखी की सलाह

अपने चेहरे व गर्दन को दिन में तीन बार साफ करें। सिबेसिअस ग्लैंड से निकलने वाले तेल को नियंत्रित करने के लिए चेहरे को दिन में तीन बार साफ करें। नाक, गाल व माथे पर विशेष ध्यान दें क्योंकि इन जगहों पर चिकनापन ज्यादा नजर आता है।

3. एक टेबल स्पून मुलतानी मिट्टी, एक टेबल स्पून ओटमील व आधा टी स्पून आमंड पेस्ट मिला कर पेस्ट बना लें। यह तैलीय त्वचा को साफ करने के लिए बेहतरीन क्लींजर है।

4. एक अंडे की सफेदी को फेंट कर आंखों

का हिस्सा छोडकर चेहरे पर लगाएं। दस मिनट बाद चेहरा ठंडे पानी से धो लें। यह मास्क त्वचा में खिंचाव लाता है और त्वचा के खुले छिद्रों को बंद करता है।

5. दोटेबल स्पून दही में एक टेबल स्पून ओटमील, हलकी फेंटी हुई एक अंडे की सफेदी और एक टी स्पून नीबू का रस मिलाकर चेहरे पर लगाएं। दस मिनट बाद पानी से अच्छी तरह धो लें। यह अतिरिक्त तेल को कम करता है। दाग-धब्बों को दूर करता है और पीएच लेवल को पुन-संतुलित करता है।

रूखी त्वचा

रूखी त्वचा पर खिंचाव महसूस होता है। यह त्वचा पतली होती है, जिसके छिद्र हलके नजर आते हैं। इस त्वचा में जलन, खुजलाहट और पपडियां उतरने की आशंका ज्यादा रहती है। मौसम का प्रभाव भी सबसे पहले इसी त्वचा पर पडता है। ऐसी त्वचा की उचित देखभाल न की जाए तो झुर्रियां जल्दी ही नजर आने लगती हैं।

सखी की सलाह

ऐसी त्वचा को हाइड्रेशन और सुरक्षा प्रदान करने के लिए एवोकाडो को मसल कर उसमें एक चम्मच शहद और एक चम्मच फेंटी हुई क्रीम मिलाएं या घर पर बना दही मिलाएं। पैक को चेहरे और गर्दन पर लगाकर दस मिनट के लिए छोड दें, फिर ताजे पानी से चेहरा साफ कर लें।

6. एवोकाडो में त्वचा को पोषण प्रदान करने के लिए जरूरी वसा, विटमिन ए, बी, डी और थोडा विटामिन ई होता है। अगर आप इस मास्क में शहद मिलाती हैं तो यह त्वचा की नमी को बरकरार रखने का काम करता है।

7. दो टेबल स्पून दूध और आधा टेबल स्पून शहद में एक अंडे की जर्दी मिलाएं। इसे आंखों का हिस्सा छोडकर चेहरे पर लगाएं। पंद्रह मिनट बाद गुनगुने पानी से चेहरा साफ कर लें। इसके अलावा अपने आहार में अंडा, सेब, क्रीम, खीरा, दूध और शहद शामिल करें।

8. दो टेबल स्पून आडू को मसल कर उसमें दो टी स्पून शहद और एक टी स्पून आमंड ऑयल अच्छी तरह से मिलाएं। इस पेस्ट को चेहरे पर लगाकर दस-पंद्रह मिनट के लिए छोड दें। फिर गुनगुने पानी से चेहरा साफ कर लें। आडू में विटमिन ए प्रचुर मात्रा में होता है, जो रूखी त्वचा को पोषण प्रदान करने के साथ-साथ कोमल और आकर्षक बनाता है।

9. एक पका केला छीलकर मसल लें। फिर चेहरे पर लगाकर दस मिनट के लिए छोड दें। चेहरा धोने से पहले ठंडा पानी हाथ में लेकर चेहरे को हलके हाथों से मलें फिर धीरे-धीरे धोएं।
केले में अमीनो एसिड, विटमिन और मिनरल जैसे- आयरन, मैग्नीशियम होता है, जो त्वचा को पोषण देने के साथ-साथ उसे कोमल बनाते हैं।

स्वस्थ और सुंदर बालों के लिए

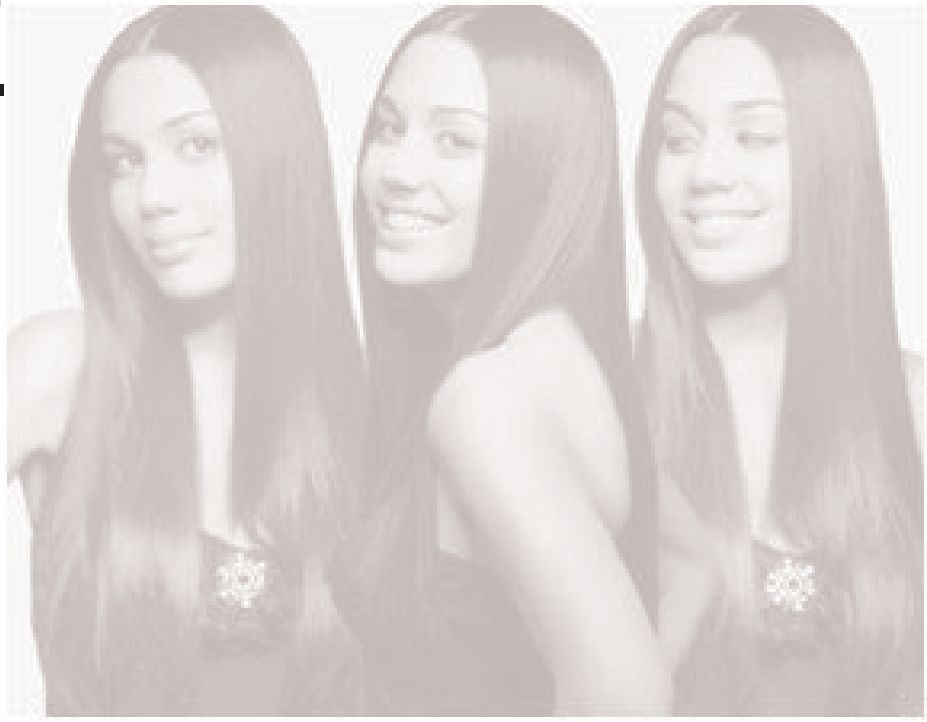

बारिश के दिनों में अत्यधिक नमी के कारण बालों का स्वास्थ्य सबसे अधिक प्रभावित होता है। खास तौर पर इस मौसम में तैलीय बाल वालों को काफी दिक्कतें होती हैं। पसीने के कारण धूल-मिट्टी प्रदूषण सिर की त्वचा पर जम जाते हैं। इससे उनका स्टाइल भी प्रभावित होता है। ऐसे बाल शैंपू के बाद चिपचिपे, चिपके हुए और बेजान से नजर आते हैं। ऐसे मौसम में बाल रफ हो जाते हैं और उन्हें अतिरिक्त देखभाल की आवश्यकता होती है। आप उनकी देखभाल कैसे करें बता रही हैं, सौंदर्य विशेषज्ञा शहनाज हुसैन।

तैलीय बाल

ऐसे बालों को रोज धोना जरूरी है। इसके लिए माइल्ड हर्बल शैंपू का प्रयोग करें। इस बात का विशेष ध्यान रखें कि सिर की त्वचा पर जरा भी शैंपू न रह जाए। शॉर्ट और लेयर्ड हेयर स्टाइल वालों के लिए रोज शैंपू इसलिए जरूरी है ताकि बाल घने नजर आएं और उनका स्टाइल भी बरकरार रहे।

बेजान बाल

स्विमिंग पूल का क्लोरीन युक्त पानी या समुद्र का नमकीन पानी बालों को रूखा और बेजान बना देता है। इसलिए स्विमिंग से पहले और तुरंत बाद में बालों को भिगो लेने से उन्हें हानि नहीं पहुंचती है। बेहतर होगा कि स्विमिंग करने के बाद बालों को धो लें। बालों में चमक लाने के लिए हफ्ते में एक बार गुडहल के फूल की पत्तियों को पीस कर लगाएं। फिर धो लें। या फिर शैंपू करने के बाद एक मग पानी में थोडा सा सिरका या बियर डालकर उससे बाल धोएं।

रूखे बाल

अगर आपके बाल अत्यधिक रूखे हैं तो रिच कंडीशनर के प्रयोग से बचें। इसके बजाय हर्बल हेयर रिंस का प्रयोग करें। चाय की पत्ती के पानी या नीबू पानी से धोना बेहतर होता है। चाय की पत्ती को पर्याप्त पानी में अच्छी तरह उबाल कर छान लें। ठंडा करके शैंपू करने के बाद बालों को उस पानी से धोएं। आप चाहें तो चाय की पत्ती केपानी में कुछ बूंद नीबू का रस भी मिला सकती हैं।

10. इसके अलावा शैंपू करने से पहले बालों व सिर की त्वचा पर अंडे की सफेदी लगाकर आधे घंटे के लिए छोड दें। यह बालों को बॉडी देने का काम करेगा। यह एक बेहतरीन क्लींजर भी है और अतिरिक्त तैलीयता को भी कम करता है।

हिना भी एक अच्छा कंडीशनर होता है। यह हर प्रकार के बालों के लिए अच्छा होता है। मेहंदी में चार चम्मच नीबू का रस और कॉफी, दो अंडे और पर्याप्त चाय का पानी मिलाकर पेस्ट बनाएं और इस हफ्ते में एक बार बालों में लगाएं। अगर आप अंडा नहीं मिलाना चाहती हैं तो उसकी जगह चाय की पत्ती का पानी पर्याप्त है।

सामान्य बाल

एक-दो दिन में बालों को एक्स्ट्रा प्रोटीन एंड केयर शैंपू से धोएं। ऐसा हेयर स्टाइल रखें जिसमें बाल चेहरे पर अधिक न गिरें। पीछे की तरफ बालों को हलका सा पिनअप जरूर करें। ताकि गर्दन पर बालों का गुच्छा न जमा हो। इससे पसीना अधिक निकलने से बाल चिपचिपे, फ्लैट और बेजान हो जाते हैं। पर्याप्त पानी, जूस और तरल पदार्थ लेना भी न भूलें।

इला श्रीवास्तव

एक दिन का मेहमान

–निर्मल वर्मा

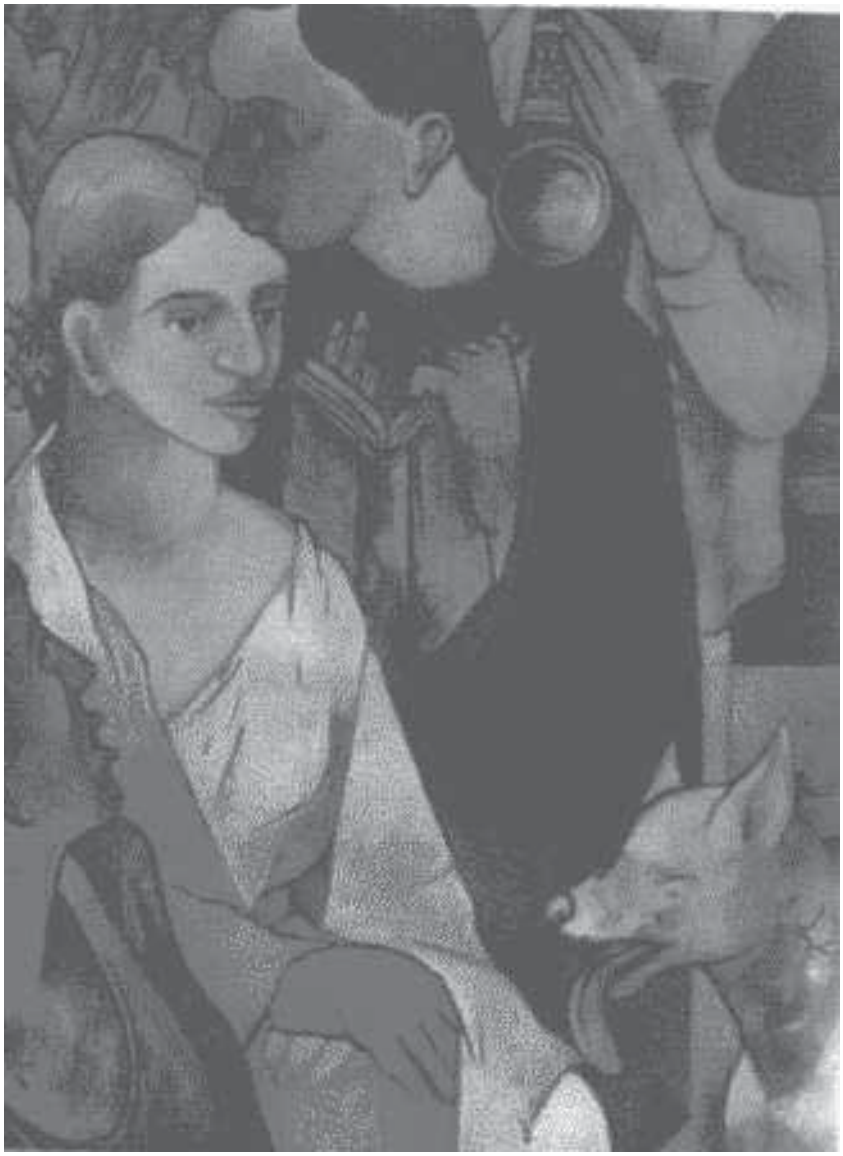

उसने अपना सूटकेस दरवाजे के आगे रख दिया। घंटी का बटन दबाया और प्रतीक्षा करने लगा। मकान चुप था। कोई हलचल नहीं – एक क्षण के लिये भ्रम हुआ कि घर में कोई नहीं है और वह खाली मकान के आगे खडा है। उसने रुमाल निकाल कर पसीना पौंछा, अपना एयर बैग सूटकेस पर रख दिया। दोबारा बटन दबाया और दरवाजे से कान सटा कर सुनने लगा, बरामदे के पीछे कोई खुली खिडक़ी हवा में हिचकोले खा रही थी।

वह पीछे हटकर ऊपर देखने लगा। वह दुमंजिला मकान था – लेन के अन्य मकानों की तरह – काली छत, अंग्रेजी वी की शक्ल में दोनों तरफ से ढलुआं और बीच में सफेद पत्थर की दीवार, जिसके माथे पर मकान का नम्बर एक काली बिन्दी सा टिमक रहा था। ऊपर की खिडक़ियां बन्द थीं और पर्दे गिरे थे। कहाँ जा सकते हैं इस वक्त?

वह मकान के पिछवाडे ग़या – वही लॉन, फेन्स और झाडियां थीं जो उसने दो साल पहले देखी थीं। बीच में विलो अपनी टहनियां झुकाये एक काले बूढे रीछ की तरह ऊंघ रहा था। लेकिन गैराज खुला और खाली पडा था; वे कहीं कार लेकर गये थे, संभव है उन्होंने सारी सुबह उसकी प्रतीक्षा की हो और अब किसी काम से बाहर चले गये हों। लेकिन दरवाजे पर उसके लिये एक चिट तो छोड ही सकते थे!

वह दोबारा सामने के दरवाजे पर लौट आया। अगस्त की चुनचुनाती धूप उसकी आंखों पर पड रही थी। सारा शरीर चू रहा था। वह बरामदे में ही अपने सूटकेस पर बैठ गया।

अचानक उसे लगा, सडक़ के पार मकानों की खिडक़ियों से कुछ चेहरे बाहर झांक रहे हैं, उसे देख रहे हैं। उसने सुन था, अंग्रेज लोग दूसरों की निजी चिन्ताओं में दखल नहीं देते, लेकिन वह मकान के बाहर बरामदे में बैठा था, जहां प्राइवेसी का कोई मतलब नहीं था; इसलिये वे निन्संकोच, नंगी उनमुक्तता से उसे घूर रहे थे। लेकिन शायद उसके कौतुहल का एक दूसरा कारम था; उस छोटे, अंग्रेजी कस्बाती शहर में लगभग सब एक दूसरे को पहचानते थे और वह न केवल अपनी शक्ल सूरत में बल्कि झलते झालते हिन्दुस्तानी सूट में काफी अद्भुत प्राणी दिखाई दे रहा होगा। उसकी तुडी मुडी वेशभूषा और गर्द और पसीने में लथपथ चेहरे से कोई यह अनुमान भी नहीं लगा सकता कि अभी तीन दिन पहले फ्रेंकफर्ट की कानफ्रेन्स में उसने पेपर पढा था। मैं एक लुटा – पिटा एशियन इमीग्रेन्ट दिखाई दे रहा होऊंगा।% उसने सोचा और अचानक खडा हो गया – मानो खडा होकर प्रतीक्षा करना ज्यादा आसान हो। इस बार बिना सोचे समझे उसने दरवाजा जोर से खटखटाया और तत्काल हकबका कर पीछे हट गया – हाथ लगते ही दरवाजा

खट – से खुल गया। जीने पर पैरों की आवाज सुनाई दी – और दूसरे क्षण वह चौखट पर उसके सामने खडी थी।

वह भागते हुए सीढियां नीचे उतर कर आई थी, और उससे चिपट गई थी। इससे पहले वह पूछता, क्या तुम भीतर थीं? उसने अपने धूल भरे लस्तम पस्तम हाथों से उसके दुबले कन्धों को पकड लिया और लडक़ी का सिर नीचे झुक आया और उसने अपना मुंह उसके बालों पर रख दिया।

पडोसियों ने एक एक करके अपनी खिडक़ियां बन्द कर दीं।

लडक़ी ने धीरे – से उसे अपने से अलग कर दिया, बाहर कब से खडे थे?

पिछले दो साल से।

वाह! लडक़ी हंसने लगी। उसे अपने बाप की ऐसी ही बातें बौडम जान पडती थीं।

मैं ने दो बार घंटी बजाई – तुम लोग कहां थे?

घंटी खराब है, इसलिये मैं ने दरवाजा खुला छोड दिया था।

तुम्हें मुझे फोन पर बताना चाहिये था – मैं पिछले एक घंटे से आगे पीछे दौड रहा था।

मैं तुम्हें बताने वाली थी, लेकिन बीच में लाइन कट गई। तुमने और पैसे क्यों नहीं डाले?

मेरे पास सिर्फ दस पैसे थे वह औरत काफी चुडैल थी! कौन औरत? लडक़ी ने उसका बैग उठाया।

वही जिसने हमें बीच में काट दिया।

आदमी अपना सूटकेस बीच ड्राइंगरूम में घसीट लाया। लडक़ी उत्सुकता से बैग के भीतर झांक रही थी– सिगरेट के पैकेट, स्कॉच की लम्बी बोतल, चॉकलेट के बण्डल – वे सारी चीजें जो उसने इतनी हडबडी में फ्रेंकफर्ट के एयरपोर्ट पर डयूटी फ्री शॉप से खरीदी थीं, अब बैग से ऊपर झांक रही थी

तुमने अपने बाल कटवा लिये? आदमी ने पहली बार चैन से लडक़ी का चेहरा देखा।

हाँसिर्फ छुट्टियों के लिये। कैसे लगते हैं?

अगर तुम मेरी बेटी नहीं होतीं, तो मैं समझता कोई लफंगा घर में घुस आया है।

ओह पापा! लडक़ी ने हंसते हुए बैग से चॉकलेट निकाली, रैपर खोला, फिर उसके आगे बढा दी।

स्विस चॉकलेट, उसने उसे हवा में डुलाते हुए कहा।

मेरे लिये एक गिलास पानी ला सकती हो?

ठहरो, मैं चाय बनाती हूँ।

चाय बाद में वह अपने कोट की अन्दरूनी जेब में कुछ टटोलने लगा– नोटबुक, वॉलेट, पासपोर्ट – सब चीजें बाहर निकल आईं अंत में उसे टेबलेट्स की डिब्बी मिली, जिसे वह ढूंढ रहा था।

लडक़ी पानी का गिलास लेकर आई तो उससे पूछा, कैसी दवाई है?।

जर्मन,उसने कहा, बहुत असर करती है। उसने टेबलेट पानी के साथ निगल ली, फिर सोफे पर बैठ गया। सबकुछ वैसा ही था, जैसा उसने सोचा था। वही कमरा, शीशे का दरवाजा, खुले हुए परदों के बीच वही चौकोर हरे रुमाल जैसा लॉन, टी वी के स्क्रीन पर उडती पक्षियों की छाया, जो बाहर उडते थे और भीतर होने का भ्रम देते थे।

वह किचन की देहरी पर आया। गैस के चूल्हों के पीछे लडक़ी की पीठ दिखाई दे रही थी। कॉर्डराय की काली जीन्स और सफेद कमीज, जिसकी मुडी स्लीव्स बांहों की कुहनियों पर झूल रही थीं। वह बहुत हल्की छुई मुई सी दिखाई दे रही थी।

मामा कहाँ है? उसने पूछा। शायद उसकी आवाज ईतनी धीमी थी कि लडक़ी ने उसे नहीं सुन, किन्तु उसे लगा, जैसे लडक़ी की गर्दन कुछ ऊपर उठी थी। मामा क्या ऊपर हैं? उसने दोबारा कहा और लडक़ी वैसे ही निश्चल खडी रही और तब उसे लगा, उसने पहली बार भी प्रश्न को सुन लिया था। क्या बाहर गई हैं? उसने पूछा। लडक़ी ने बहुत धीरे, धुंधले ढंग से सिर हिलाया, जिसका मतलब कुछ भी हो सकता था।

%% तुम पापा, कुछ मेरी मदद करोगे?

वह लपक कर किचन में चला गया, बताओ, क्या काम है?

तुम चाय की केतली लेकर भीतर जाओ, मैं अभी आती हूँ।

बस !उसने निराश स्वर में कहा।

अच्छा, प्याले और प्लेटें भी लेते जाओ।

वह सब चीजें लेकर भीतर कमरे में चला आया। वह दोबारा किचन में जाना चाहता था, लेकिन लडक़ी के डर से वह वहीं सोफा पर बैठा रहा। किचन से कुछ तलने की खुश्बू आ रही थी। लडक़ी उसके लिये कुछ बना रही थी – और वह उसकी कोई भी मदद नहीं कर पा रहा था। एक बार इच्छा हुई, किचन में जाकर मना कर आये कि वह कुछ नहीं खायेगा। किन्तु दूसरे क्षण भूख ने उसे पकड लिया। सुबह से उसने कुछ नहीं खाया था। यूस्टन स्टेशन के कैफेटेरिया में इतनी लम्बी क्यू लगी थी कि वह टिकट लेकर सीधा ट्रेन में घुस गया था। सोचा था वह डायनिंग कार में कुछ पेट में डाल लेगा, किन्तु वह दुपहर से पहले नहीं खुलती थी। सच पूछा जाय तो उसने अंतिम खाना कल शाम फ्रेंकफर्ट के एयरपोर्ट में खाया था और जब रात को लन्दन पहुंचा था तो, अपने होटल के बार में पीता रहा था। तीसरे गिलास के बाद उसने जेब से नोटबुक निकाली, नम्बर देखा और बार के टेलीफोन बूथ में जाकर फोन मिलाया था पहली बार में पता नहीं चला, उसकी पत्नी की आवाज है या बच्ची की। उसकी पत्नी ने फोन उठाया होगा, क्योंकि कुछ देर तक फोन का सन्नाटा उसके कान में झनझनाता रहा, और वह फोन नीचे रखना चाहता था, किन्तु उसी समय उसे बच्ची का स्वर सुनाई दिया; वह आधी नींद में थी। उसे कुछ देर तक पता ही नहीं चला कि वह इंडिया से बोल रहा है या फ्रेंकफर्ट से या लन्दन सेवह उसे अपनी स्थिति समझा ही रहा था कि तीन मिनट खत्म हो गये और उसके पास इतनी चेंज भी नहीं थी कि वह लाइन को कटने से बचा सके, तसल्ली सिर्फ इतनी थी कि वह नींद, घबराहट और नशे

के बीच यह बताने में सफल हो गया कि वह कल उनके शहर पहुंच रहा है कल यानि आज वे अच्छे क्षण थे। बाहर इंग्लैंड की पीली और मुलायम धूप फैली थी। वह घर के भीतर था। उसके भीतर गरमाई की लहरें उठने लगी थीं। हवाई अड्डों की भाग दौड, होटलों की हील हुज्जत, ट्रेन टैक्सियों की हडबडाहट – वह सबसे परे हो गया था। वह घर के भीतर था; उसका अपना घर न सही, फिर भी एक घर – कुर्सियाँ, परदे, सोफा टी वी। वह अरसे से इन चीजों के बीच रहा था और हर चीज के इतिहास को जानता था। हर दो तीन साल बाद जब वह आता था, तो सोचता था – बच्ची कितनी बडी हो गयी होगी और पत्नी? वह कितनी बदल गई होगी! लेकिन ये चीजें उस दिन से एक जगह ठहरीं थीं, जिस दिन उसने घर छोडा था; वे उसके साथ चली जाती थीं, उसके साथ लौट आती थीं।

पापा तुमने चाय नहीं डाली? वह किचन से दो प्लेटें लेकर आई, एक में टोस्ट और मक्खन थे, दूसरे में तले हुए सॉसेज।

मैं तुम्हारा इंतजार कर रहा था।

चाय डालो, नहीं तो बिलकुल ठण्डी हो जायेगी।

वह उसके साथ सोफा पर बैठ गई। टी वी खोल दूं देखोगे?

अभी नहींसुनो तुम्हें मेरे स्टैम्प्स मिल गये थे?

हाँ पापाथैंक्स! वह टोस्ट्स पर मक्खन लगा रही थी।

लेकिन तुमने चिट्ठी एक भी नहीं लिखी!

मैं ने एक लिखी थी, लेकिन जब तुम्हारा टेलीग्राम आया, तो मैं ने सोचा अब तुम आ रहे हो तो चिट्ठी भेजने की क्या जरूरत?

%%तुम सचमुच गागा हो।

लडक़ी ने उसकी तरफ देखा और हंसने लगी। यह उसका चिढाऊ नाम था, जो बाप ने बरसों पहले उसे दिया था, जब वह उसके साथ घर में रहता था, वह बहुत छोटी थी और उसने हिन्दुस्तान का नाम भी नहीं सुना था।

बच्ची की हंसी का फायदा उठाते हुए वह उसके पास झुक आया जैसे कोई चंचल चिडिया हो, जिसे केवल सुरक्षा के भ्रामक क्षण में ही पकडा जा सकता है, ममी कब लौटेंगी?

प्रश्न इतना अचानक था कि लडक़ी झूठ नहीं बोल सकी, वह ऊपर कमरे में हैं।

ऊपर? लेकिन तुमने तो कहा था।

किरच किरच किरच वह चाकू से जले हुए टोस्ट को कुरेद रही थी मगर उसके साथ साथ वह उसके प्रश्न को भी काट डालना चाहती हो। हँसी अब भी थी, लेकिन अब वह बर्फ में जमे कीडे क़ी तरह उसके होंठों पर चिपकी थी।

क्या उन्हें मालूम है कि मैं यहाँ हूँ? लडक़ी ने टोस्ट पर मक्खन लगाया, फिर जैम – फिर उसके आगे प्लेट रख दी।

हाँ मालूम है। उसने कहा।

क्या वह नीचे आकर हमारे साथ चाय नहीं पिए/गी?

लडक़ी दूसरी प्लेट पर सॉसेज सजाने लगी – फिर उसे कुछ याद आया वह रसोई में गई और अपने साथ मस्टर्ड और केचप की बोतलें ले आई।

मैं ऊपर जाकर पूछता हूँ। उसने लडक़ी की तरफ देखा, जैसे उससे अपनी कार्यवाही का समर्थन पाना चाहता हो।जब वह कुछ नहीं बोली, तो वह जीने की तरफ जाने लगा।

प्लीज पापा।

उसके पांव ठिठक गये।

आप फिर उनसे लडना चाहते हैं? लडक़ी ने कुछ गुस्से में उसे देखा।

लडना! वह शर्म से भीगा हुआ हँसने लगा, मैं यहाँ दो हजार मील उनसे लडने आया हूँ?

फिर आप मेरे पास बैठिये। लडक़ी का स्वर भरा हुआ था। उसकी भूख उड ग़यी थी, लेकिन लडक़ी की आंखें उस पर थीं। वह उसे देख रही थी, और कुछ सोच रही थी, कभी कभी टोस्ट का एक टुकडा मुंह में डाल लेती और फिर चाय पीने लगती। फिर उसकी ओर देखती चुपचाप मुस्कुराने लगती, उसे दिलासा सी देती, सब कुछ ठीक है, तुम्हारी जिम्मेदारी मुझ पर है और जब तक मैं हूँ डरने की कोई बात नहीं है।

डर नहीं था। टेबलेट का असर रहा होगा या यात्रा की थकान – वह कुछ देर के लिये लडक़ी की निगाहों से हटना चाहता था। वह अपने को हटाना चाहता था। मैं अभी आता हूँ। उसने कहा। लडक़ी ने सशंकित आंखों से उसे देखा, क्या बाथरूम जायेंगे? वह उसके साथ साथ गुसलखाने तक चली आई और जब उसने दरवाजा बन्द कर लिया, तो भी उसे लगता रहा, वह दरवाजे के पीछे खडी है।

उसने बेसिनी में अपना मुंह डाल लिया और नलका खोल दिया। पानी झर झर उसके चेहरे पर बहने लगा – और वह सिसकने – सा लगा, आधे बने हुए शब्द उसकी छाती के खोखल से बाहर निकलने लगे, जैसे भीतर जमी काई उलट रहा हो, उलटी, जो सीधी दिल से बाहर आती है – वह टेबलेट जो कुछ देर पहले खाई थी, अब पीले चूरे सी बेसिनी के संगमरमर पर तैर रही थी। फिर उसने नल बन्द कर दिया और रूमाल निकाल कर मुंह पौंछा। बाथरूम की खूंटी पर स्त्री के मैले कपडे टंगे थे – प्लास्टिक की एक चौडी बाल्टी में अंडरवियर और ब्रेसियर साबुन में डूबे थेखिडक़ी खुली थी और बाग का पिछवाडा धूप में चमक रहा था। कहीं किसी दूसरे बाग से घास काटने की उनींदी सी घुर्र घुर्र पास आ रही थी।

वह जल्दी से बाथरूम का दरवाजा बन्द कर कमरे में चला आया। सारे घर में सन्नाटा था। वह किचन में आया, तो लडक़ी दिखाई नहीं दी। वह ड्राईंग रूम में लौटा तो वह भी खाली पडा था। उसे सन्देह हुआ कि वह ऊपर वाले कमरे में अपनी मां के पास बैठी है। एक अजीब आतंक ने उसे पकड लिया। घर जितना शांत था, उतना ही खतरे से अटा जान पडा। वह कोने में गया, जहाँ उसका सूटकेस रखा था, वह जल्दी जल्दी उसे

खोलने लगा। उसने अपने कान्फ्रेस के के नोट्स और कागज अलग किये, उनके नीचे से वह सारा सामान निकालने लगा, जो वह दिल्ली से अपने साथ लाया था – एम्पोरियम का राजस्थानी लहंगा(लडक़ी के लिये), ताम्बे और पीतल के ट्रिंकेट्स, जो उसने जनपथ पर तिब्बती लामा हिप्पियों से खरीदे थे, पश्मीने की कश्मीरी शॉल(बच्ची की मां के लिये), एक लाल गुजराती जरीदार स्लीपर जिसे बच्ची और मां दोनों पहन सकते थे, हैण्डलूम के बेडकवर, हिन्दुस्तानी टिकटों का अल्बम – और एक बहुत बडी सचित्र किताब, बनारस द एटर्नल सिटी। फर्श पर धीरे धीरे एक छोटा सा हिन्दुस्तान जमा हो गया था जिसे वह हर बार यूरोप आते समय अपने साथ ढो लाता था।

सहसा उसके हाथ ठिठक गये। वह कुछ देर तक चीजों के ढेर को देखता रहा। कमरे के फर्श पर बिखरी हुई वे बिलकुल अनाथ और दयनीय दिखाई दे रही थीं। एक पागल इच्छा हुई कि वह उन्हें कमरे में जैसे का तैसा छोडक़र भाग खडा हो। किसी को पता भी नहीं चलेगा, वह कहाँ चला गया? लडक़ी थोडा बहुत जरूर हैरान होगी, किन्तु बरसों वह उससे ऐसे ही अचानक मिलती रही थी और बिना कारण बिछडती रही थी, यू आर कमिंग एण्ड गोईंग मैन, वह उससे कहा करती थी, पहले विषाद में और बाद में कुछ कुछ हंसी में उसे कमरे में न बैठा देखकर लडक़ी को ज्यादा सदमा नहीं पहुंचेगा। वह ऊपर जायेगी और मां से कहेगी, अब तुम नीचे आ सकती हो; वह चले गये।

फिर वे दोनों एक – साथ नीचे आयेंगी, और उन्हें राहत मिलेगी कि अब उन दोनों के अलावा घर में कोई नहीं है।

पापा। वह चौंक गया, जैसे रंगे हाथों पकडा गया हो। खिसियानी – सी मुस्कुराहट में लडक़ी को देखा– वह कमरे की चौखट पर खडी थी और खुले हुए सूटकेस को ऐसे देख रही थी, जैसे वह कोई जादू की पिटारी हो, जिसने अपने पेट से अचानक रंग बिरंगी चीजों को उगल दिया हो, लेकिन उसकी आंखों में कोई खुशी नहीं थी, एक शर्म – सी थी, जब बच्चे अपने बडों को कोई ट्रिक करते हुए देखते हैं जिसका भेद उन्हें पहले से मालूम होता है; वे अपने संकोच को छिपाने के लिये कुछ ज्यादा ही उत्सुक हो जाते हैं।

इतनी चीजें? वह आदमी के सामने की कुर्सी पर बैठ गई, कैसे लाने दी? सुना है आजकल कस्टमवाले बहुत तंग करते हैं।

नहीं, इस बार उन्होंने कुछ नहीं किया, आदमी ने उत्साह में आकर कहा, शायद इसलिये कि मैं सीधे फ्रेंकफर्ट से आ रहा था। उन्हें सिर्फ एक चीज पर शक हुआ था।उसने मुस्कुराते हुए लडक़ी की ओर देखा।

किस चीज पर? लडक़ी ने इस बार सच्ची उत्सुकता से पूछा।

उसने अपने बैग से दालबीजी का डिब्बा निकाला और उसे खोलकर मेज पर रख दिया। लडक़ी ने झिझकते हुए दो चार दाने उठाये और उन्हें सूंघने लगी, क्या है यह? उसने जिज्ञासा से आदमी को देखा।

वे भी इसी तरह सूंघ रहे थे, वह हंसने लगा, उन्हें डर था कि कहीं इसमें चरस – गांजा तो नहीं है।

हैश? लडक़ी की आंखें फैल गईं, क्या इसमें सचमुच हैश मिली है?

खाकर देखो।

लडक़ी ने कुछ दालमोठ मुंह में डाल ली और उन्हें चबाने लगी, फिर हलाट – सी होकर सी सी करने लगी।

मिर्चें होंगी – थूक दो। आदमी ने कुछ घबरा कर कहा।

किन्तु लडक़ी ने उन्हें निगल लिया और छलछलाई आंखों से बाप को देखने लगी। तुम भी पागल हो सब निगल बैठीं। आदमी ने जल्दी से उसे पानी का गिलास दिया, जो वह उसके लिये लाई थी।

मुझे पसन्द है। लडक़ी ने जल्दी से पानी पिया और अपनी कमीज क़ी मुडी हुई बांहों से आंखें पौंछने लगी। फिर मुस्कुराते हुए आदमी की ओर देखा, आई लव इट। वह कई बातें सिर्फ आदमी का मन रखने के लिये करती थी। उनके बीच बहुत कम मुहलत रहती थी और वह उसके निकट पहुंचने के लिये ऐसे शार्टकट लेती थी, जिसे दूसरे बच्चे महीनों में पार करते हैं।

क्या उन्होंने भी इसे चखकर देखा था? लडक़ी ने पूछा।

नहीं उनमें इतनी हिम्मत कहाँ थी। उन्होंने सिर्फ मेरा सूटकेस खोला, मेरे कागजों को उलटा पुलटा और जब उन्हें पता चला कि मैं कॉन्फ्रेंस से आ रहा हूँ तो उन्होंने कहा, मिस्टर यू मे गो।

क्या कहा उन्होंने? लडक़ी हंस रही थी।

उन्होंने कहा, मिस्टर यू मे गो लाइक एन इण्डियन क्रो! आदमी ने भेदभरी निगाहों से उसे देखा। क्या है यह?

लडक़ी हंसती रही – जब वह बहुत छोटी थी और आदमी के साथ पार्क में घूमने जाती थी, तो वे यह सिरफिरा खेल खेलते थे। वह पेड क़ी ओर देखकर पूछता था, ओ डियर, इज देयर एनीथिंग टू सी? और लडक़ी चारों तरफ देखकर कहती थी, यस डियर, देयर इज ए क्रो ओवर द ट्री। आदमी उसे विस्मय से देखता। क्या है यह? और वह विजयोल्लास में कहती – पोयम!

ए पोयम! बढती हुई उम्र में छूटते बचपन की छाया सरक आई – पार्क की हवा, पेड, हंसी। वह बाप की उंगली पकड क़र सहसा एक ऐसी जगह गई, जिसे वह मुद्दत पहले छोड चुकी थी, जो कभी कभार रात को सोते हुए सपनो में दिखाई दे जाती थी

मैं तुम्हारो लिये कुछ इण्डियन सिक्के लाया था तुमने पिछली बार कहा था न!

दिखाओ, कहाँ हैं?लडक़ी ने कुछ जरूरत से ज्यादा ही ललकते हुए कहा।

आदमी ने सलमे – सितारों से जडी एक

लाल थैली उठाई – जिसे हिप्पी लोग अपने पासपोर्ट के लिये खरीदते थे। लडक़ी ने उसे हाथ से छनि लिया और हवा में झुलाने लगी। भीतर रखी चवन्नियां, अठन्नियां चहचहाने लगीं। फिर उसने थैली का मुंह खोला और सारे पैसों को मेज पर बिखेर दिया।

हिन्दुस्तान में क्या सब लोगों के पास ऐसे ही सिक्के होते हैं?

वह हंसने लगा, तो क्या सबके लिये अलग अलग बनेंगे? उसने कहा।

लेकिन गरीब लोग? उसने आदमी को देखा, मैं ने एक रात टी वी में उन्हें देखा था। वह सिक्कों को भूल गई और कुछ असमंजस में फर्श पर बिखरी चीजों को देखने लगी। तब पहली बार आदमी को लगा – वह लडक़ी जो उसके सामने बैठी है, कोई दूसरी है। पहचान का फ्रेम वही है जो उसने दो साल पहले देखा था लेकिन बीच की तसवीर बदल गई है। किन्तु वह बदली नहीं थी, वह सिर्फ कहीं और चली गई थी। वे मां बाप जो बच्चों के साथ हमेशा नहीं रहते, उन गोपनीय मंजिलों के बारे में कुछ नहीं जानते जो उनके अभाव की नींव पर ऊपर ही ऊपर बनती रहती हैं, लडक़ी अपने बचपन के बेसमेन्ट में जाकर ही पिता से मिल पाती थी लेकिन कभी कभी उसे छोड क़र दूसरे कमरों में चली जाती थी, जिसके बारे में आदमी को कुछ भी नहीं मालूम था।

पापा। लडक़ी ने उसकी ओर देखकर कहा, क्या मैं इन चीज़ों को समेटकर रख दूं?

क्यों इतनी जल्दी क्या है?

नहीं, जल्दी नहीं लेकिन मामा आकर देखेंगी तो! उसके स्वर में हल्की सी घबराहट थी, जैसे वह हवा में किसी अदृश्य खतरे को सूंघ रही हो।

आयेंगी तो क्या? आदमी ने कुछ विस्मय से लडक़ी को देखा।

पापा धीरे बोलो! लडक़ी ने ऊपर कमरे की तरफ देखा, ऊपर सन्नाटा था, जैसे घर एक देह हो, दो में बंटी हुई, जिसका एक हिस्सा सुन्न और निस्पन्द पडा हो, दूसरे में वे दोनों बैठे थे। और तब उसे भ्रम हुआ कि लडक़ी कठपुतली का नाटक कर रही है। ऊपर के धागे से बंधी हुई, जैसे वह खिंचता है, वैसे वह हिलती है लेकिन वह न धागे को देख सकता है न उसे जो उसे हिलाता है वह उठ खडा हुआ। लडक़ी ने आतंकित होकर उसे देखा, आप कहाँ जा रहे हैं?

वह नीचे नहीं आयेंगी? उसने पूछा।

उन्हें मालूम है आप यहाँ हैं। लडक़ी ने कुछ खीज कर कहा।

इसीलिये वह नहीं आना चाहतीं?

नहीं । लडक़ी ने कहा, इसीलिये वे कभी भी आ सकती हैं।

कैसे पागल हैं। इतनी छोटी सी बात नहीं समझ सकते। आप बैठिये, मैं अभी इन सब चीजों को समेट लेती हूँ।

वह फर्श पर उकडूं बैठ गई; बडी सफाई से हर चीज उठा कर कोने में रखने लगी। मखमल की जूती, पश्मीने की शॉल, गुजरात एम्पोरियम का बेडकवर। उसकी पीठ पिता की ओर थी, किन्तु वह उसके हाथ देख सकता था, पतले सांवले, बिलकुल अपनी मां की तरह, वैसे ही निस्संग और ठंडे, जो उसकी लाई हुई चीजों को आत्मीयता से पकडते नहीं थे, सिर्फ अनमने भाव से अलग ठेल देते थे। वे एक ऐसी बच्ची के हाथ थे, जिसने सिर्फ मां के सीमित और सुरक्षित स्नेह को छुना सीखा था, मर्द के उत्सुक और पीडित उन्माद को नहीं जो पिता के सेक्स की काली कन्दरा से उमडता हुआ बाहर आता है।

अचानक लडक़ी के हाथ ठिठक गये। उसे लगा कोई दरवाजे की घण्टी बजा रहा है लेकिन दूसरे ही क्षण फोन का ध्यान आया जो जीने के नीचे कोटर में था और जंजीर से बंधे पिल्ले की तरह जोर जोर से चीख रहा था। लडक़ी ने चीजें वैसे ही छोड दीं और लपकते हुए सीढियों के पास गई, फोन उठाया, एक क्षण तक कुछ सुनाई नहीं दिया। फिर वह चिल्लाई – मम्मी आपका फोन।

बच्ची बेनिस्टर के सहारे खडी थी, हाथ में फोन झुलाती हुई। ऊपर का दरवाजा खुला और जीना हिलने लगा। कोई नीचे आ रहा था, फिर एक सिर लडक़ी के चेहरे पर झुका, गुंथा हुआ जूडा और फोन के बीच एक पूरा चेहरा उभर आया

किसका है? औरत ने अपने लटकते हुए जूडे क़ो पीछे धकेल दिया और लडक़ी के हाथ से फोन खींच लिया। आदमी कुर्सी से उठालडक़ी ने उसकी ओर देखा। हलो औरत ने कहा। हलो, हलो, औरत की आवाज ऊपर उठी और तब उसे पता चला कि यह उस स्त्री की आवाज है, जो उसकी पत्नी थी; वह उसे बरसों बाद भी सैकडों आवाजों की भीड में पहचान सकता था ऊंची पिच पर हल्के से कांपती हुई, हमेशा से सख्त, आहत, परेशान, उसकी देह की एकमात्र चीज ज़ो देह से परे आदमी की आत्मा पर खून की खरोंच खींच जाती थी। वह जैसे उठा था, वैसे ही बैठ गया।

लडक़ी मुस्कुरा रही थी।

वह हैंगर के आईने से आदमी का चेहरा देख रही थी – और वह चेहरा कुछ वैसा ही बेडौल दिखाई दे रहा था जैसे उम्र के आईने से औरत की आवाज – उल्टा, टेढा, पहेली सा रहस्यमय! वे तीनों व्यक्ति अनजाने में चार में बंट गये थे– लडक़ी, उसकी मां, वह और उसकी पत्नी घर जब गृहस्थी में बदलता है तो, अपने आप फैलता जाता है

तुम जेनी से बात करोगी? औरत ने लडक़ी से कहा और बच्ची जैसे इसी क्षण की प्रतीक्षा कर रही थी। वह उछल कर ऊपरी सीढी पर आ गई और मां से टेलीफोन ले लिया, हलो जेनी, इट इज मी!

वह दो सीढियां नीचे उतरी; तब आदमी उसे पूरा का पूरा देख सकता था।

बैठो आदमी कुर्सी से उठ खडा हुआ। उसके स्वर में एक बेबस सा अनुनय था, मानो उसे डर हो कि कहीं उसे देख कर वह उल्टे पांव न लौट जाये।

वह एक क्षण अनिश्चय में खडी रही। अब वापस मुडना निरर्थक था, लेकिन इस तरह

उसके सामने खडे रहने का कोई तुक नहीं था।

वह स्टूल खींच कर टी वी के आगे बैठ गई। कब आये ? उसका स्वर इतना धीमा था कि आदमी को लगा, टेलीफोन पर कोई दूसरी औरत बोल रही थी।

काफी देर हो गई मुझे पता भी न था कि तुम ऊपर कमरे में हो!

स्त्री चुपचाप देखती रही।

आदमी ने जेब से रुमाल निकाला, पसीना पौंछा, मुस्कुराने की कोशिश में मुस्कुराने लगा। मैं बहुत देर तक बाहर खडा रहा, मुझे पता नहीं था, घंटी खराब है। गैरेज खाली पडा था, मैं ने सोचा तुम दोनों बाहर गई होतुम्हारी कार ?

उसे मालूम था, फिर भी उसने पूछा।

सर्विसिंग के लिये गई है। स्त्री ने कहा। वह हमेशा से उसकी छोटी बेकार की बातों से नफरत करती आई है, जबकि आदमी के लिये वे कुछ ऐसे तिनके थे, जिन्हें पकड क़र डूबने से बचा जा सकता था। कम से कम कुछ देर के लिये।

तुम्हें मेरा टेलीग्राम मिल गया था ? मैं फ्रेंकफर्ट आया था, उसी टिकट पर यहाँ आ गया; कुछ पौण्ड ज्यादा देने पडे। मैं ने तुम्हें वहां से फोन भी किया, लेकिन तुम दोनों कहीं बाहर थे कब ? औरत ने हल्की जिज्ञासा से उसकी ओर देखा, हम दोनों घर में थे।

घण्टी बज रही थी, लेकिन किसी ने उठाया नहीं। हो सकता है, ऑपरेटर मेरी अंग्रेजी नहीं समझ सकी और गलत नम्बर दे दिया हो! लेकिन सुनो। वह हंसने लगा, एक अजीब बात हुई। हीथ्रो पर मुझे एक औरत मिली, जो पीछे से बिलकुल तुम्हारी तरह दिखाई दे रही थी, यह तो अच्छा हुआ मैं ने उसे बुलाया नहीं हिन्दुस्तान के बाहर हिन्दुस्तानी औरतें एक जैसी ही दिखाई देती हैं। वह बोले जा रहा था। वह उस आदमी की तरह था जो आंखों पर पट्टी बांध कर हवा में तनी हुई रस्सी पर चलता है, स्त्री कहीं बहुत नीचे थी, एक सपने में जिसे वह बहुत पहले कभी जानता था, किन्तु अब उसे याद नहीं आ रहा था कि वह उसके सामने क्यों बैठा था ?

वह चुप हो गया। उसे ख्याल आया, इतनी देर से वह सिर्फ अपनी आवाज सुन रहा है, उसके सामने बैठी स्त्री बिलकुल चुप बैठी थी। उसकी ओर बहुत ठण्डी और हताश निगाहों से देख रही थी।

क्या बात है ? आदमी ने कुछ भयभीत होकर पूछा।

मैं ने तुमसे मना किया था; तुम समझते क्यों नहीं ? किसके लिये ? तुमने किसके लिये मना किया था ? मैं तुमसे कुछ नहीं चाहती मेरे घर तुम ये सब क्यों लाते हो; क्या फायदा है इनका ?

पहले क्षण वह नहीं समझा, कौन सी चीजें ? फिर उसकी निगाहें फर्श पर गईं शांति निकेतन का पर्स, डाक टिकट का एल्बम, दालबीजी का डिब्बा – वे अब बिलकुल लुटी – पिटी दिखाई दे रही थीं, जैसे वह कुर्सी पर बैठा हुआ था, वैसी वे फर्श पर बिखरी हुई। कौनसी ज्यादा हैं ? उसने खिसियाते हुए कहा, इन्हें न लाता तो आधा सूटकेस खाली पडा रहता।

लेकिन मैं कुछ नहीं चाहती तुम क्या इतनी सी बात नहीं समझ सकते ? स्त्री की कांपती हुई आवाज ऊपर उठी, जिसके पीछे जाने कितनी लडाइयों की पीडा, कितने नरकों का पानी भरा था, जो बांध टूटते ही उसके पास आने लगा, एक एक इंच आगे बढता हुआ। उसने जेब से रूमाल निकाला और अपने लथपथ चेहरे को पौंछने लगा।

क्या तुम्हें इतनी देर को आना भी बुरा लगता है ? हाँ। उसका चेहरा तन गया, फिर अजीब हताशा में वह ढलि पड गई, मैं तुम्हें देखना नहीं चाहती – बस!

क्या यह इतना आसान है ? वह जिद्दी लडक़े की तरह उसे देखने लगा जो सवाल समझ लेने के बाद भी बहाना करता है कि उसे कुछ समझ में नहीं आया।

वुक्कू! उसने धीरे से कहा, प्लीज!

तुम चाहती क्या हो ?

लीव मी अलोन। इससे ज्यादा मैं कुछ और नहीं चाहती।

मैं बच्ची से भी मिलने नहीं आ सकता ?

इस घर में नहीं, तुम उससे कहीं बाहर मिल सकते हो ?

बाहर! आदमी ने हकबका कर कहा, बाहर कहाँ ? उस क्षण वह भूल गया कि बाहर सारी दुनिया फैली है, पार्क, सडक़ें, होटल के कमरे – उसका अपना संसार, बच्ची कहाँ कहाँ उसके साथ घिसटेगी ?

वह फोन पर हंस रही थी। कुछ कह रही थी नहीं, आज मैं नहीं आ सकती। डैडी घर में हैं, अभी अभी आ रहे हैं नहीं मुझे मालूम नहीं। मैं ने पूछा नहीं। क्या नहीं मालूम ? शायद उसकी सहेली ने पूछा था, वह कितना दिन रहेगा ? सामने बैठी स्त्री भी सायद यह जानना चाहती थी, कितना समय, कितनी घडियां, कितनी यातना अभी और उसके साथ भोगनी पडेगी ?

शाम की आखिरी धूप भीतर आ रही थी। टी वी का स्क्रीन चमक रहा था। लेकिन वह खाली था और उसमें सिर्फ स्त्री की छाया बैठी थी, जैसे खबरें शुरु होने से पहले एनाउन्सर की छवि दिखाई देती है, पहले कमजोर और धुंधली, फिर धीरे धीरे ब्राइट होती हुई वह सांस रोके प्रतीक्षा कर रहा था कि वह कुछ कहेगी हालांकि उसे मालूम था कि पिछले वर्षों में सिर्फ एक न्यूज रील है जो हर बार मिलने पर पुरानी पीडा का टेप खोल देती है, जिसका सम्बन्ध किसी दूसरी जिन्दगी से है चीजें और आदमी कितनी अलग हैं! बरसों बाद भी घर, किताबें, कमरे वैसे ही रहते हैं, जैसा तुम छोड ग़ये थे; लेकिन लोग ? वे उसी फिन मरने लगते हैं, जिस दिन से अलग होजाते हैं मरते नहीं, एक दूसरी जिन्दगी जीने लगते हैं, जो धीरे धीरे उस जिन्दगी का गला घोंट देती है, जो तुमने साथ गुजारी थी

मैं सिर्फ बच्ची से नहीं वह हकलाने लगा, मैं तुमसे भी मिलने आया था।

मुझसे ? औरत के चेहरे पर हंसी, हिकारत, हैरानी एक साथ उमड आई, तुम्हारी झूठ बोलने की आदत अभी तक गई नहीं।

तुमसे झूठ बोलकर अब मुझे क्या मिलेगा ?

मालूम नहीं, तुम्हें क्या मिलेगा– मुझे जो मिला है, उसे मैं भोग रही हूँ।%%

उसने एक गहरी ठंडी निगाह से बाहर देखा। %% मुझे अगर तुम्हारे बारे में पहले से ही कुछ मालूम होता, तो मैं कुछ कर सकती थी।%% %% क्या कर सकती थीं ?%% एक ठण्डी झुरझुरी ने आदमी को पकड लिया। %% कुछ भी। मैं तुम्हारी तरह अकेली नहीं रह सकती; लेकिन अब इस उम्र में अब कोई मुझे देखता भी नहीं।

वुक्कू! उसने हाथ पकड लिया।

मेरा नाम मत लोवह सब खत्म हो गया।

वह रो रही थी; बिलकुल निस्संग, जिसका गुजरे हुए आदमी और आने वाली उम्मीद – दोनों से कोई सरोकार नहीं था। आंसू, जो एक कारण से नहीं, पूरा पत्थर हट जाने से आते हैं, एक ढलुआ जिन्दगी पर नाले की तरह बहते हुए, औरत बार बार उन्हें अपने हाथ से झटक देती थी।

बच्ची कब से फोन के पास चुप बैठी थी। वह जीने की सबसे निचली सीढी पर बैठी थी और सूखी आंखों से रोती मां को देख रही थी। उसके सब प्रयत्न निष्फल हो गये थे, किन्तु उसके चेहरे पर निराशा नहीं थी। हर परिवार के अपने दुस्वप्न होते हैं जो एक अनवरत पहिये में घूमते हैं; वह उनमें हाथ नहीं डालती थी। इतनी कम उम्र में वह इतना बडा सत्य जान गई थी कि मनुष्य के मन और बाहर की सृष्टि में एक अद्भुत समानता है – वे जब तक अपना चक्कर पूरा नहीं कर लेते, उन्हें बीच में रोकना बेमानी है।

वह बिना आदमी को देखे मां के पास गई; कुछ कहा, जो उसके लिये नहीं था। औरत ने उसे अपने पास बैठा लिया, बिलकुल अपने से सटाकर। काउच पर बैठी वे दो बहनों – सी लग रही थीं। वे उसे भूल गई थीं। कुछ देर पहले जो ज्वार उठा था, उसमें घर डूब गया था लेकिन अब पानी वापस लौट गया था और अब आादमी वहां था, जहां उसे होना चाहिये था – किनारे पर। उसे यह ईश्वर के वरदान जैसा जान पडा; वह दोनों के बीच बैठा है अदृश्य! बरसों से उसकी यह साध रही है कि वह मां और बेटी के बीच अदृश्य बैठा रहे। सिर्फ ईश्वर ही अपनी दया में अदृश्य होता है– उसे यह मालूम था। किन्तु जो आदमी गढहे की सबसे निचली सतह पर जीता है, उसे भी कोई नहीं देख सकता। मां और बच्ची ने उसे अलग छोड दिया था; यह उसकी उपेक्षा नहीं थी। उसकी तरफ से मुंह मोडक़र उन्होंने उसे अपने पर छोड दिया था; यह उसकी अपेक्षा नहीं थी। उसकी तरफ से मुंह मोडक़र उन्होंने उसे अपने पर छोड दिया था – ठीक वहीं – जहां उसने बरसों पहले घर छोडा था। लडक़ी मां को छोड क़र उसके पास आकर बैठ गई।

हमारा बाग देखने चलोगे ? उसने कहा।

अभी ? उसने कुछ विस्मय से लडक़ी को देखा। वह कुछ अधीर और उतावली – सी दिखाई दे रही थी, जैसे वह कुछ कहना चाहती हो, जिसे कमरे के भीतर कहना संभव न हो।

चलो, आदमी ने उठते हुए कहा, लेकिन इन चीजों को तो ऊपर ले जाओ।

हम इन्हें बाद में समेट लेंगे।

बाद में कब ? आदमी ने आशंकित होकर पूछा। आप चलिये तो। लडक़ी ने लगभग उसे घसीटते हुए कहा।

इनसे कहो, अपना सामान सूटकेस में रख लें। स्त्री की आवाज सुनाई दी।

उसे लगा, अचानक किसी ने पीछे से धक्का दे दिया हो। वह चमक कर पीछे मुडा, क्यों ?

मुझे इनकी जरूरत नहीं है।

उसके भीतर एक लपलपाता अंधड उठने लगा, मैं नहीं ले जाऊंगा, तुम चाहो तो इन्हें बाहर फेंक सकती हो।

बाहर ? स्त्री की आवाज थरथरा रही थी, मैं इनके साथ तुम्हें भी बाहर फेंक सकती हूँ।

रोने के बाद उसकी आंखें चमक रही थीं। गालों का गीलापन सूखे कांच सा जम गया था, जो पौंछे हुए नहीं सूखे हुए आंसुओं से उभर कर आता है।

क्या हम बाग देखने नहीं चलेंगे ? बच्ची ने उसका हाथ खींचा – और वह उसके साथ चलने लगा। वह कुछ भी नहीं देख रहा था। घास, क्यारियां और पेड एक गूंगी फिल्म की तरह चल रहे थे। सिर्फ उसकी पत्नी की आवाज एक भुतैली कमेन्ट्री की तरह गूंज रही थी – बाहर, बाहर!

आप मम्मी के साथ बहस क्यों करते हैं ? लडक़ी ने कहा।

मैं ने बहस कहाँ की ? उसने बच्ची को देखा – जैसे वह भी उसकी दुश्मन हो।

आप करते हैं। लडक़ी का स्वर अजीब सा हठीला हो आया था। वह अंग्रेजी में यू कहती थी, जिसका प्यार में मतलब तुम होता था और नाराजगी में आप। अंग्रेजी सर्वनाम की यह संदिग्धता बाप बेटी के रिश्ते को हवा में टांगे रहती थी, कभी बहुत पास, कभी बहुत पराया– जिसका सही अन्दाज उसे सिर्फ लडक़ी की टोन में टटोलना पडता था। एक अजीब से भय ने आदमी को पकड लिया। वह एक ही समय में मां और बच्ची दोनों को नहीं खोना चाहता था।

बडा प्यारा बाग है। उसने फुसलाते हुए कहा, क्या माली आता है ?

नहीं, माली नहीं। लडक़ी ने उत्साह से कहा, मैं शाम को पानी देती हूँ और छुट्टी के दिन ममी घास काटती हैं इधर आओ, मैं तुम्हें एक चीज दिखाती हूँ।

वह उसके पीछे पीछे चलने लगा। लॉन बहुत छोटा था– हरा, पीला, मखमली! पीछे गैराज था और दोनों तरफ झाडियों की फेन्स लगी थी। बीच में एक घना, बूढा विलो खडा था। लडक़ी पेड क़े पीछे छिप – सी गई, फिर उसकी आवाज सुनाई दी, कहाँ हो तुम ?

वह चुपचाप, दबे पांव पेड क़े पीछे चला आया और हैरान – सा खडा रहा। विलो और फेन्स के बीच काली लकडी क़ा बाडा

था, जिसके दरवाजे से एक खरगोश बाहर झांक रहा था; दूसरा लडक़ी की गोद में था। वह उसे ऐसे सहला रही थी, जैसे वह ऊन का गोला हो, जो कभी भी हाथ से छूट कर झाडियों में गुम हो जायेगा।

ये हमने अभी पाले हैं पहले दो थे, अब चार । बाकी कहाँ हैं ?

बाडे क़े भीतरवे अभी बहुत छोटे हैं।

पहले उसका मन भी खरगोश को छूने को हुआ, किन्तु उसका हाथ अपनी बच्ची के सिर पर चला गया और वह धीरे धीरे उसके भूरे, छोटे बालों से खेलने लगा। लडक़ी चुप खडी रही और खरगोश अपनी नाक सिकोडता हुआ उसकी ओर ताक रहा था।

पापा ? लडक़ी ने बिना सिर उठाये धीरे से कहा, क्या आपने डे रिटन का टिकट लिया है ? नहीं; ऐसा क्यों ?

ऐसे ही, यहां वापसी का टिकट बहुत सस्ता मिल जाता है।

क्या उसने यही पूछने के लिये उसे यहां बुलाया था ? उसने धीरे से अपना हाथ लडक़ी के सिर से हटा लिया।

आप रात को कहां रहेंगे ? लडक़ी का स्वर बिलकुल भावहीन था।

अगर मैं यहीं रहूँ तो ? लडक़ी ने धीरे से खरगोश को बाडे में रख दिया और खट से दरवाजा बन्द कर दिया।

मैं हंसी कर रहा था, उसने हंस कर कहा, मैं आखिरी ट्रेन से लौट जाऊंगा।

लडक़ी ने मुडक़र उसकी ओर देखा, यहां दो तीन अच्छे होटल भी हैं। मैं अभी फोन करके पूछ लेती हूँ। लडक़ी का स्वर बहुत कोमल हो आया। यह जानते ही कि वह रात घर में नहीं ठहरेगा, वह मां से हटकर आदमी के साथ हो गई; धीरे से उसका हाथ पकडा, उसे वैसे ही सहलाने लगी, जैसे अभी कुछ देर पहले खरगोश सहला रही थी। लेकिन आदमी का हाथ पसीने से तरबतर था।

सुनो, मैं अगली छुट्टियों में इण्डिया आऊंगी – इस बार पक्का है।

उसे कुछ आश्चर्य हुआ कि आदमी ने कुछ नहीं कहा; सिर्फ बाडे में खरगोशों की खटर पटर सुनाई दे रही थी।

पापा तुम कुछ बोलते क्यों नहीं ?

तुम हर साल यही कहती हो।

कहती हूँ, लेकिन इस बार आऊंगी, डोन्ट यू बीलीव मी ?

भीतर चलें ? ममी हैरान हो रही होंगी कि हम कहाँ रह गये।

अगस्त का अंधेरा चुपचाप चला आया था। हवा में विलो की पत्तियां सरसरा रही थीं। कमरों के परदे गिरा दिये गये थे, लेकिन रसोई का दरवाजा खुला था। लडक़ी भागते हुए भीतर गई सिंक का नल खोल कर हाथ धोने लगी। वह उसके पीछे आकर खडा हो गया; सिंक के ऊपर आईने में उसने अपना चेहरा देखा – रूखी गर्द और बढी हुई दाढी और सुर्ख आंखों के बीच उसकी ओर हैरत से ताकता हुआ – नहीं, तुम्हारे लिये कोई उम्मीद नहीं।

पापा, क्या तुम अब भी अपने आप से बोलते हो ? लडक़ी पानी में भीगा अपना चेहरा उठाया – वह शीशे में देख रही थी।

हाँ, लेकिन अब मुझे कोई सुनता नहीं। उसने धीरे से बच्ची के कन्धे पर हाथ रखा, क्या फ्रिज में सोडा होगा ?

तुम भीतर चलो, मैं अभी लाती हूँ।

कमरे में कोई न था। उसकी चीजें बटोर दी गईं थीं। सूटकेस कोने में खडा था; जब वे बाग में थे, उसकी पत्नी ने शायद उन सब चीजों को देखा होगा; उन्हें छुआ होगा। वह उससे चाहे कितनी नाराज क्यों न हो – चीजों की बात अलग थी। वह उन्हें ऊपर नहीं ले गई, लेकिन दुबारा सूटकेस में डालने की हिम्मत नहीं की थीउन्हें अपने भाग्य पर छोड दिया था।

कुछ देर बाद जब बच्ची सोडा और गिलास लेकर आई, तो उसे सहसा पता चला कि वह कहाँ बैठा है। कमरे में अंधेरा था– पूरा अंधेरा नहीं – सिर्फ इतना, जिसमें कमरे में बैठा आदमी चीजों के बीच चीज जैसा दिखाई देता है।

पापातुमने बत्ती नहीं जलाई ?

अभी जलाता हूँ। वह उठा और स्विच ढूंढने लगा, बच्ची ने सोडा और गिलास मेज पर रख स्या और टेबल लैम्प जला दिया। ममी कहां हैं ?

वह नहा रही हैं, अभी आती होंगी।

उसने अपने बैग से व्हिस्की निकाली, जो उसने फ्रेंकफर्ट के एयर पोर्ट पर खरीदी थी गिलास में डालते हुए उसके हाथ ठिठक गये, तुम्हारी जिंजर – एल कहाँ है ?

मैं अब असली बियर पीती हूँ। लडक़ी ने हंस कर उसकी ओर देखा, तुम्हें बर्फ चाहिये ?

नहीं लेकिन तुम कहां जा रही हो ?

बाडे में खाना डालने नहीं तो वे एक दूसरे को मार खायेंगे।

वह बाहर गई तो खुले दरवाजे से बाग का अंधेरा दिखाई दिया – तारों की पीली तलछट में झिलमिलाता हुआ। हवा नहीं थी। बाहर का सन्नाटा घर की अदृश्य आवाजों के भीतर से छनकर आता था। उसे लगा, वह अपने घर में बैठा है और जो कभी बरसों पहले होता था, वह अब हो रहा है। वह शावर के नीचे गुनगुनाती रहती थी और जब वह बालों पर तौलिया साफे की तरह बांधकर निकलती थी, तब पानी की बूंदे बाथरूम से लेकर उसके कमरे तक एक लकीर बनाती जाती थीं– पता नहीं वह लकीर कहाँ बीच में सूख गई ? कौनसी जगह, किस खास मोड पर वह चीज हाथ से छूट गई, जिसे वह कभी दोबारा नहीं पकड सका ?

उसने कुछ और व्हिस्की डाली; हालांकि गिलास अभी खाली नहीं हुआ था। उसे कुछ अजीब लगा कि पिछली रात भी यही घडी थी जब वह पी रहा था। लेकिन तब वह हवा में था। जब उसे एयर होस्टेस की आवाज सुनाई दी कि हम चैनल पार कर रहे हैं तो उसने हवाईजहाज की खिडक़ी से नीचे देखा कुछ भी दिखाई नहीं देता था, असल में कहीं भीतर है – उसकी एक जिन्दगी से दूसरी जिन्दगी तक फैला हुआ; जिसे वह हमेशा पार करता रहेगा, कभी इधर, कभी

उधर, कहीं का भी नहीं, न कहीं से आता हुआ न कहीं पहुंचता हुआ।

बिन्दु कहाँ है ? उसने चौंक कर ऊपर देखा, वह वहां कब से खडी थी, उसे पता ही नहीं चला था। बाहर बाग में । उसने कहा, खरगोशों को खाना देने।

वह अलग खडी थी, बैनिस्टर के नीचे। णहाने के बाद उसने एक लम्बी मैक्सी पहन ली थीबाल खुले थे। चेहरा बहुत धुला और चमकीला सा लग रहा था। वह मेज पर रखे गिलास को देख रही थी। उसका चेहरा शांत था, शावर ने न केवल उसके चेहरे को, बल्कि उसके संताप को भी धो डाला था।

बर्फ भी रखी है। उसने कहा।

नहीं, मैं ने सोडा ले लिया, तुम्हारे लिये एक बना दूँ। उसने सिर हिलाया, जिसका मतलब कुछ भी था, उसे मालूम था कि गर्म पानी से नहाने के बाद उसे कुछ ठण्डा पीना अच्छा लगता था। अर्से बाद भी वह उसकी आदतें भूला नहीं था, बल्कि उन आदतों के सहारे ही दोनों के बीच पुरानी पहचान लौट आती थी। वह रसोई में गया और उसके लिये एक गिलास ले आया। उसमें थोडी बर्फ डाली। झब व्हिस्की मिलाने लगा, तो उसकी आवाज सुनाई दी– बस, इतनी काफी है।

वह धुली हुई आवाज थी, जिसमें कोई रंग नहीं था, न स्नेह का, न नाराजगी का – एक शांत तटस्थ आवाज। द्याह सीढियों से हटकर कुर्सी के पास चली आई थी।

तुम बैठोगी नहीं ? उसने कुछ चिंतित होकर पूछा। उसने अपना गिलास उठाया और वहीं स्टूल पर बैठ गई, जहां दुपहर को बैठी थी। टी वी के पास लेकिन टेबललैम्प से दूर – जहां सिर्फ रोशनी की एक पतली सी झांई उस तक पहुंच रही थी।

कुछ देर तक दोनों में से कोई कुछ नहीं बोला फिर स्त्री की आवाज सुनाई दी, घर में सब लोग कैसे हैं ?

ठीक हैं ये सब चीजें उन्होंने ही भेजी हैं।

मुझे मालूम है, औरत ने कुछ थके स्वर में कहा, क्यों उन बेचारों को तंग करते हो ? तुम ढो ढो कर इन चीजों को लाते हो और वे यहाँ बेकार पडी रहती हैं।

वे यही कर सकते हैं, उसने कहा, तुम बरसों से वहाँ गई नहीं हो, वे बहुत याद करते हैं।

अब जाने का कोई फायदा है ? उसने गिलास से लम्बा घूंट लिया, मेरा अब उनसे कोई रिश्ता नहीं। तुम बच्ची के साथ तो आ सकती हो, उसने अब तक हिन्दुस्तान नहीं देखा। वह कुच् देर चुप रहीफिर धीरे से कहा, अगले साल वह चौदह वर्ष की हो जायेगी कानून के मुताबिक तब वह कहीं भी जा सकती है। मैं कानून की बात नहीं कर रहा; तुम्हारे बिना वह कहीं नहीं जायेगी।

स्त्री ने गिलास की भीगी सतह से आदमी को देखा, मेरा बस चले तो उसे वहां कभी न भेजूं। क्यों ? आदमी ने उसकी ओर देखा।

वह धीरे से हंसी, क्या हम दो हिन्दुस्तानी उसके लिये काफी नहीं हैं ? वह बैठा रहा। कुछ देर बाद रसोई का दरवाजा खुला, लडक़ी भीतर आई, चुपचाप दोनों को देखा और फिर जीने के पास चली गई जहां टेलीफोन रखा था। किसे कर रही हो ? औरत ने पूछा। लडक़ी चुप रही, फोन का डायल घुमाने लगी। आदमी उठा, उसकी ओर देखा, थोडा सा और लोगी ? नहीं उसने सिर हिलाया। आदमी धीरे धीरे अपने गिलास में डालने लगा। क्या बहुत पीने लगे हो ? औरत ने पूछा।

नहीं आदमी ने सिर हिलाया, सफर में कुछ ज्यादा ही हो जाता है।

मैं ने सोचा था, अब तक तुमने घर बसा लिया होगा।

कैसे ? उसने स्त्री को देखा, तुम्हें यह कैसे भ्रम हुआ ?

औरत कुछ देर नीरव आंखों से उसे देखती रही, क्यों उस लडक़ी का क्या हुआ ? वह तुम्हारे साथ नहीं रहती ? त्री के स्वर में कोई उत्तेजना नहीं थी, न क्लेश की कोई छाया थी जैसे दो व्यक्ति मुद्दत बाद किसी ऐसी घटना की चर्चा कर रहे हों जिसने एक झटके से दोनों को अलग छोरों पर फेंक दिया था। मैं अकेला रहता हूँ माँ के साथ। उसने कहा।

औरत ने तनिक विस्मय से उसे देखा, क्या बात हुई ? कुछ नहीं मैं शायद साथ रहने के काबिल नहीं हूँ। उसका स्वर असाधारण रूप से धीमा हो आया, जैसे वह उसे अपनी किसी गुप्त बीमारी के बारे में बता रहा हो, तुम हैरान हो ? लेकिन ऐसे लोग होते हैं वह कुछ और कहना चाहता था, प्रेम के बारे में, वफादारी के बारे में, विश्वास और धोखे के बारे में; कोई बडा सत्य, जो बहुत से झूठों से मिलकर बनता है, व्हिस्की की धुंध में बिजली की तरह कौंधता है और दूसरे क्षण हमेशा के लिये अंधेरे में लोप हो जाता है

लडक़ी शायद इस क्षण की ही प्रतीक्षा कर रही थी; वह टेलीफोन से उठकर आदमी के पास आई, एक बार मां को देखा, वह टेबल लैंप के पीछे अंधेरे के आधे कोने में छिप गईं थीं, और आदमी ? वह गिलास के पीछे सिर्फ एक डबडबाता – सा धब्बा बनकर रह गया था। पापा, लडक़ी के हाथ में कागज का पुरजा था, यह होटल का नाम है, टैक्सी तुम्हें सिर्फ दस मिनट में पहुंचा देगी।

उसने लडक़ी को अपने पास खींच लिया और कागज जेब में रख लिया।

कुछ देर तीनों चुप बैठे रहे, जैसे बरसों पहले यात्रा पर निकलने से पहले घर के प्राणी एक साथ सिमटकर चुप बैठ जाते थे। बाहर बहुत से तारे निकल आये थे, जिसमें बूढा विलो, झाडियों और खरगोशों का बाडा एक निस्पन्द पीले आलोक में पास पास सरक आये थे।

उसने अपना गिलास मेज पर रखा, फिर धीरे से लडक़ी को चूमा, अपना सूटकेस उठाया और जब लडक़ी ने दरवाजा खोला, तो वह क्षणभर देहरी पर ठिठक गया, मैं चलता हूँ । उसने कहा। पता नहीं, यह बात उसने किससे कही थी, किन्तु जहाँ वह बैठी थी, वहाँ से कोई आवाज नहीं आई। वहाँ उतनी ही घनी चुप्पी थी, जितनी बाहर अंधेरे में, जहाँ वह जा रहा था।

पहिला सफ़ेद बाल

व्यंग्यं की श्रंखला में इस अंक मे पेश है परसाईजी का प्रसिद्ध व्यंग्य लेख- पहिला सफेद बाल। इस लेख में जो यौवन की परिभाषा परसाईजी ने बतायी है वह मुझे खासतौर पर आकर्षित करती है-यौवन नवीन भाव, नवीन विचार ग्रहण करने की तत्परता का नाम है; यौवन साहस, उत्साह, निर्भयता और खतरे-भरी जिन्दगी का नाम हैं,; यौवन लीक से बच निकलने की इच्छा का नाम है। और सबसे ऊपर, बेहिचक बेवकूफी करने का नाम यौवन है। यह लेख पढ़िये और देखिये आपमें कितना यौवन बचा है। कितना बेहिचक बेवकूफी करने का माद्दा बचा है आपमें

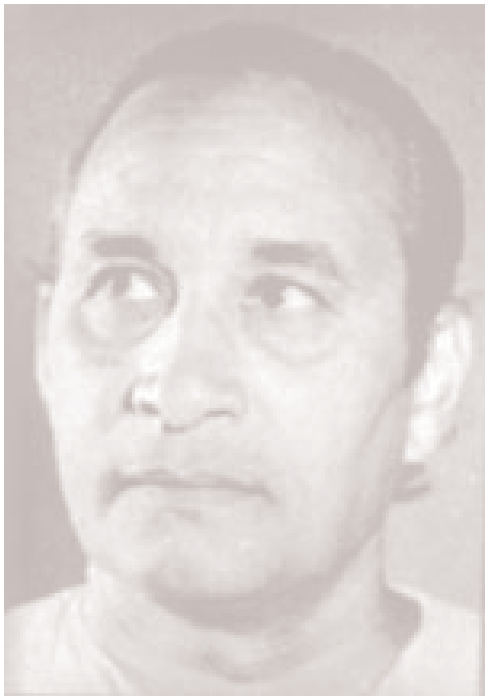

हरिशंकर परसाई

आज पहिला सफ़ेद बाल दिखा। कान के पास काले बालों के बीच से झांकते इस पतले रजत-तार ने सहसा मन को झकझोर दिया।

?सा लगा जैसे बसन्त में वनश्री देखता घूम रहा हूं कि सहसा किसी झाड़ी से शेर निकल पड़े;

या पुराने जमाने में किसी मजबूत माने जानेवाले किले की दीवार पर रात को बेफ़िक्र घूमते गरबीले किलेदार को बाहर से चढ़ते हुए शत्रु के सिपाही की कलगी दिख जाय;

या किसी पार्क के कुंज में अपनी राधा को ह्रदय से लगाये प्रेमी को एकाएक राधा का बाप आता दिख जाय।

कालीन पर चलते हुए कांटा चुभने का दर्द बड़ा होता है। मैं अभी तक कालीन पर चल रहा था। रोज नरसीसस जैसी आत्म-रति से आईना देखता था, घुंघराले काले केशों को देखकर, सहलाकर, संवारकर, प्रसन्न होता था। उम्र को ठेलता जाता था, वार्द्धक्य को अंगूठा दिखाता था। पर आज कान में यह सफ़ेद बाल फ़ुस-फ़ुसा उठा, 'भाई मेरे, एक बात 'कानफ़िडेन्स' में कहूं- अपनी दूकान समेटना अब शुरू कर दो!'

मरण को त्यौहार

माननेवाले ही म्रत्यु से सबसे अधिक भयभीत होते हैं। वे त्योहार का हल्ला करके अपने ह्रदय के सत्य भय को दबाते हैं।तभी से दुखी हूं। ज्ञानी समझायेगें-जो अवश्यम्भावी है, उसके होने का क्या दुःख? जी हां, मौत भी तो अवश्यम्भावी है। तो क्या जिन्दगी-भर मरघट में अपनी चिता रचते रहें? और ज्ञानी से कहीं हर दुख जीता गया? वे क्या कम ज्ञानी थे, जो मरणासन्न लक्ष्मण का सिर गोद में लेकर विलाप कर रहे थे- 'मेरो सब पुरूषारथ थाको!' स्थितप्रज्ञ दर्शन अर्जुन को समझानेवाले की आंख उद्धव से गोकुल की व्यथा-कथा सुनकर, डबडबा आयी थी।

मैं वास्तव में दुखी हूं। सिर पर सफ़ेद कफ़न बुना जा रहा है; आज पहिला तार डाला गया है। उम्र बुनती जायगी इसे और यह यौवन की लाश को ढंक लेगा। दुःख नही होगा मुझे? दुःख उन्हें नहीं होगा, जो बूढ़े ही जन्मे है।

मुझे गुस्सा है, इस आईने पर। वैसे तो यह बड़ा दयालु है, विक्रति को सुधार-कर चेहरा सुडौल बनाकर बताता रहा है। आज एकाएक यह कैसे क्रूर हो गया! क्या इस एक बाल को छिपा नहीं सकता था? इसे दिखाये बिना

क्या उसकी ईमानदारी पर बड़ा कलंक लग जाता? उर्दू-कवियों ने ?से संवेदनशील आईनों का जिक्र किया है, जो माशूक के चेहरे में अपनी ही तस्वीर देखने लगते है, जो उस मुख के सामने आते ही गश खाकर गिर पड़ते है; जो उसे पूरी तरह प्रतिबिम्बित न कर सकने के कारण चटक जाते हैं। सौन्दर्य का सामना करना कोई खेल नहीं है। मूसा बेहोश हो गया था। ?से भले आईने होते हैं, उर्दू-कवियों के। और यह एक हिन्दी लेखक का आईना है।

मगर आईने का क्या दोष? बाल तो अपना सफ़ेद हुआ है। सिर पर धारण किया, शरीर का रस पिलाकर पाला, हजारों शीशियां तेल की उड़ेल दीं- और ये धोखा दे गये। संन्यासी शायद इसीलिए इनसे छुट्टी पा लेता है कि उस विरागी का साहस भी इनके सामने लड़खड़ा जाता है।

आज आत्मविश्वास उठा जाता है; साहस छूट रहा है। किले में आज पहिली सुरंग लगी है। दुश्मन को आते अब क्या देर लगेगी!

क्या करूं? इसे उखाड़ फ़ेंकूं? लेकिन सुना है, यदि एक सफ़ेद बाल को उखाड़ दो, तो वहां एक गुच्छा सफ़ेद हो जाता है। रावण जैसा वरदानी होता, कमबख्त। मेरे
चाचा ने एक नौकर सफ़ेद बाल उखाड़ने के लिए ही रखा था। पर थोड़े ही समय में उनके सिर पर कांस फ़ूल उठा था। एक तेल बड़ा 'मनराखन' हो गया है। कहते हैं उससे बाल काले हो जाते है (नाम नही लिखता, व्यर्थ प्रचार होगा), उस तेल को लगाऊं ? पर उससे भी शत्रु मरेगा नहीं, उसकी वर्दी बदल जायेगी। कुछ लोग खिजाब लगाते है। वे बड़े दयनीय होते हैं। बुढ़ापे से हार मानकर, यौवन का ढोंग रचते हैं। मेरे एक परिचित खिजाब लगाते थे। शनिवार को वे बूढ़े लगते और सोमवार को जवान- इतवार उनका रंगने का दिन था। न जाने वे ढलती

यौवन सिर्फ़ काले बालों का नाम नहीं है। यौवन नवीन भाव, नवीन विचार ग्रहण करने की तात्परता का नाम है; यौवन साहस, उत्साह, निर्भयता और खतरे-भरी जिन्दगी का नाम हैं,; यौवन लीक से बच निकलने की इच्छा का नाम है। और सबसे ऊपर, बेहिचक बेवकूफ़ी करने का नाम यौवन है

उम्र में काले बाल किसे दिखाते थे! शायद तीसरे विवाह की पत्नी को। पर वह उन्हें बाल रंगते देखती तो होगी ही। और क्या स्त्री को केवल काले बाल दिखाने से यौवन का भ्रम उत्मन्न किया जा सकता है? नहीं, यह सब नहीं होगा। शत्रु को सिर पर बिठाये रखना पड़ेगा। जानता हूं, धीरे-धीरे सब वफ़ादार बालों को अपनी ओर मिला लेगा।

याद आती हैं, मेरे समानधर्मी, कवि केशवदास की, जिसे 'चन्द्रवदन म्रगलोचनी' ने बाबा कह दिया, तो वह बालों पर बरस पड़ा था। हे मेरे पूर्वज, दुखी, रसिक कवि! तेरे मन की ?ंठन मैं अब बखूबी समझ सकता हूं। मैं चला आ रहा हूं, तेरे पीछे। मुझे 'बाबा' तो नहीं, पर 'दादा' कहने लगी है- बस, थोड़ा ही फ़ासला है! मन बहुत विचलित है। आत्म-रति के अतिरेक का फ़ल नरसीसस ने भोगा था, मुझे भी भोगना पड़ेगा। मुझे एक अन्य कारण से डर है। मैने देखा है, सफ़ेद बाल के आते ही आदमी हिसाब लगाने लगता है कि अब तक क्या पाया, आगे क्या करना है और भविष्य के लिए क्या संचय किया। हिसाब लगाना अच्छा नहीं होता। इससे जिन्दगी में वणिक-व्रत्ति आती है और जिस से कुछ मिलता है, और जिस दिशा से कुछ मिलता है, आदमी उसी दिशा में सिजदा करता है। बड़े-बड़े 'हीरो' धराशायी होते है। बड़ी-बड़ी देव-प्रतिमाएं खण्डित होती है। राजनीति, साहित्य, जन-सेवा के क्षेत्र की कितनी महिमा-मण्डित मूर्तियां इन आंखों ने टूटते देखी हैं; कितनी आस्थाएं भंग होते देखी है। बड़ी खतरनाक उम्र है यह; बड़े समझौते होते सफ़ेद बालों के मौसम में। यह सुलह का झण्डा सिर पर लहराने लगा है। यह घोषणा कर रहा है-'अब तक के शत्रुओ! मैने हथियार डाल दिये हैं। आओ, सन्धि कल लें।' तो क्या सन्धि होगी- उनसे, जिनसे संघर्ष होता रहा? समझौता होगा उससे, जिसे गलत मानता रहा?

।पर आज एकदम ये निर्णायक प्रश्न मेरे सामने क्यों खड़े हो गये? बाली की जड़ बहुत गहरी नहीं होती! हर्दय से तो उगता नहीं है यह! यह सतही है, बेमानी? यौवन सिर्फ़ काले बालों का नाम नहीं है। यौवन नवीन भाव, नवीन विचार ग्रहण करने की तात्परता का नाम है; यौवन साहस, उत्साह, निर्भयता और खतरे-भरी जिन्दगी का नाम हैं,; यौवन लीक से बच निकलने की इच्छा का नाम है। और सबसे ऊपर, बेहिचक बेवकूफ़ी करने का नाम यौवन है। मैं बराबर बेवकूफ़ी करता जाता हूं। यह सफ़ेद झण्डा प्रवचना है। हिसाब करने की कोई जल्दी नहीं है। सफ़ेद बाल से क्या होता है?

यह सब मैं किसी दूसरे से नहीं कह रहा हूं, अपने आपको ही समझा रहा हूं। द्विमुखी संघर्ष है यह- दूसरों को भ्रमित करना और मन को समझाना। दूसरों
से भय नही। सफ़ेद बालों से किसी और का क्या बिगड़ेगा? पर मन तो अपना है। इसे तो समझाना ही पड़ेगा कि भाई तू परेशान मत हो। अभी ?सा क्या हो गया है! यह तो पहिला ही है। और फ़िर अगर तू नही ढीला होता, तो क्या बिगड़नेवाला है!

पहले सफ़ेद बाल का दिखना एक पर्व है।

दशरथ को कान के पास सफ़ेद बाल दिखे, तो उन्होने राम को राजगद्दी देने का संकल्प किया। उनके चार पुत्र थे। उन्हें देने का सुभीता था। मैं किसे सौपू? कोई कन्धा मेरे सामने नही हैं, जिस पर यह गौरवमय भार रख दूं। किस पुत्र को सौपूं? मेरे एक मित्र के तीन पुत्र हैं। सबेरे यह मेरा दशरथ अपने कुमारों को चुल्लू-चुल्लू पानी मिला दूध बांटता है। इनके कन्धे ही नही है-भार कहां रखेगें? बड़े आदमियों के दो तरह के पुत्र होते हैं- वे जो वास्तव में हैं, पर कहलाते नहीं है और वे जो कहलाते है, पर हैं नहीं। जो कहलाते हैं, वे धन-सम्पत्ति के मालिक बनते हैं और जो वास्तव में हैं, वे कही पंखा खीचते हैं या बर्तन मांजते हैं। होने से कहलाना ज्यादा लाभदायक है।

अपना कोई पुत्र नही। होता तो मुश्किल में पड़ जाते। क्या देते? राज-पाट के दिन गये, धन-दौलत के दिन है। पर पास ?सा कुछ नहीं है, जो उठाकर दे दिया जाय। न उत्तराधिकारी है, न उसका प्राप्य। यह पर्व क्या बिना दिये चला जायेगा।

पुत्र तो पीढ़ियों के होते हैं। केवल जन्मदाता किसी का पिता नहीं होता। विराट भविष्य को एक पुत्र ले भी कैसे सकता हैं? इससे क्या कि कौन किसका पुत्र होगा, कौन किसका पिता कहलायेगा! मेरी पीढ़ी के समस्त पुत्रों! मैं तुम्हें वह भविष्य ही देता हूं।

पुत्र तो पीढ़ियों के होते हैं। केवल जन्मदाता किसी का पिता नहीं होता। विराट भविष्य को एक पुत्र ले भी कैसे सकता हैं? इससे क्या कि कौन किसका पुत्र होगा, कौन किसका पिता कहलायेगा! मेरी पीढ़ी के समस्त पुत्रों! मैं तुम्हें वह भविष्य ही देता हूं। पर हम क्या दें? महायुद्ध की छाया में बढ़े हम लोग; हम गरीबी और अभाव में पले लोग; केवल जिजीविषा खाकर जिये हम लोग। हमारी पीढ़ी के बाल तो जन्म से ही सफ़ेद हैं। हमारे पास क्या हैं? हां, भविष्य है, लेकिन वह भी हमारा नहीं, आनेवालों का है। तो इतना रंक नही हूं-विराट भविष्य तो है। और अब उत्तराधिकारी की समस्या भी हल हो गयी। यद्यपि वह अभी मूर्त्त नहीं हुआ है, पर हम जुटे हैं, उसे मूर्त्त करने। हम नीव मे धंस रहे है कि तुम्हारे लिए एक भव्य भविष्य रचा जा सके। वह एक वर्तमान बनकर ही आयेगा- हमारा तो कोई वर्तमान भी नही था। मैं तुम्हें भविष्य देता हूं और इसे देने का अर्थ यह है कि हम अपने-आपको दे रहे हैं, क्योकि उसके निर्माण में अपने-आपको मिटा रहे हैं।

लो सफ़ेद बाल दिखने के इस पर्व पर यह तुम्हारा प्राप्य संभालो। होने दो हमारे बाल सफ़ेद। हम काम में तो लगे है-जानते है कि काम बन्द करने और मरने का क्षण एक ही होता है। हमें तुमसे कुछ नही चाहिए। ययाति-जैसे स्वार्थी हम नही है जो पुत्र की जवानी लेकर युवा हो गया था। बाल के साथ, उसने मुंह भी काला कर लिया।

आंसू

दीपिका जोशी

आंसू पलकों की सीपियोंमें छुपा हुआ एक अनमोल मोती है। इसका का मानव जीवन में बहुत महत्व है। आंसू किसीका स्वागत करते समय भी झलकते हैं और जुदाई के समय भी कुछ बोल जाते हैं। आंसू समाधान से भी बहते हैं और संताप से भी ।

आंसू की भाषा समझने के लिये उसकी कीमत जान लेनी चाहिये। वे किसी महाकाव्य की प्रेरणा भी बन सकते हैं। बडे बडे प्रबंध लिखके भी आंसू का महत्व बयान नहीं किया जा सकता जो एक बूंद में सब कुछ कहे जाते हैं। आंसू की एक बूंद में मानव जीवन का सारा सार समाया हुआ हैं।

कैरियर का चुनाव कैसे करें

प्रायः शिक्षा समाप्त कर कैरियर (आजीविका) क जुट जाते हैं। नये लोगों के का चुनाव करना एक बड़ी रूप में उभर कर आती है देखा जाये तो पूर्व में ह अध्ययन किये गये विष नौकरी में अधिकतर किसी प्रकार का सम्बन्ध दिखाई नहीं देता था। जो व्यक्ति भौतिक शास्त्र , रसायन शास्त्र गणित आदि का अध्ययन करता था वही व्यक्ति बैंक में नौकरी लग कर अकाउन्टिंग का काम करने लगता था। किन्तु अब समय बदल गया है और वर्तमान पीढ़ी कैरियर के चुनाव के प्रति जागरुक हो गई है।

कैरियर का चुनाव करने के लिये स्वयं की रुचि व्यक्तित्व पूर्व में किये गये अध्ययन के विषय, कार्य सम्बन्धित मान्यताएँ तथा मान आदि अनेक बातों का ध्यान रखा जाना चाहिये।

किसी भी कैरियर का चुनाव अत्यन्त सोच-समझ कर ही करना बहुत आवश्यक है वरना बाद में पछताना पड़ सकता है। किसी भी निश्चय पर पहुँचने के पहले स्वयं का आकलन कर लेना बहुत अच्छा होता है। साथ ही जिस कैरियर को हम अपनाना चाहते हैं उसका आकलन जैसे कि वर्तमान में तो यह कैरियर तो बहुत अच्छी है किन्तु इसका भविष्य क्या है, क्या यह आजीविका कैरियर मेरी समस्त या अधिकतम आकांक्षाओं को पूर्ण कर पायेगी आदि) कर लेना भी अति आवश्यक है।

दुर्भाग्य से हमारे शिक्षण संस्थाओं में कैरियर के चुनाव वाले किसी प्रकार के विषय नहीं होते और इसी कारण से अधिकतर लोग गलत फैसला कर लेते हैं जिसका परिणाम बाद में पछताना ही होता है। अत: किसी भी निष्कर्ष पर पहुँचने के पहले हर पहलू पर गम्भीरता पूर्वक विचार कर लेना बहुत जरूरी है।

स्वयं का आकलन करने के लिये निम्न बिंदुओं पर अवश्य ही ध्यान दें

मान इसके अन्तर्गत वे वस्तुएँ आती हैं जिनका महत्व आपकी नजरों में बहुत अधिक होता है, जैसे कि उपलब्धियाँ प्रतिष्ठा , स्वत्व आदि।

रुचियाँ इसके अन्तर्गत आपको आनन्द प्रदान करने वाली वस्तुएँ आती हैं, जैसे कि मित्रों के साथ लिप्त रहना क्रिकेट खेलना , नाटक में अभिनय करना आदि।

व्यक्तित्व अलग अलग लोगों का अलग अलग व्यक्तित्व होता है जो उनकी विलक्षणता आवश्यकता रवैया , व्यवहार आदि का निर्माण करती हैं।

अहर्ताएँ अलग अलग व्यक्तियों की अहर्ताएँ या योग्यताएँ भी अलग अलग होती हैं जैसे कि किसी को लेखन कार्य में आनन्द आता है तो किसी को शिक्षण कार्य या फिर किसी को कम्प्यूटर प्रोग्रामिंग में।

उपरोक्त सभी बातें आप स्वयं का प्रतिनिधित्व करते हैं अत: कैरियर का चुनाव करते समय इनका समावेश होना सर्वाधिक महत्वपूर्ण है।

बापू और हिन्दी

– अंजू जैन

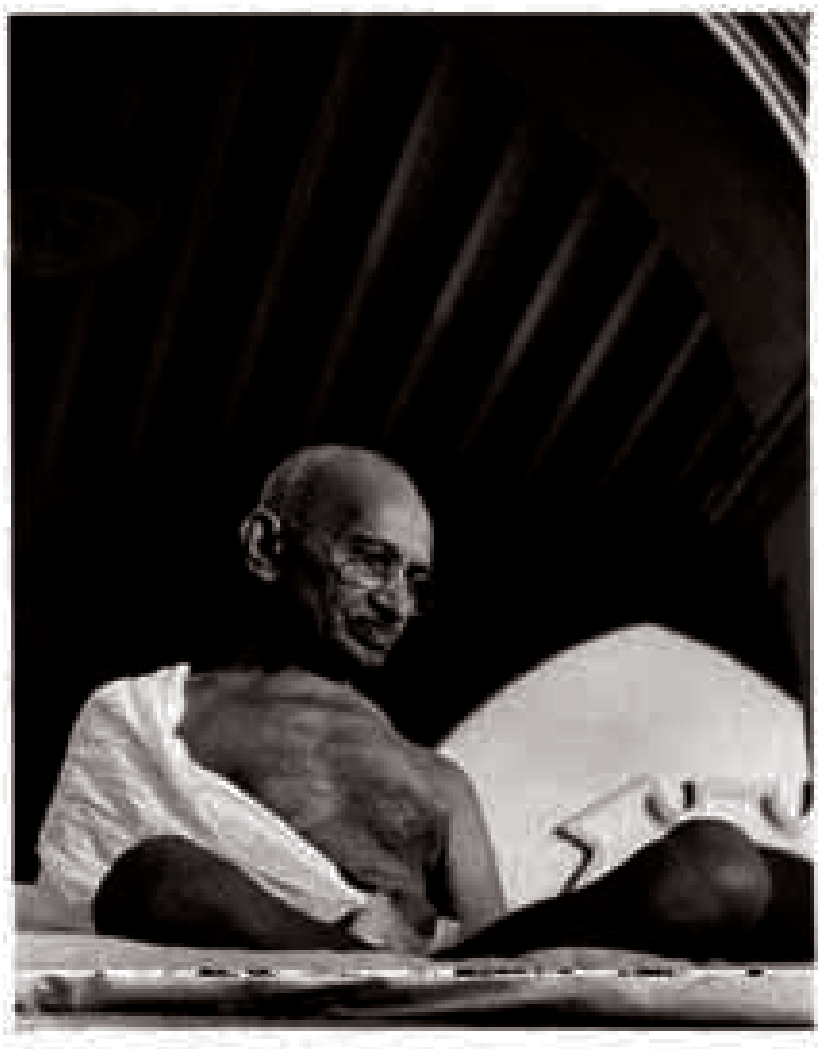

काशी विश्व विद्यालय में उस समय की घटना है जब डा सर्वपल्ली राधाकृष्णन वहां उपकुलपति थे। विश्वविद्याालय का दीक्षांत समारोह मनाया जा रहा था। मुख्य अतिथि के रूप में महात्मा गांधी आमंत्रित थे। वक्ता आ रहे थे और अपना वक्तव्य अंग्रेजी में रखकर जा रहे थे। कार्यक्रम का संचालन भी अंग्रजी में ही किया जा रहा था। यह देख गांधी जी मन ही मन व्यथित थे। उन से न रहा गया तब उन्होने कहा अंग्रेजों को हम कोसते हैं कि उन्होंने हिन्दुस्तान को गुलाम बना रखा है लेकिन अंग्रेजी के तो हम खुद ही गुलाम बन गये हैं। अंग्रेजों ने हिन्दुस्तान पर गुलामी थोपी परन्तु अंग्रेजी क़ी अपनी गुलामी के लिये मैं उन्हें जिम्मेवार नहीं मानता। खुद अंग्रेजी सीखने और अपने बच्चों को अंग्रेजी सिखाने के लिए हम कितनी मेहनत करते हैं। यदि हमें कोई यह कहता है कि हम अंग्रेजों की तरह अंग्रेजी बोल लेते हैं तो हम खुशी से फूले नहीं समाते। इससे बढ क़र दयनीय गुलामी और क्या हो सकती है। इसकी वजह से हमारे बच्चों पर कितना जुल्म होता है।

अंग्रेजी के प्रति हमारे मोह के कारण देश की कितनी शक्ति और कितना श्रम बरबाद होता है। अभी जो कार्यवाही यहां हुई जो कुछ कहा गया उसे आम जनता कुछ भी नहीं समझ सकी।

फिर भी हमारी जनता में इतनी उदारता और धीरज है कि वहा चुपचाप सभा में बैठी रहती है। और यह सोच कर संतोष कर लेती है कि आखिर ये हमारे नेता हैं तो कुछ अच्छी बात ही कहते होंगे। लेकिन इससे उसे लाभ क्या। वह तो जैसी आयी थी वैसी ही खाली लौट गई।

महात्मा गांधी की यह बात सुन सभी वक्ताओं को जिन्होने अपना वक्तव्य अंग्रेजी में दिया था सांप सूंघ गया। चुप्पी साधने के सिवा किसी को कुछ न सूझा।

हास्य और व्यंग्य जीवन नौका के दो पतवार हैं। इनके बिना न केवल जीवन अधूरा है बल्कि नीरस भी है। जीने की कला के ये सबसे बेहतर रास्ते हैं, हमारे थके हारे मन को ताजग़ी देते हैं, जीवन की विडम्बनाओं पर खुल कर हंसने का अवसर देते हैं और जटिल परिस्थियों से जूझने का मनोबल भी। ..ऐसे में काका की याद आना स्वभाभिक हैँ यहाँ प्रस्तुत है अपने सुधि पाठको के लिए काका के कुछ अमर व्यग्ंय जस के तस–

नाम बड़े, दर्शन छोटे

नाम - रूप के भेद पर कभी किया है ग़ौर ?

नाम मिला कुछ और तो शक्ल - अक्ल कुछ और

शक्ल - अक्ल कुछ और नयनसुख देखे काने

बाबू सुंदरलाल बनाये ऐंचकताने

कहँ ' काका कवि , दयाराम जी मारें मच्छर

विद्याधर को भैंस बराबर काला अक्षर

मुंशी चंदालाल का तारकोल सा रूप

श्यामलाल का रंग है जैसे खिलती धूप

जैसे खिलती धूप , सजे बुश्शर्ट पैंट में -

ज्ञानचंद छै बार फ़ेल हो गये टैंथ में

कहँ ' काका ज्वालाप्रसाद जी बिल्कुल ठंडे

पंडित शांतिस्वरूप चलाते देखे डंडे

देख अशर्फ़ीलाल के घर में टूटी खाट

सेठ भिखारीदास के मील चल रहे आठ

मील चल रहे आठ , करम के मिटें न लेखे

धनीराम जी हमने प्रायः निर्धन देखे

कहँ ' काका कवि , दूल्हेराम मर गये कुँवारे

बिना प्रियतमा तड़पें प्रीतमसिंह बेचारे

पेट न अपना भर सके जीवन भर जगपाल

बिना सूँ ड़ के सैकड़ों मिलें गणेशीलाल

मिलें गणेशीलाल , पैंट की क्रीज़ सम्हारी

बैग कुली को दिया , चले मिस्टर गिरधारी

कहँ ' काका कविराय , करें लाखों का सट्टा

नाम हवेलीराम किराये का है अट्टा

चतुरसेन बुद्धू मिले , बुद्धसेन निर्बुद्ध

श्री आनंदीलाल जी रहें सर्वदा क्रुद्ध

रहें सर्वदा क्रुद्ध , मास्टर चक्कर खाते

इंसानों को मुंशी तोताराम पढ़ाते

कहँ ' काका बलवीर सिंह जी लटे हुये हैं

थानसिंह के सारे कपड़े फटे हुये हैं

तेजपाल जी भोथरे , मरियल से मलखान

लाला दानसहाय ने करी न कौ ड़ी दान

करी न कौड़ी दान , बात अचरज की भाई

वंशीधर ने जीवन - भर वंशी न बजाई

कहँ ' काका कवि , फूलचंद जी इतने भारी

दर्शन करते ही टूट जाये कुर्सी बेचारी

बेच रहे हैं कोयला , लाला हीरालाल

सूखे गंगाराम जी , रूखे मक्खनलाल

रूखे मक्खनलाल , झींकते दादा - दादी

निकले बेटा आशाराम निराशावादी

कहँ ' काका % कवि , भीमसेन पिद्दी से दिखते

कविवर ' दिनकर ' छायावदी कविता लिखते

खट्टे - खारी - खुरखुरे मृदुलाजी के बैन

मृगनयनी के देखिये चिलगोजा से नैन

चिलगोजा से नैन , शांता करतीं दंगा

नल पर नहातीं , गोदावरी , गोमती , गंगा

कहँ ' काका कवि , लज्जावती दहा ड़ रही हैं

दर्शन देवी लंबा घूँघट का ढ़ रही हैं

अज्ञानी निकले निरे पंडित ज्ञानीराम

कौशल्या के पुत्र का रक्खा दशरथ नाम

रक्खा दशरथ नाम , मेल क्या खूब मिलाया

दूल्हा संतराम को आई दुल्हन माया

' काका कोई - कोई रिश्ता ब ड़ा निकम्मा

पार्वती देवी हैं शिवशंकर की अम्मा

'

कलम आज उनकी जय बोल

कलम, आज उनकी जय बोल
कलम, आज उनकी जय बोल!

जो अगणित लघु दीप हमारे,
तूफ़ानों में एक किनारे,
जल-जलकर बुझ गए किसी दिन-
माँगा नहीं स्नेह मुँह खोल!
कलम, आज उनकी जय बोल!

पीकर जिनकी लाल शिखाएँ,
उगल रही लपट दिशाएँ,
जिनके सिंहनाद से सहमी-
धरती रही अभी तक डोल!
कलम, आज उनकी जय बोल!

देवीय शक्ति से साक्षात्कार कराते मंत्र

मंत्रों का प्रयोग मानव ने अपने कल्याण के साथ-साथ दैनिक जीवन की संपूर्ण समस्याओं के समाधान हेतु यथासमय किया है और उसमें सफलता भी पाई है, परंतु आज के भौतिकवादी युग में यह विधा मात्र कुछ ही व्यक्तियों के प्रयोग की वस्तु बनकर रह गई है।

मंत्रों में छुपी अलौकिक शक्ति का प्रयोग कर जीवन को सफल एवं सार्थक बनाया जा सकता है। सबसे पहले प्रश्न यह उठता है कि मंत्र क्या है, इसे कैसे परिभाषित किया जा सकता है। इस संदर्भ में यह कहना उचित होगा कि मंत्र का वास्तविक अर्थ असीमित है। किसी देवी-देवता को प्रसन्न करने के लिए प्रयुक्त शब्द समूह मंत्र कहलाता है। जो शब्द जिस देवता या शक्ति को प्रकट करता है उसे उस देवता या शक्ति का मंत्र कहते हैं। मंत्र एक ऐसी गुप्त ऊर्जा है, जिसे हम जागृत कर इस अखिल ब्रह्मांड में पहले से ही उपस्थित इसी प्रकार की ऊर्जा से एकात्म कर उस ऊर्जा के लिए देवता (शक्ति) से सीधा साक्षात्कार कर सकते हैं।

ऊर्जा अविनाशिता के नियमानुसार ऊर्जा कभी भी नष्ट नहीं होती है, वरन्? एक रूप से दूसरे रूप में परिवर्तित होती रहती है। अत: जब हम मंत्रों का उच्चारण करते हैं तो उससे उत्पन्न ध्वनि एक ऊर्जा के रूप में ब्रह्मांड में प्रेषित होकर जब उसी प्रकार की ऊर्जा से संयोग करती है तब हमें उस ऊर्जा में छुपी शक्ति का आभास होने लगता है। ज्योतिषीय संदर्भ में यह निर्विवाद सत्य है कि इस धरा पर रहने वाले सभी प्राणियों पर ग्रहों का अवश्य प्रभाव पड़ता है।

चंद्रमा मन का कारक ग्रह है और यह पृथ्वी के सबसे नजदीक होने के कारण खगोल में अपनी स्थिति के अनुसार मानव मन को अत्यधिक प्रभावित करता है। अत: इसके अनुसार जो मन का त्राण (दु:ख) हरे उसे मंत्र कहते हैं। मंत्रों में प्रयुक्त स्वर, व्यंजन, नाद व बिंदु देवताओं या शक्ति के विभिन्न रूप एवं गुणों को प्रदर्शित करते हैं। मंत्राक्षरों, नाद, बिंदुओं में दैवीय शक्ति छुपी रहती है। मंत्र उच्चारण से ध्वनि उत्पन्न होती है, उत्पन्न ध्वनि का मंत्र के साथ विशेष प्रभाव होता है। जिस प्रकार किसी व्यक्ति, स्थान, वस्तु के ज्ञानर्थ कुछ संकेत प्रयुक्त किए जाते हैं, ठीक उसी प्रकार मंत्रों से संबंधित देवी-देवताओं को संकेत द्वारा संबंधित किया जाता है, इसे बीज कहते हैं। विभिन्न बीज मंत्र इस प्रकार हैं =

?- परमपिता परमेश्वर की शक्ति का प्रतीक है।
ह्रीं- माया बीज,
श्रीं- लक्ष्मी बीज,
क्रीं- काली बीज,
ऐं- सरस्वती बीज,
क्लीं- कृष्ण बीज।

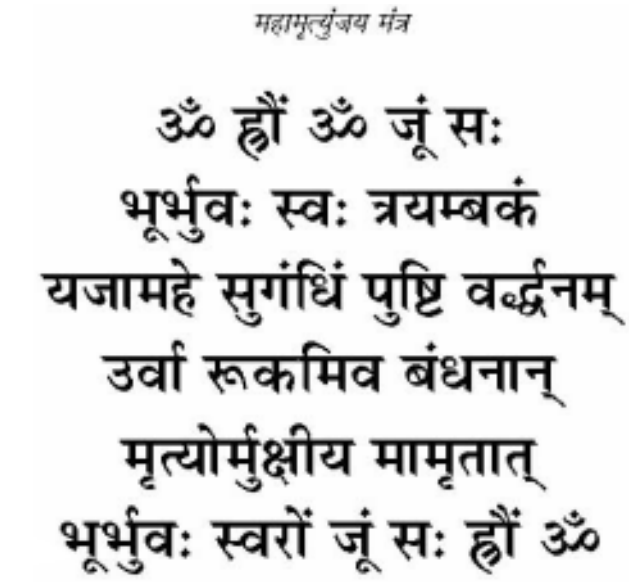

मंत्रों में देवी-देवताओं के नाम भी संकेत मात्र से दर्शाए जाते हैं, जैसे राम के लिए रां हनुमानजी के लिए हं गणेशजी के लिए गं, दुर्गाजी के लिए दुं का प्रयोग किया जाता है। इन बीजाक्षरों में जो अनुस्वार (ं) या अनुनासिक (जं) संकेत लगाए जाते हैं, उन्हें नाद कहते हैं। नाद द्वारा देवी-देवताओं की अप्रकट शक्ति को प्रकट किया जाता है।

लिंगों के अनुसार मंत्रों के तीन भेद होते हैं-

पुलिंग - जिन मंत्रों के अंत में हूं या फट लगा होता है।
स्त्रीलिंग - जिन मंत्रों के अंत में %स्वाहा% का प्रयोग होता है।
नपुंसक लिंग = जिन मंत्रों के अंत में नमः प्रयुक्त होता है।

अतः आवश्यकतानुसार मंत्रों को चुनकर उनमें स्थित अक्षुण्ण ऊर्जा की तीव्र विस्फोटक एवं प्रभावकारी शक्ति को प्राप्त किया जा सकता है। मंत्र, साधक व ईश्वर को मिलाने में मध्यस्थ का कार्य करता है। मंत्र की साधना करने से पूर्व मंत्र पर पूर्ण श्रद्धा, भाव, विश्वास होना आवश्यक है तथा मंत्र का सही उच्चारण अति आवश्यक है। मंत्र लय, नादयोग के अंतर्गत आता है। मंत्रों के प्रयोग से आर्थिक, सामाजिक, दैहिक, दैनिक, भौतिक तापों से उत्पन्न व्याधियों से छुटकारा पाया जा सकता है। रोग निवारण में मंत्र का प्रयोग रामबाण औषधि का कार्य करता है। मानव शरीर में 108 जैविकीय केंद्र (साइकिक सेंटर) होते हैं जिसके कारण मस्तिष्क से 108 तरंग दैर्ध्य (वेवलेंथ) उत्सर्जित करता है।

शायद इसीलिए हमारे ऋषि-मुनियों ने मंत्रों की साधना के लिए 108 मनकों की माला तथा मंत्रों के जाप की आकृति निश्चित की है। मंत्रों के बीज मंत्र उच्चारण की 125 विधियाँ हैं। मंत्रोच्चारण से या जाप करने से शरीर के 6 प्रमुख जैविकीय ऊर्जा केंद्रों से 6250 की संख्या में विद्युत चुम्बकीय ऊर्जा तरंगें उत्सर्जित होती हैं, जो इस प्रकार हैं -

मूलाधार 4म125=500
स्वधिष्ठान 6म125=750
मनिपुरं 10म125=1250
हृदयचक्र 13म125=1500
विध्रहिचक्र 16म125=2000
आज्ञाचक्र 2म125=250
कुल योग 6250 (विद्युत चुम्बकीय ऊर्जा तरंगों की संख्या)

भारतीय कुंडलिनी विज्ञान के अनुसार मानव के स्थूल शरीर के साथ-साथ 6 अन्य सूक्ष्म शरीर भी होते हैं। विशेष पद्धति से सूक्ष्म शरीर के फोटोग्राफ लेने से वर्तमान तथा भविष्य में होने वाली बीमारियों या रोग के बारे में पता लगाया जा सकता है। सूक्ष्म शरीर के ज्ञान के बारे में जानकारी न होने पर मंत्र शास्त्र को जानना अत्यंत कठिन होगा।

मानव, जीव-जंतु, वनस्पतियों पर प्रयोगों द्वारा ध्वनि परिवर्तन (मंत्रों) से सूक्ष्म ऊर्जा तरंगों के उत्पन्न होने को प्रमाणित कर लिया गया है। मानव शरीर से 64 तरह की सूक्ष्म ऊर्जा तरंगें उत्सर्जित होती हैं जिन्हें %धी% ऊर्जा कहते हैं। जब धी का क्षरण होता है तो शरीर में व्याधि एकत्र हो जाती है।

मंत्रों का प्रभाव वनस्पतियों पर भी पड़ता है। जैसा कि बताया गया है कि चारों वेदों में कुल मिलाकर 20 हजार 389 मंत्र हैं, प्रत्येक वेद का अधिष्ठाता देवता है। ऋग्वेद का अधिष्ठाता ग्रह गुरु है। यजुर्वेद का देवता ग्रह शुक्र, सामवेद का मंगल तथा अथर्ववेद का अधिपति ग्रह बुध है। मंत्रों का प्रयोग ज्योतिषीय संदर्भ में अशुभ ग्रहों द्वारा उत्पन्न अशुभ फलों के निवारणार्थ किया जाता है। ज्योतिष वेदों का अंग माना गया है। इसे वेदों का नेत्र कहा गया है। भूत ग्रहों से उत्पन्न अशुभ फलों के शमनार्थ वेदमंत्रों, स्तोत्रों का प्रयोग अत्यन्त प्रभावशाली माना गया है।

उदाहरणार्थ आदित्य हृदयस्तोत्र सूर्य के लिए, दुर्गास्तोत्र चंद्रमा के लिए, रामायण पाठ गुरु के लिए, ग्राम देवता स्तोत्र राहु के लिए, विष्णु सहस्त्रनाम, गायत्री मंत्रजाप, महामृत्युंजय जाप, क्रमशः बुध, शनि एवं केतु के लिए, लक्ष्मीस्तोत्र शुक्र के लिए और मंगलस्त्रोत मंगल के लिए। मंत्रों का चयन प्राचीन ऐतिहासिक ग्रंथों से किया गया है। वैज्ञानिक रूप से यह प्रमाणित हो चुका है कि ध्वनि उत्पन्न करने में नाड़ी संस्थान की 72 नसें आवश्यक रूप से क्रियाशील रहती हैं। अतः मंत्रों के उच्चारण से सभी नाड़ी संस्थान क्रियाशील रहते हैं।

मंत्र

कालसर्प दोष निवारण हेतु कुछ उपाय

कालसर्प योग सुनकर भयभीत हो जाने की जरुरत नहीं बल्कि उसका ज्योतिषीय विश्लेषण करवाकर उसके प्रभावों की विस्तृत जानकारी हासिल कर लेना ही बुध्दिमत्ता कही जायेगी. जब असली कारण ज्योतिषीय विश्लेषण से स्पष्ट हो जाये तो तत्काल उसका उपाय करना चाहिए.

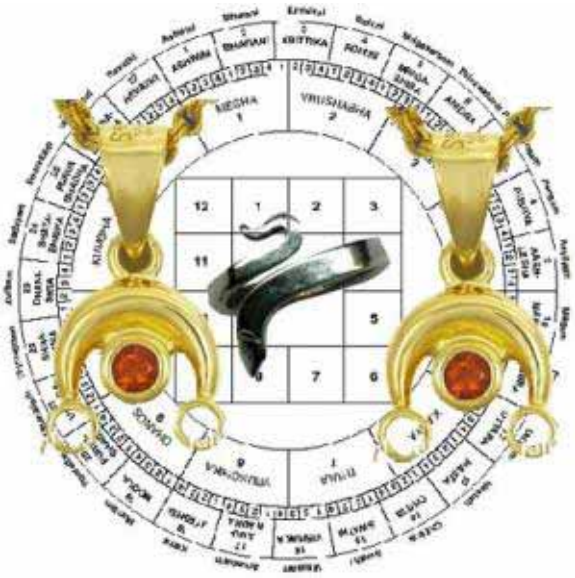

कालसर्प के बारे में बहुत सी भ्रांतियां सुनने को मिलती हैं.कालसर्प योग के बारे में पूरी तरह जानने के लिए इसका विस्तृत अध्ययन बहुत जरुरी है .कालसर्प के बारे में कुछ विद्वानों का मत है कि यह दोष अशुभ फलदायी होता है, जबकि कुछ विद्वान इस दोष को शास्त्र-सम्मत नहीं मानते.क्योंकि संसार के अनेक विद्वान, प्रतिष्ठित एवं राजनेताओं की जन्म कुंडली में यह दोष मौजूद है. उन्होंने इस दोष के होते हुए भी जीवन में कभी अभाव का अनुभव नहीं किया, बल्कि अपने-अपने कार्य क्षेत्र में अपनी प्रतिभा के दम पर सफलता और यश अर्जित किया.इसलिए मात्रा कालसर्प योग सुनकर भयभीत हो जाने की जरूरत नहीं बल्कि उसका ज्योतिषीय विश्लेषण करवाकर उसके प्रभावों की विस्तृत जानकारी हासिल कर लेना ही बुध्दिमत्ता कही जायेगी. जब असली कारण ज्योतिषीय विश्लेषण से स्पष्ट हो जाये तो तत्काल उसका उपाय करना चाहिए.

प्रत्येक मनुष्य कोई न कोई परेशानी से गुजरता है . कालसर्प दोष एक ऐसा नाम है जिससे आज का आम व्यक्ति अच्छी तरह से परिचित है. कुछ लोगों का तो ये हाल है कि जन्म कुंडली देखते ही चौंक पडते है और कह उठते है की तुम्हारी कुंडली में तो कालसर्प-दोष है क्या तुमने इसका कोई उपाय किया या नहीं. अगर सामने वाला व्यक्ति ये कहें कि मुझे तो इसके बारे में कुछ भी नहीं मालुम, मुझे आज तक किसी ने कुछ नहीं बताया या फिर मुझे मालुम तो था किन्तु मैने अभी तक कोई उपाय नहीं किया हैं। इतना सुनते ही कालसर्प-दोष को बताने वाला व्यक्ति सामने वाले व्यक्ति को कालसर्प-दोष के बारे में पूरा भाषण दे डालता है और फिर अनेको उपाय बताने लगता है.

कालसर्प दोष निवारण हेतु कुछ साधारण से उपाय भी हैं जिनसे इस दोष का निवारण किया जा सकता है. यदि पति-पत्नी या प्रेमी-प्रेमिका में क्लेश हो रहा हो, आपसी प्रेम की कमी हो रही हो तो भगवान श्रीकृष्ण की मूर्ति या बालकृष्ण की ?मूर्ति जिसके सिर पर मोरपंखी मुकुट धारण हो घर में स्थापित करें एवं प्रति ?दिन उनका पूजन करें एवं ऊँ नमो भगवते वासुदेवाय अथवा ऊँ नमो वासुदेवाय कृष्णाय या ? नमः शिवाय का यथाशक्ति जाप करे. कालसर्प योग की शांति होगी। यदि कुंडली में कालसर्प दोष है तो नित्य प्रति भगवान शिव के परिवार का पूजन करें. आपके हर काम होते चले जाएँगे.यदि रोजगार में तकलीफ आ रही है अथवा रोजगार प्राप्त नहीं हो रहा है तो पलाश के फूल गोमूत्र में डूबाकर उसको बारीक करें. फिर छाँव में रखकर सुखाएँ. उसका चूर्ण बनाकर चंदन के पावडर में मिलाकर शिवलिंग पर त्रिपुण्ड बनाए.21 दिन या 25 दिन में नौकरी अवश्य मिलेग ?ी. शिवलिंग पर प्रतिदिन मीठा दूध में थोड़ी भाँग डाल दें, फिर इसे शिवलिंग पर चढ़ाएँ इससे गुस्सा शांत होता है, साथ ही सफलता तेजी से मिलने लगती है.यदि शत्रु से भय है तो चाँदी के अथवा ताँबे के सर्प बनाकर उनकी आँखों में सुरमा लगा दें, फिर किसी भी शिवलिंग पर चढ़ा दें, भय दूर होगा व शत्रु का नाश होगा, नारियल के गोले में सप्त धान्य(सात प्रकार का अनाज), गुड़, उड़द की दाल एवं सरसों भर लें व बहते पानी में बहा दें अथवा गंदे पानी में (नाले में) बहा दें, आपका चिड़चिड़ापन दूर होगा। यह प्रयोग राहूकाल में करें. कालसर्प योग वाले श्रावण मास में प्रतिदिन रूद्र-अभिषेक कराए एवं महामृत्युंजय मंत्र की एक माला रोज करें. जीवन में सुख शांति अवश्य आएगी और रूके काम होने लगेंगे.साथ ही साथ शुभ मुहूर्त में बहते पानी में कच्चा कोयला तीन बार प्रवाहित करें.हनुमान चालीसा का 108 बार पाठ करें तथा भोजनालय (घर की रसोई)में बैठकर भोजन करें.साथ ही तांबे का बना सर्प विधिवत पूजन के उपरांत शिवलिंग पर समर्पित करें. इससे अनुकूल प्रभाव पड़ेगा और कालसर्प दोष का निवारण होगा.

गजराज व मूषकराज

प्राचीन काल में एक नदी के किनारे बसा नगर व्यापार का केन्द्र था। फिर आए उस नगर के बुरे दिन, जब एक वर्ष भारी वर्षा हुई। नदी ने अपना रास्ता बदल दिया। लोगों के लिए पीने का पानी न रहा और देखते ही देखते नगर वीरान हो गया अब वह जगह केवल चूहों के लायक रह गई। चारों ओर चूहे ही चूहे नजर आने लगे। चूहो का पूरा साम्राज्य ही स्थापित हो गया। चूहों के उस साम्राज्य का राजा बना मूषकराज चूहा। चूहों का भाग्य देखो, उनके बसने के बाद नगर के बाहर जमीन से एक पानी का स्त्रोत फूट पडा और वह एक बडा जलाशय बन गया।

नगर से कुछ ही दूर एक घना जंगल था। जंगल में अनगिनत हाथी रहते थे। उनका राजा गजराज नामक एक विशाल हाथी था। उस जंगल क्षेत्र में भयानक सूखा पडा। जीव-जन्तु पानी की तलाश में इधर-उधर मारे-मारे फिरने लगे। भारी भरकम शरीर वाले हाथियों की तो दुर्दशा हो गई।

हाथियों के बच्चे प्यास से व्याकुल होकर चिल्लाने व दम तोडने लगे। गजराज खुद सूखे की समस्या से चिंतित था और हाथियों का कष्ट जानता था। एक दिन गजराज की मित्र चील ने आकर खबर दी कि खंडहर बने नगर के दूसरी ओर एक जलाशय हैं। गजराज ने सबको तुरंत उस जलाशय की ओर चलने का आदेश दिया। सैकडों हाथी प्यास बुझाने डोलते हुए चल पडे। जलाशय तक पहुंचने के लिए उन्हें खंडहर बने नगर के बीच से गुजरना पडा।

हाथियों के हजारों पैर चूहों को रौंदते हुए निकल गए। हजारों चूहे मारे गए। खंडहर नगर की सडकें चूहों के खून-मांस के कीचड से लथपथ हो गई। मुसीबत यहीं खत्म नहीं हुई। हाथियों का दल फिर उसी रास्ते से लौटा। हाथी रोज उसी मार्ग से पानी पीने जाने लगे।

काफी सोचने-विचारने के बाद मूषकराज के मंत्रियों ने कहा महाराज, आपको ही जाकर गजराज से बात करनी चाहिए। वह दयालु हाथी हैं। मूषकराज हाथियों के वन में गया। एक बडे पेड के नीचे गजराज खडा था।

मूषकराज उसके सामने के बडे पत्थर के ऊपर चढा और गजराज को नमस्कार करके बोला गजराज को मूषकराज का नमस्कार। हे महान हाथी, मैं एक निवेदन करना चाहता हूं।

आवाज गजराज के कानों तक नहीं पहुंच रही थी। दयालु गजराज उसकी बात सुनने

के लिए नीचे बैठ गया और अपना एक कान पत्थर पर चढे मूषकराज के निकट ले जाकर बोला नन्हें मियां, आप कुछ कह रहे थे। कर्पिया फिर से कहिए।

मूषकराज बोला हे गजराज, मुझे चूहा कहते हैं। हम बडी संख्या में खंडहर बनी नगरी में रहते हैं। मैं उनका मूषकराज हूं। आपके हाथी रोज जलाशय तक जाने के लिए नगरी के बीच से गुजरते हैं। हर बार उनके पैरों तले कुचले जाकर हजारों चूहे मरते हैं। यह मूषक संहार बंद न हुआ तो हम नष्ट हो जाएंगे।

गजराज ने दुख भरे स्वर में कहा मूषकराज, आपकी बात सुन मुझे बहुत शोक हुआ। हमें ज्ञान ही नहीं था कि हम इतना अनर्थ कर रहे हैं। हम नया रास्ता ढूढ लेंगे।

मूषकराज कर्तिज्ञता भरे स्वर में बोला गजराज, आपने मुझ जैसे छोटे जीव की बात ध्यान से सुनी। आपका धन्यवाद। गजराज, कभी हमारी जरुरत पडे तो याद जरुर कीजिएगा।卐

गजराज ने सोचा कि यह नन्हा जीव हमारे किसी काम क्या आएगा। सो उसने केवल मुस्कुराकर मूषकराज को विदा किया। कुछ दिन बाद पडौसी देश के राजा ने सेना को मजबूत बनाने के लिए उसमें हाथी शामिल करने का निर्णय लिया। राजा के लोग हाथी पकडने आए। जंगल में आकर वे चुपचाप कई प्रकार के जाल बिछाकर चले जाते हैं। सैकडों हाथी पकड लिए गए। एक रात हाथियों के पकडे जाने से चिंतित गजराज जंगल में घूम रहे थे कि उनका पैर सूखी पत्तियों के नीचे छल से दबाकर रखे रस्सी के फंदे में फंस जाता हैं। जैसे ही गजराज ने पैर आगे बढाया रस्सा कस गया। रस्से का दूसरा सिरा एक पेड के मोटे तने से मजबूती से बंधा था। गजराज चिंघाडने लगा। उसने अपने सेवकों को पुकारा, लेकिन कोई नहीं आया। कौन फंदे में फंसे हाथी के निकट आएगा? एक युवा जंगली भैंसा गजराज का बहुत आदर करता था। जब वह भैंसा छोटा था तो एक बार वह एक गड्ढे में जा गिरा था। उसकी चिल्लाहट सुनकर गजराज ने उसकी जाअन बचाई थी। चिंघाड सुनकर वह दौडा और फंदे में फंसे गजराज के पास पहुंचा। गजराज की हालत देख उसे बहुत धक्का लगा। वह चीखा यह कैसा अन्याय हैं? गजराज, बताइए क्या करुं? मैं आपको छुडाने के लिए अपनी जान भी दे सकता हूं।

गजराज बोले बेटा, तुम बस दौडकर खंडहर नगरी जाओ और चूहों के राजा मूषकराजा को सारा हाल बताना। उससे कहना कि मेरी सारी आस टूट चुकी हैं।

भैंसा अपनी पूरी शक्ति से दौडा-दौडा मूषकराज के पास गया और सारी बात बताई। मूषकराज तुरंत अपने बीस-तीस सैनिकों के साथ भैंसे की पीठ पर बैठा और वो शीघ्र ही गजराज के पास पहुंचे। चूहे भैंसे की पीठ पर से कूदकर फंदे की रस्सी कुतरने लगे। कुछ ही देर में फंदे की रस्सी कट गई व गजराज आजाद हो गए।

सीख :

आपसी सदभाव व प्रेम सदा एक दूसरे के कष्टों को हर लेते हैं।

कबीर के दोहे

आँखों देखा घी भला, न मुख मेला तेल ।
साधु सो झगड़ा भला, ना साकट सों मेल ॥

वेद थके, ब्रह्मा थके, याके सेस महेस ।
गीता हूँ कि गत नहीं, सन्त किया परवेस ॥

तीजे चौथे नहिं करे, बार-बार करु जाय ।
यामें विलंब न कीजिये, कहैं कबीर समुझाय ॥